पंद्रह रुपए

वर्ष : 2 अंक : 19
मंगलवार, 28 जून, 2022

स्वामी सहजानंद सरस्वती

बंकिम चंद्र चटर्जी

RNI-UPHIN/2021/79954

खुले दिमाग़ के खुले विचार

# ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

75 आजादी का अमृत महोत्सव

०१ अगस्त २०२२ से प्रति रविवार वेबिनार के माध्यम से हम मना रहे हैं

## 'स्वतंत्रता यात्रा'

यह दिन होता है- स्वतंत्रता आंदोलन, स्वतंत्रता सेनानी, स्वतंत्रता साहित्य पर विशेष चर्चा का

यह सिलसिला चलेगा १५ अगस्त २०२३ तक प्रति रविवार वेबिनार के साथ

आवरण : अंकि त्यागी

शिवसेना

महाराष्ट्र
जारी है घमासान

युवाओं के लिए सेना
द्वारा नई भर्ती
'अग्निपथ'

रामपुर और आजमगढ़
दोनों ही सीटें हुईं भाजपा की

बुजुर्ग यानी धरती का नमक

# द्रोपदी मुर्मू होंगी भारत की अगली राष्ट्रप्रमुख?

# प्रकाशनाधीन

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क
9897742814

## दर्दीला गीतकार
## रामावतार त्यागी

अमन कुमार 'त्यागी'

## हमारी संस्कृति और हमारा पर्यावरण
(शोध आलेख)

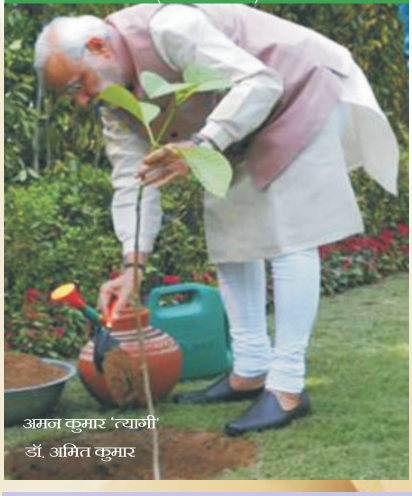

अमन कुमार 'त्यागी'
डॉ. अमित कुमार

# वृद्धावस्था
## (सामाजिक अध्ययन)

रश्मि अग्रवाल


स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

पंद्रह रुपए

RNI-UPHIN/2021/79954

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग के खुले विचार

# ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

वर्ष : २ अंक : १६ मंगलवार, २८ जून, २०२२

संपादक
अमन कुमार 'त्यागी'
9897742814
amankumarnbd@gmail.com

प्रबंध संपादक
सौरभ भारद्वाज

प्रतिनिधि
डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' (हरिद्वार)
उपेन्द्र सिंह (दिल्ली)
अर्चना राज चौबे (नागपुर)
निधि मिथिल (सतारा)
अतुल शर्मा (मेरठ)

कार्यालय प्रमुख
तन्मय त्यागी

**सदस्यता प्राप्त करें**

एक साल १००० रुपए, दो साल १६०० रुपए
पांच साल ४८०० रुपए
अंक प्रकाशित न होने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

भुगतान करें
Ac- Name - OPEN DOOR, Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD,AC- 368602000000245, IFSC- IOBA0003686 PAN-AABAO7251R

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

अस्वीकरण- प्रस्तुत अंक में विभिन्न स्रोतों व अनुभवों से प्राप्त यथासम्भव उपयोगी जानकारियों के आधार पर लेखकों/एक्सपर्ट्स के निजी विचार उपलब्ध कराए हैं। "ओपन डोर" में प्रकाशित लेख/समाचार/कविता/कहानी/विज्ञापन आदि के लिए कोई भी लेखक/एक्सपर्ट द्वारा दी गयी किसी भी जानकारी की सत्यता, प्रमाणिकता व उपयोगिता का किसी भी प्रकार से दावा, पुष्टि व समर्थन नहीं करता है। किसी भी तरह की हानि व समस्या के लिए "ओपन डोर" और इससे जुड़े हुए कोई भी लेखक/एक्सपर्ट जिम्मेदार नहीं होंगे।
विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा।

**सभी पद अवैतनिक हैं**

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद, बिजनौर से मुद्रित तथा ए-7, आदर्श नगर (तातारपुर लालू), नजीबाबाद-246763 जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं. 9897742814
Email-opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

संपादकीय

## देश के आगे बढ़ने की सुगबुगाहट

देश बढ़ रहा है। विकास के इस दौर में बहुतसी चीजों में हम इतने आगे निकलते जा रहे हैं कि बहुत सी आवश्यक चीजें पीछे भी छूटती चली जा रही हैं। बदलाव हो रहा है, दिख भी रहा है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से हो रहे बदलाव को हम ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया देख रही है। हमारे भौगोलिक बदलाव को पहले भी दुनिया ने देखा था और अब भी देखेगी। किंतु इस बदलाव की बड़ी कीमत भी भारत को चुकानी पड़ रही है। बदलाव की दिशा भी बदली है और दशा भी, जिससे दुनिया हैरत में है। कुछ देशों ने भारत में हो रहे इन बदलावों को अपने लिए ख़तरा मान लिया है, है भी। क्योंकि इन देशों ने भारत को अस्थिर करने में कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी है। हमारी आर्थिक और भौगोलिक स्थिति में तो हस्तक्षेप किया ही है, हमारे सामाजिक ताने-बाने को भी निशाना बनाया गया है। किंतु यह वो देश है जब दौड़ता है तो यहां के हर व्यक्ति में एक जुनून नजर आता है। कुछ लोग होते हैं जो बाधा डालने को अपना अधिकार समझते हैं मगर कुछ लोगों से लगभग डेढ़ अरब को छूने वाली आबादी पर कितना प्रभाव पड़ता है? सभी जानते हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे किसी सपाट सड़क पर ब्रेकर बना दिए गए हों। इस बात पर पर्दा नहीं डाला जा सकता है कि देश में कुछ आंतरिक मामले भी हैं, जो आंतरिक लोगों की नासमझी के कारण कभी-कभी भयानक रूप ले लेते हैं मगर ये मामले कुछ काले दिनों के बाद सुधर भी जाते हैं। यही सुधार शत्रु देशों को अखरता है। और वे अपने देश की मूल समस्याओं से निपटने के बजाए आग में घी डालकर तमाशा देखने लगते हैं। यहां मैं एक सामान्य बात कह रहा हूं, किसी विशेष मुद्दे पर कुछ कहना कितना उचित है? यह तो मैं नहीं जानता किंतु यह अवश्य जानता हूं कि कुछ आंतरिक समस्याएं हमारे लिए ऐसी हैं जो संपूर्ण रूप से विकसित होने के बाद भी बनी रहेंगी। इन समस्याओं को देश और समाज के लोग भयावह होने से पहले ही सुलझा भी लेते हैं। जो समस्याएं हमारी हैं अमूमन वही समस्याएं तमाम विकसित देशों की भी हैं। कुछ समस्याएं वैश्विक हैं जिनमें कुछ प्राकृतिक हैं और कुछ मानवीकृत हैं। इन सभी समस्याओं का हल भी सारी दुनिया को मिलकर ही बिना किसी भेदभाव के निकालना होगा और जो देश दुनिया या इंसानियत को ख़तरे में डालने वाली समस्याएं पैदा कर रहे हैं उनको अनदेखा न करके उन पर दबाव बनाना होगा। क्योंकि अगर समय रहते समस्योत्पादन करने वाले देश नहीं सुधरे तो दुनिया को किसी भी अनहोनी का सामना करना पड़ सकता है।

बहरहाल भारत सरकार को और अधिक सूझ-बूझ के साथ भविष्य की चिंता करते हुए कदम उठाने होंगे। आंतरिक मामलों में भी अधिक गंभीरता का रुख़ अपनाना होगा। किसी भी देश-समाज में अच्छे-बुरे हर तरह के लोग होते हैं। निर्दोश और दोशी में अंतर रखते हुए ही हम अच्छे और सच्चे भारत की तस्वीर पेश करने को अपना उद्देश्य बनाएं। दिखावा और तुष्टिकरण विगत दिनों की चीजें हो चुकी हैं, जिनसे सबक लेकर आगे कदम बढ़ाए जाने की आवश्यकता है।

यह अंक आप सुधी पाठकों को कैसा लगा? अपनी राय से अवश्य अवगत कराएंगे।

धन्यवाद

संपादक
अमन कुमार

### अंदर के पन्नों पर

ढह गया समाजवादी किला?

06 दोनों ही सीटें हुईं भाजपा की

रुक्मिणी हरण स्थल बिजनौर में है 08

गुलाबों का बादशाह 27

**अतिथि**

# अर्थ व्यवस्था की आशाजनक तस्वीर

**प्रो. ऋषभ देव शर्मा**

पाँच विकासशील देशों के संगठन ब्रिक्स के बिजनेस फोरम को संबोधित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री की यह घोषणा देश की अर्थ व्यवस्था के बारे में आशा और उत्साह को बढ़ाने वाली है कि इस साल आर्थिक वृद्धि दर ७.५ प्रतिशत रहने की उम्मीद है। उम्मीद की जानी चाहिए कि इससे निवेशकों का ध्यान भारत की ओर खिंचेगा। इसी अभिप्राय से प्रधानमंत्री ने स्टार्ट अप और यूनिकॉर्न कंपनियों के तेजी से उदय और उभार का जिक्र करते हुए दावा किया कि आज, भारत का परिवेश नवाचार के लिए दुनिया में सबसे अच्छे परिवेशों में से एक है। यह वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि भारत सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने ब्रिक्स बिजनेस फोरम को 'वीडियो कॉन्फ्रेंस' के जरिए संबोधित करते हुए यह भरोसा भी दिलाया कि भारतीय डिजिटल अर्थव्यवस्था का आकार २०२५ तक १,००० अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का जिक्र करते हुए कहा कि देश में राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा पाइपलाइन के तहत १५०० अरब डॉलर के निवेश के अवसर हैं। इसमें संदेह नहीं कि भारत के आर्थिक विकास के मार्ग में महँगाई और बेरोजगारी से लेकर आयात-निर्यात तक के क्षेत्र में कई तरह के गति अवरोधक हैं। लेकिन प्रधानमंत्री की इस बात में दम है कि 'नए भारत' में हर क्षेत्र में रूपांतरकारी बदलाव हो रहे हैं, और देश के आर्थिक सुधार का एक प्रमुख स्तंभ प्रौद्योगिकी आधारित वृद्धि है। हम हर क्षेत्र में नवाचार का समर्थन कर रहे हैं। दरअसल आज के युग में तकनीक की उपेक्षा करके कोई भी अर्थ व्यवस्था प्रगति नहीं कर सकती। इसलिए भारत संचार से लेकर निर्माण तक सब जगह खुले मन से नई तकनीक को विकसित और अंगीकार कर रहा है। भारत सरकार की अंतरिक्ष, समुद्री अर्थव्यवस्था, हरित हाइड्रोजन, स्वच्छ ऊर्जा, ड्रोन और भू-स्थानिक डेटा जैसे कई क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने वाली नई नीतियाँ इसका जीता जागता सबूत हैं। तकनीक से पैदा हुई त्वरा ही भावी आर्थिक विकास और वृद्धि की कुंजी है। ब्रिक्स (यानी ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) के पांचों देश बाकी दुनिया की तरह ही पिछले तीन सालों में विश्वमारी कोरोना की भारी चुनौती से दो-चार रहे हैं। यह खतरा इतना बड़ा था कि वृद्धि के रुकने ही नहीं, बल्कि उल्टी दिशा में जाने तक के संकेत मिलने लगे थे। लेकिन भारत ने इसके बावजूद अर्थ व्यवस्था को पटरी से उतरने नहीं दिया। इस दौरान अपनाई भारत की आर्थिक रणनीति का खुलासा करते हुए प्रधानमंत्री ने रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के अपने पसंदीदा मंत्र की भी चर्चा उचित ही की। उनके इस बयान की सटीकता से असहमत नहीं हुआ जा सकता कि महामारी से पैदा होने वाली आर्थिक समस्याओं से निपटने के लिए हमने भारत में 'सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन' के मंत्र को अपनाया और इस नजरिये के नतीजे भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन से स्पष्ट हैं।

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री का जोर इस बात पर रहा कि कारोबार के लिहाज से भारत सुगम और लचीली प्रक्रिया को अपना चुका है ताकि कारोबारियों और निवेशकों को कम से कम दिक्कतों और पेचीदगियों का सामना करना पड़े। दरअसल ये दिक्कतें और पेचीदगियाँ अतीत में निवेशकों को हलकान और हतोत्साहित करने के लिए जिम्मेदार रही हैं। कोरोना काल में सरकार ने इन दिक्कतों को हटाने के लिए कई तरह के कदम उठाए और कारोबारी सुगमता को प्रक्रिया की पेचीदगी पर तरजीह दी, हजारों नियमों में बदलाव किया और सरकारी नीतियों में अधिक पारदर्शिता सुनिश्चित की। यही नहीं, इस दौरान डिजिटल क्षेत्र के विकास से कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी भी साफ तौर पर बढ़ी है। कहना न होगा कि आर्थिक विकास का यह प्रारूप अपने आप में सर्व-समावेशी है जिसमें अब तक के हाशियाकृत समुदायों को आगे आने के मौके मिल रहे हैं- चाहे वे महिलाएँ हों या फिर दूरदराज के गाँव। इसे गौरवपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है कि हमारे आईटी क्षेत्र में काम करने वाले ४४ लाख पेशेवरों में लगभग ३६ प्रतिशत महिलाएँ हैं। इसके साथ ही, प्रौद्योगिकी आधारित वित्तीय समावेशन का अधिकतम लाभ हमारे ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को भी मिला है। इस लिहाज से प्रधानमंत्री का यह प्रस्ताव सचमुच महत्वपूर्ण है कि 'ब्रिक्स महिला व्यापार गठबंधन' को भारत में इस परिवर्तनकारी बदलाव का अध्ययन करना चाहिए।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

Subscribe

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

# उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों के मिशन कायाकल्प की मानीटरिंग भी हो

परिषदीय विद्यालयों के एक शिक्षक मिशन कायाकल्प का सच बताते हुए कहते हैं सबसे खुला खेल तो पंचायतों द्वारा सरकारी स्कूलों में किया गया है। बाहर तो जनता फिर भी ध्यान रखती है कितना सीमेंट मिला रहे हैं कितना रेत। सरकारी स्कूलों में टाइलीकरण और मल्टीपल हैंड वॉश, दिव्यांग शौचालय जैसे काम कोरोना काल में स्कूल बंदी के दौरान मौका पाकर कर दिए गए। यही नहीं इंतजार करते हैं, टालते रहते हैं और जब स्कूल की दो-तीन दिन की छुट्टी होती है तब टीचर्स के पीछे उल्टा सीधा काम करा डालते हैं।

**अशोक मधुप**

उत्तर प्रदेश सरकार प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों को निजी विद्यालयों से बेहतर बनाने के लिए कटिबद्ध है। इसी इरादे से वह इन्हें सजाने सवारने में लगी हुई है। उनके कायाकल्प का अभियान चल रहा है किंतु जरूरी हो गया है कि विद्यालयों के हो रहे कायाकल्प कार्य की मानीटरिंग भी हो।

योगी सरकार प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों के कायाकल्प के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर तेजी से अग्रसर है। शासन स्तर से कहा गया है कि जल्द ही ऑपरेशन कायाकल्य के तहत प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में निर्धारित समय सीमा से पहले लक्ष्य को हासिल कर लिया जाएगा। इस अभियान में जनप्रतिनिधिए स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ सभी राजपत्रित अधिकारियों के साथ विद्यालयों के पूर्व छात्रों का भी सहयोग स्कूलों के कायाकल्प अभियान में शामिल किया जाएगा। जिससे यूपी के स्कूल देश के दूसरों प्रदेशों के समक्ष नजीर बने। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जून २०१८ में ऑपरेशन और बाउंड्रीवॉल व गेट का ७६ प्रतिशत काम प्रदेश में पूरा कायाकल्प की शुरूआत की। इसके तहत विद्यालयों में पीने की व्यवस्था की जा चुका है। प्रदेश के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक का शुद्ध पानी, डेस्क बेंच हो, दिव्यांग मैत्रिक शौचालय, विद्यालयों में बिजली की सुविधा नहीं है उन्हें सोलर पैनल बिजली जैसे १६ मानकों के माध्यम से कायाकल्प अभियान से जोड़ा जाएगा। इसके साथ ही ३० जून तक सभी तेजी से आगे बढ़ रहा है।

प्रदेश सरकार की इच्छा और दृष्टि बिलकुल साफ है किंतु सरकारी आदेश का लागू करने वाली व्यवस्था वही घिसी पिटी पुरानी है। वह सुधारने के लिए तैयार नहीं। जनता भी पुरानी ही है। अभी कुछ साल पहले स्कूलों में नेट चालू करने के लिए बीएसएनएल विभाग ने राउटर लगाए। बिजली जाने की स्थिति में इनके संचालन के लिए बैटरी लगाईं। पर ये कुछ माह भी न चले । चोरी हो गए। स्कूल से खाना बनाने के सिलेंडर और बर्तन आदि का चोरी होना आम बात है। पुलिस बस सूचना दर्ज कर कार्य की इतिश्री कर देती है।

रेलवे के सामान पर उसकी सील लगी होली है। चाहें उसका दर्पण हो या पंखा। यदि वह चोरी हुआ है तो सामान खुद गवाही देता है। चोरी का माल बताने के लिए सबूत नहीं खोजने पड़ते। होना ये चाहिए कि प्रदेश में सरकार द्वारा लगने वाले संयत्र पर रेलवे की तरह प्रदेश सरकार की सील गुदी हुई हो। चोरी की हालात में पकड़े जाने पर चोरी के सामान का अलग से पता लग जाए। पंचायतों के स्कूल में काम हो गए। कागज में सब कार्र्वाई पूरी हो गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अलग-अलग जनपद में अलग अलग दूसरे विभाग से इनकी जांच करांए तो सच्चाई खुलकर सामने आ जाएगी।

परिषदीय विद्यालयों के एक शिक्षक मिशन कायाकल्प का सच बताते हुए कहते हैं सबसे खुला खेल तो पंचायतों द्वारा सरकारी स्कूलों में किया गया है। बाहर तो जनता फिर भी ध्यान रखती है कितना सीमेंट मिला रहे हैं कितना रेत। सरकारी स्कूलों में टाइलीकरण और मल्टीपल हैंड वॉश, दिव्यांग शौचालय जैसे काम कोरोना काल में स्कूल बंदी के दौरान मौका पाकर कर दिए गए। यही नहीं इंतजार करते हैं, टालते रहते हैं और जब स्कूल की दो-तीन दिन की छुट्टी होती है तब टीचर्स के पीछे उल्टा सीधा काम करा डालते हैं। टाइलीकरण में दीवारों पर लगे टाइल छूट छूट कर १५ दिन बाद ही गिरने लगी थी। बिना मानकों के टॉयलेट बनाए गए हैं।ऑपरेशन कायाकल्प का काम दो साल तक चलने के बाद मानकों की पुस्तक प्रशासन द्वारा अध्यापकों को बांटी गई। बाद में उस पुस्तक का क्या करें जब बिना मानकों के निर्माण कार्य हो चुका। सरकारी स्कूलों में इस कदर घोटाला किया गया है कि मरम्मत के नाम पर पांच पैसे नहीं लगाए और टॉयलेट्स की मरम्मत के बीच २०००० के बिल लगे हैं। कोई नल रिपोर्ट नहीं हुआ जबकि हर स्कूल के नलों का रिबोर दिखाया गया है। यही नहीं सरकारी स्कूलों में आरओ तक लगाए दिखाए गए हैं, जबकि कहीं नहीं लगे। सफाई कर्मियों ने महीना बांध रखा है। सरकारी स्कूल में ६० प्रतिशत सफाई का काम स्कूल स्टाफ को खुद और कुछ बच्चों से कराना होता है क्योंकि सफाई कर्मी तो स्कूल में जाकर झांकने तक नहीं आते, ऊपर से गंदगी पाए जाने पर कार्रवाई सफाई कर्मी पर नहीं होती बल्कि शिक्षक को ही बलि का बकरा बनाया जाता है। कृपया मेरा नाम गुप्त रखे । मैं भी एक छोटी सी सरकारी नौकरी करता हूं।

इस शिक्षक की बात का अधिकांश स्कूल के शिक्षक समर्थन करते हैं किंतु अधिकारियों के आंतक की वजह से कहता कोई नहीं। स्कूलों में ये सारा विकास पंचायत चुनाव के दौरान हुआ। उस समय प्रधान के अधिकार खत्म हो चुके थे। पंचायत सचिव सर्वेसर्वा थे। मोनिटरिंग के लिए बैठे अधिकारियों का उन्हें वरद हस्त प्राप्त था।

कर्मचारी सेवा नियमावली कहती है कि अपने या अपनी पत्नी और बच्चों के नाम से अपने एक वेतन से ज्यादा खरीद करने वाले अधिकारी हो अपने विभागीय अधिकारी को लिखित में बताना होगा। आय का स्रोत भी बताना होगा। मिशन कायाकल्य के दौरान विभाग के अधिकारी और कर्मचारी की संपत्ति की जांच हो तो सच्चाई सामने आ जाए।

बेशक सरकार की योजनाए जनहित की हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ईमानदारी पर कोई शक नहीं कर सकता। किंतु योजनाओं को लागू करने वाला अमला तो वही है। उसमें तो कोई सुधार नहीं हुआ। आज जरूरत उसमें सुधार की है। उसकी कठोर मानिटरिंग की है।

# ढह गया समाजवादी किला?

# रामपुर और आजमगढ़

# दोनों ही सीटें हुईं भाजपा की

कलीम अंसारी

आपसी अनबन भी सपा की हार का मुख्य कारण रही। सपा कार्यकर्ताओं में भी जोश की कमी देखी गई। जबकि भाजपा के कार्यकर्ता जी जान से जुटे रहे। बूथ पर भी सपा कार्यकर्ता कम ही नजर आए। आजमगढ़ की बात करें तो वहां मुस्लिम मतदाता सपा-बसपा में ही उलझा रहा और वोटों का विभाजन हो गया जिसका लाभ भाजपा को मिला।

आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा क्षेत्र के उपचुनावों में समाजवादी पार्टी को करारी हार का सामना करना पड़ा है। ये दोनों ही लोकसभा क्षेत्र समाजवादी पार्टी के गढ़ के रूप में देखे जाते थे। मुस्लिम मतदाताओं की अधिकता के कारण आजमगढ़ सीट पर यादव परिवार का और रामपुर सीट पर आजम खान का कब्जा था। २०१६ लोकसभा चुनाव में भाजपा की लहर के बावजूद सपा ने दोनों सीटों पर जीत हासिल की थी। सपा को इन दोनों सीटों पर अब हार का सामना करना पड़ा है। जिससे लगता है कि अखिलेश यादव से मुसलमान नाराज हैं?

राजनीतिक हलकों में माना जा रहा है कि मुसलमानों का एक बड़ा तबका समझता है कि समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव उन मुद्दों पर चुप्पी साध रहे हैं जिनमें मुसलमानों के साथ ग़लत हो रहा है। जब मुसलमानों के घरों पर बुलडोजर चल रहे हैं, तब भी अखिलेश यादव चुप्पी साधे हुए हैं। अब जब ज्ञानवापी का मामला चल रहा है तब भी वे मुसलमानों के पक्ष में दिखाई नहीं दे रहे हैं। कई मुस्लिम नेता इसी मुद्दे पर पार्टी छोड़ कर जा भी चुके हैं।

क्हा तो यह भी जा रहा है कि बुरे वक्त में फंसे पार्टी के बड़े नेता आजम खान का पक्ष भी नहीं लिया। यदि अखिलेश यादव आजम खान के पक्ष में जोरदार तरीके से बात रखते तो योगी सरकार को झुकना पड़ता और आजम खान को अधिक समय जेल में बिताना नहीं पड़ता। अखिलेश यादव इस मुद्दें से बचकर मुसलमानों के दिल में जगह बनाए रखने से चूक गए। जिसका परिणाम यह हुआ कि आजम खान लंबे समय तक जेल में रहे और उन्हें अपनी रिहाई की लड़ाई अपने ही दम पर लड़नी पड़ी। यही कारण रहा कि मुसलमान अखिलेश यादव से नाराज होता चला गया। परिणामस्वरूप इस उप चुनाव में सपा उम्मीदवारों को करारी हार का सामना करना पड़ा।

स्पा के नेताओं ने भी पार्टी को मिली इस हार में महत्पवपूर्ण भूमिका निभाई है। अखिलेश यादव और अन्य कुछ बड़े नेताओं ने इन दोनों ही सीटों पर प्रचार अभियान को हलके में लिया। जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ चुनाव प्रचार में कोई कमी नहीं छोड़ी।

आपसी अनबन भी सपा की हार का मुख्य कारण रही। सपा कार्यकर्ताओं में भी जोश की कमी देखी गई। जबकि भाजपा के कार्यकर्ता जी जान से जुटे रहे। बूथ पर भी सपा कार्यकर्ता कम ही नजर आए। आजमगढ़ की बात करें तो वहां मुस्लिम मतदाता सपा-बसपा में ही उलझा रहा और वोटों का विभाजन हो गया जिसका लाभ भाजपा को मिला।

जबकि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता आईपी सिंह कहते हैं कि मुसलमान मतदाता आज भी उनकी पार्टी के साथा है। सपा उम्मीदवारों को मिले उनके वोट ही इस बात का प्रमाण हैं कि उनका कोर वोटर आज भी उनके साथ है। आजमगढ़ में बसपा के मुस्लिम उम्मीदवार के कारण मत विभाजन का नुकसान अवश्य उठाना पड़ा।

## आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा उपचुनाव में दोनों सीटों भाजपा को

समाजवादी पार्टी नेता आजम खां अपने गढ़ रामपुर अखिलेश यादव आजमगढ़ को नहीं बचा पाए। आजम खां के इस्तीफा देने के बाद से खाली रामपुर सीट पर भाजपा ने घनश्याम सिंह लोधी ने जीत दर्ज की। उन्होंने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव आजम खां के करीबी समाजवादी पार्टी रामपुर के नगर अध्यक्ष आसिम राजा को ४२१६२ मत से पराजित किया। घनश्याम सिंह लोधी को ३६७३६७ और आसिम राजा को ३२५२०५ मत मिले। यहां पर ३३ राउंड चली मतगणना के बाद भाजपा प्रत्याशी घनश्याम सिंह लोधी की जीत हो गई है। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला अधिकारी रविंद्र कुमार मांदड़ ने नवनिर्वाचित सांसद घनश्याम सिंह लोधी को जीत का प्रमाण पत्र भी दे दिया। आसिम राजा रामपुर में विगत दस वर्ष से समाजवादी पार्टी के नगर अध्यक्ष हैं। घनश्याम सिंह लोधी फरवरी में समाजवादी पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे। भाजपा ने उन्हें लोकसभा चुनाव में उतारा। वह पहले भी दो बार लोकसभा का चुनाव लड़े थे। रामपुर से २०१६ में आजम खां ने भाजपा की प्रत्याशी जयाप्रदा को हराकर जीत दर्ज की थी, जबकि २०१४ में यहां से भाजपा के नेपाल सिंह सांसद बने थे। उधर अभिनेता दिनेश लाल यादव निरहुआ ने २०१६ में आजमगढ़ लोकसभा चुनाव में हार का बदला ले लिया है। समाजवादी पाार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के इस्तीफा देने के बाद से खाली सीट पर हुए उप चुनाव में निरहुआ ने पूर्व सांसद समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी धर्मेन्द्र यादव को ८५६५ वोट से हरा दिया। उत्तर प्रदेश में इसके साथ ही रामपुर के बाद आजमगढ़ में भी समाजवादी पार्टी का किला ढह गया। भाजपा प्रत्यशी दिनेश लाल यादव को कुल ३१२४३२ तथा धर्मेन्द्र यादव को ३०३८३७ वोट मिले। बसपा के शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली ने २६६१०६ वोट हासिल किया। यहां पर शुरूआती रूझानों में काफी उतार चढ़ाव देखने को मिला। यहां पर कभी भाजपा के प्रत्याशी निरहुआ आगे रहे तो कभी धर्मेन्द्र यादव आगे निकले थे।

# जर्मनी में जी७ शिखर सम्मेलन में बाइडेन

# मैक्रों और ट्रूडो से कुछ इस अंदाज में मिले पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जर्मनी में जी-७ शिखर सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों से मुलाकात की। प्रधानमंत्री मोदी जी-७ शिखर सम्मेलन में पहुंचे, जहां जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज ने उनका स्वागत किया। इसके बाद जी-७ के सदस्य और मेहमान देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने साथ में फोटो भी खिंचवाईं। इस शिखर सम्मेलन में दुनिया के सात सबसे अमीर देशों के नेता यूक्रेन पर रूसी आक्रमणए खाद्य सुरक्षा और जवाबी कार्रवाई सहित विभिन्न महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करेंगे। एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि रूसी तेल पर मूल्य सीमा की योजना को अंतिम रूप दिया गया है।

पीएम मोदी ने जी७ शिखर सम्मेलन से पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन से भी मुलाकात की। एक वीडियो सामने आया है कि जिसमें देखा जा सकता है कि समूह फोटो से पहले बाइडेन खुद चलकर पीएम मोदी के पास आते हैं और उनका अभिवादन करते हैं। इस दौरान पीएम मोदी भी उनसे गर्मजोशी से मिलते हैं।

इससे पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को यहां जी-७ शिखर सम्मेलन से इतर अर्जेंटीना के राष्ट्रपति अल्बर्टो फर्नांडीज के साथ एक सार्थक बैठक की और द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की। बैठक के दौरान दोनों नेताओं ने व्यापार तथा निवेश, रक्षा सहयोग, कृषि, जलवायु कार्रवाई और खाद्य सुरक्षा जैसे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। यह दोनों नेताओं के बीच पहली द्विपक्षीय मुलाकात थी। दोनों नेताओं ने २०१६ में स्थापित द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी को लागू करने में प्रगति की समीक्षा की।

पीएम मोदी २६ और २७ जून को जी-७ शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए जर्मनी के दो दिवसीय दौरे पर हैं। दौरे से पहले प्रधान मंत्री ने एक आधिकारिक बयान में कहा था कि 'मैं पर्यावरण, ऊर्जा, जलवायु, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, आतंकवाद, लैंगिक समानता और लोकतंत्र जैसे सामयिक मुद्दों पर जी७ देशों, जी-७ भागीदार देशों और अतिथि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करूंगा। मैं नेताओं से मिलने के लिए उत्सुक हूं। विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, पीएम मोदी शिखर सम्मेलन के मौके पर कुछ जी७ देशों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठक भी करेंगे।

# रुक्मिणी हरण स्थल बिजनौर में है

फोटो- चिंगारी से साभार

अशोक मधुप

बिजनौरवासी शायद यह नहीं जानते कि भगवान कृष्ण की पत्नी रुक्मिणी बिजनौर की रहने वाली थी। उसके पिता की राजधानी बिजनौर जनपद में थी। बिजनौर जनपद में वह मंदिर आज भी है, जहां से भगवान कृष्ण ने पूजन के लिए आई रूकमिणी का हरण किया था। महाभारत काल तक स्वर्ग या पहाड़ पर जाने का रास्ता बिजनौर से होकर ही बताया गया है। राजा दुष्यंत देवताओं के बुलावे पर युद्ध करके इसी रास्ते से देवलोक जाते और लौटते हैं।

सुहाहेड़ी के पास कष्यप ऋषि का आश्रम बताया जाता है। सुहाहेड़ी के निवासी सेठ जयनरायण सिंह और अन्य बताते हैं कि पूर्वज इस आश्रम के बारे में बतातें आए हैं। यहां अब कुछ भी शेष नहीं। संभवतः यहा से बहने वाली मालन नदी की बाढ़ में किसी समय सब बह गया। वे देवताओं के बुलावे पर वह राक्षसों से युद्ध करने दैवलोक गए थे। वे दैवलोक से हस्तिनापुर लौटते हैं। लौटते समय इस आश्रम से होकर निकलने के दौरान हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत को शेर के दांत गिनता भरत मिलता है। यह ही उनका और शकुतंला का पुत्र है। इसी के नाम पर बाद में देश का नाम भारतवर्ष पड़ा ।

द्रोपदी का मंदिर बरमपुर में है। कहतें हैं कि पांडवों के स्वर्गारोहण के समय द्रौपदी थक कर मंदिर स्थल पर ही गिरी थी। यहीं उसकी मौत हुई थी। महाभारत काल में पहाड़ पर जाने का स्वर्ग जाने जाने का रास्ता बिजनौर से होकर था। हस्तिनापुर नरेश और वहां के व्यक्ति बिजनौर यहीं से होकर पर्वतों पर जाते थे। दूसरी साइड में गंगा का बहुत बड़ा बहाव था और उसे बार-बार पार करना सरल नहीं था। हस्तिनापुर और बिजनौर के बीच में उस समय आवाजाही सरल थी। सैंधवार में कौरवों का आर्मी का हेड क्वार्टर था। गुरु द्रोणाचार्य का आर्मी ट्रेनिंग सेंटर भी यहीं था यही कौरव पांडव ने युद्ध कला सीखी थी। कहा जाता है कि महाराजा दुष्यंत देवताओं के बुलाने पर युद्ध के लिए बिजनौर होकर ही स्वर्ग जाते हैं। पांडव युद्ध की समाप्ति पर स्वर्गारोहण के लिए भी इसी मार्ग से जाते हैं। स्वर्गारोहण के लिए पांडवों के जाते समय किरतपुर के पास बरमपुर नामक गांव में द्रौपदी बेहोश होकर गिर जाती है। यहीं उसका निधन होता है। यहां द्रोपदी का प्राचीन मंदिर आज भी है। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने कई साल पहले इस मंदिर और सामने बने ताल का सौंदर्यीकरण कराया। इन दोनों कहानियों से पता लगता है उस समय पहाड़ों पर आने जाने का रास्ता बिजनौर की भूमि से होकर था। यह यहीं से सरल पड़ता था । दन्त कथाओं के अनुसार (रुक्मिणी भगवान कृष्ण की पत्नी) का जन्म हरिद्वार में हुआ था। रुक्मिणी विदर्भ के शक्तिशाली राजा भीष्मक की पुत्री थीं। भीष्मक मगध के राजा जरासंध का जागीरदार था। रुक्मिणी को श्री कृष्ण से प्रेम हो गया। वह उनसे विवाह करने को तैयार हो गईं। रुक्मिणी का सबसे बड़ा भाई रुक्मी राजा कंस का मित्र था। इसलिए वह कृष्ण से रुक्मिणी के विवाह का विरोधी था। रुक्मिणी के माता-पिता रुक्मिणी का विवाह कृष्ण से करना चाहते थे। लेकिन रुक्मी, इसका कड़ा विरोधी था। उसने प्रस्तावित किया कि रुक्मिणी की शादी शिशुपाल से की जाए। शिशुपाल चेदि के राजकुमार और श्री कृष्ण का चचेरा भाई था। भीष्मक ने रुक्मिणी के शिशुपाल के साथ विवाह के लिए हाँ कर दिया। रुक्मिणी इसके लिए तैयार नही थी। उसने तुरंत एक ब्राह्मण, से कृष्ण को पत्र भिजवाया। श्री कृष्ण ने युद्ध से बचने के लिए उनके अपहरण का प्लान बनाया। और रुक्मिणी से निर्धारित समय पर देवी गिरिजा के मंदिर में आने को कहा। वह निर्धारित समय पूजा के लिए मंदिर गई थीं। जैसे ही वह बाहर निकली, उसने श्री कृष्ण को देखा और उनके साथ रथ में सवार हो गई। जब शिशुपाल और जरासंध की सारी सेनाएँ उनका पीछा करने लगीं। बलराम अधिकांश सेना पर अधिकार कर लिया और उन्हें वापस भेज दिया। रुक्मी ने कृष्ण और रुक्मिणी को लगभग पकड़ ही लिया था। कृष्ण और रुक्मी के बीच भयानक द्वंद हुआ। जब कृष्ण उसे मारने वाले थे, तो रुक्मिणी कृष्ण के चरणों में गिर गईं और विनती की, कि उनके भाई को क्षमा कर दें। कृष्ण, हमेशा की तरह उदार, लेकिन सजा के रूप में, रुक्मिणी के सिर के बाल काट कर उसे छोड़ दिया।

मंडावर से काफी आगे गांव पड़ते हैं कुंदनपुर और टीप। कहा जाता है कि कुंदनपुर राजा रुक्मि की राजधानी थी। दन्त कथाओं के अनुसार (रुक्मिणी भगवान कृष्ण की पत्नी) का जन्म हरिद्वार में हुआ था। हरिद्वार से गंगा पार करके कुंदनपुर गांव गंगा के खादर में है। इसलिए हो सकता है कि महाभारत के समय कुंदनपुर हरिद्वार का ही भूभाग रहा हो ।

आज से लगभग ४० साल पहले लेखक अशोक मधुप एस्वर्गीय आदित्य नारायण मिश्र एडवोकेट और बिजनौर निवासी इतिहासकार शकील बिजनौरी को मंडावर क्षेत्र के इतिहास के बड़े जानकार स्वर्गीय पंडित नरेंद्र शर्मा कुदंनपुर टीप से लगभग दो किलोमीटर दूर एक मंदिर पर ले गए। सहसपुर खादर में बसा यह मंदिर अंबिका देवी या गलखा देवी का मंदिर बताया जाता है। उन्होंने बताया कि पास में कुंदनपुर राजा रुक्मि की राजधानी थी। कुंदनपुर से इस मंदिर तक सुंरग बनी थी। इसी सुरंग से रुक्मिणी यहां पूजन के लिए आंई। यहीं से वे भगवान कृष्ण के साथ रथ पर सवार होकर चली गईं। हमें बताया कि मंदिर में फर्श पर यदि पांव पटके जांए तो धब-धब की आवाज होती है। लगता कि नीचे खोखला है। आसपास के गांव वालों ने बताया कि अब मंदिर में फर्श बन गया। पहले फर्श टूटा था। उसमें दरारें थीं। इस दरार से यदि कोई सिक्का नीचे डाला जाता तो गुडम-गुडम की पानी में गिरने की आवाज होती। मंदिर में मूर्ति भी अलग तरह की थी। मूर्ति ने वस्त्र नही पहन था। देखने से लगता था कि वह बैठे हुए व्यक्ति के पिछले भाग की मूर्ति है। टीप गांव के अंतर पाल सिंह आदि ने बताया कि बरसात में गंगा की बाढ़ में उन्हें प्राचीन किले के अवशेष आदि आते दीखतें हैं। कुछ पुराने बर्तन उन्होंने बाढ़ में गंगा से निकाले हैं।

काफी सामग्री पुरातत्व विभाग के अधिकारी ले गए। इस लेखक का एक बार बरसात में खिरनी से गंगा के किनारे-किनारे आते एक किले के अवशेष भी दिखाई दिए। किले के किनारे की गोल गुमटी भी बढिया हालत में थी। लेखक के साथ संजीव शर्मा (आजतक जिलाप्रभारी) भी थे। हम यहां से इस किले की एक ईंट लेकर आए। यह ईंट लगभग दो फिट लंबी और लगभग दस इंच चौड़ी है और दो ईंच मोटी है। लेखक के पास ये ईंट आज भी मौजूद है। जनपदवासी इस बारे में नहीं जानते किंतु कुंदनपुर और टीप क्षेत्र के वासी अपने पूर्वज से ये दंत कथा सुनते आए हैं। लोंगों का बताते भी हैं।

बताया जाता है बाद में एक पुजारी मंदिर पर रहने लगे। खजाने होने के शक में वह मंदिर की नीवं खोदने लगे। बरसात का पानी भरने से मंदिर गिर गया। उसकी जगह नया मंदिर बन गया। पुरानी प्रतिमा को भी रखा गया है।

# महाराष्ट्र जारी है घमासान

**शिवसेना की ओर से बागी विधायकों को साधने की कोशिश जारी रही। इन सब के बीच विधानसभा उपाध्यक्ष ने १६ बागी विधायकों को नोटिस भी जारी कर दिया। खबर आई कि खुद उद्धव ठाकरे ने बगावत कर रहे कुछ विधायकों से संपर्क करने की कोशिश की और उन्हें मैसेज किया।**

शिवसेना के तेवर नरम पड़ते दिखाई दे रहे हैं। कई जगह तो एकनाथ शिंदे के समर्थन में पोस्टर भी दिखाई दिए। वहीं, शिवसेना की नेता संजय राउत की ओर से यह भी अपील की गई है कि अगर हमारे विधायक चाहते हैं तो शिवसेना महा विकास आघाडी सरकार से बाहर होने को तैयार हैं। हालांकि जैसे ही यह संजय राउत का बयान सामने आया, कांग्रेस और एनसीपी की भी नाराजगी दिखाई दे गई। महाराष्ट्र में ड्रामा जारी है। हर दिन इस बात की उम्मीद की जाती है कि महाराष्ट्र में बड़ा राजनीतिक उलटफेर हो सकता है। शिवसेना से बगावत कर चुके दिग्गज नेता एकनाथ शिंदे गुवाहाटी के होटल में अपने समर्थक विधायकों के साथ डटे हुए हैं। दावा किया जा रहा है कि एकनाथ शिंदे के पास ४५ से ज्यादा विधायकों का साथ हैं। इन ४५ विधायकों में से लगभग ३७ से ज्यादा विधायक शिवसेना के हैं। ऐसे में दल बदल कानून भी लागू नहीं होता। शरद पवार ने एक बड़ी बैठक की। इस बैठक में एनसीपी के नेता शामिल हुए। इस बैठक के बाद शरद पवार ने भी साफ तौर पर कहा है कि उनकी पार्टी अंत तक उद्धव ठाकरे का समर्थन करेगी। दूसरी ओर शिवसेना के तेवर नरम भी पड़ते दिखाई दे रहे हैं। कई जगह तो एकनाथ शिंदे के समर्थन में पोस्टर भी दिखाई दिए। वहीं, शिवसेना की नेता संजय राउत की ओर से यह भी अपील की गई कि अगर हमारे विधायक चाहते हैं तो शिवसेना महा विकास आघाड़ी सरकार से बाहर होने को तैयार हैं।

राज ठाकरे में बाल ठाकरे का अक्स देखा जाता है। उनकी भाषण शैली और तेवर उन्हें बाल ठाकरे के नजदीक लाते हैं। राज ठाकरे चाचा बाल ठाकरे की तरह स्पष्ट बात कहने के लिए जाने जाते हैं। राज ठाकरे ने शिवसेना छोड़कर अपनी नई पार्टी 'महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना' बना ली। खबर आ रही है कि आज यही राज ठाकरे एकनाथ शिंदे को मदद कर रहे हैं।

बात १९८५ की है। इसी साल विधानसभा चुनाव के बाद शिवसेना सबसे बड़ा विरोधी दल बनकर उभरी थी। छगन भुजबल को भरोसा था कि विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उन्हें ही बनाया जाएगा, लेकिन यह पद मनोहर जोशी को मिला। भुजबल के साथ तब ९ शिवसेना के विधायकों ने विधानसभा स्पीकर को खत सौंपा कि वे शिवसेना-बी नाम का अलग से गुट बना रहे हैं और मूल शिवसेना से खुद को अलग कर रहे हैं। बाद में भुजबल कांग्रेस में शामिल हो गए। यह शिवसेना में पहली बगावत थी।

## आज मेरा घर टूटा है, कल तेरा घमंड भी टूटेगा

सोशल मीडिया पर फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत के घर तोड़ने को लेकर ट्विटर पर कंगना का वीडियो भी खूब शेयर किया जा रहा है जिसमें वो कहती हैं कि महिला का अपमान करने वाले का विनाश सुनिश्चित होता है। हमारे इतिहास में झांक लीजिए, जिसने भी नारी का अपमान किया, उसका पतन निश्चित हुआ है। 'इतिहास साक्षी है। रावण ने सीता का और कौरव ने द्रौपदी का अपमान किया। मैं उन देवियों के पांव के धूल के बराबर भी नहीं हूं। लेकिन मैं भी एक महिला हूं। मैंने किसी का कोई नुकसान नहीं किया है। मैं एक महिला होने के नाते सिर्फ अपने सम्मान की रक्षा करती हूं। लेकिन मेरा अपमान किया गया। इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि जब आप एक महिला का अपमान करता है तो आपका विनाश कोई टाल नहीं सकता है। कंगना यह भी कहती हैं- आज मेरा घर टूटा है, कल तेरा घमंड भी टूटेगा।

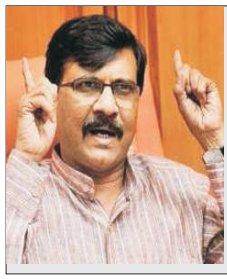

शिवसेना सांसद संजय राउत ने कहा है कि अगर असम में डेरा डाले हुए बागी विधायकों का समूह २४ घंटे में मुंबई लौटता है और मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के साथ मामले पर चर्चा करता है तो शिवसेना महाराष्ट्र में महा विकास आघाड़ी (एमवीए) सरकार छोड़ने के लिए तैयार है। राउत ने कहा कि आप कहते हैं कि आप असली शिवसैनिक हैं और पार्टी नहीं छोड़ेंगे। हम आपकी मांग पर विचार करने के लिए तैयार हैं, बशर्ते आप २४ घंटे में मुंबई वापस आएं और सीएम उद्धव ठाकरे के साथ इस मुद्दे पर चर्चा करें। आपकी मांग पर सकारात्मक रूप से विचार किया जाएगा। ट्विटर और व्हाट्सऐप पर चिट्ठी मत लिखिए।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष शरद पवार ने कहा कि महाराष्ट्र में महा विकास आघाडी सरकार (एमवीए) के भाग्य का फैसला विधानसभा में होगा और शिवसेना-राकांपा-कांग्रेस गठबंधन विश्वास मत में बहुमत साबित करेगा।

हालांकि जैसे ही यह संजय राउत का बयान सामने आया, कांग्रेस और एनसीपी की भी नाराजगी दिखाई दे गई। कांग्रेस ने तो साफ तौर पर कह दिया कि शिवसेना निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं। उद्धव ठाकरे ने पार्टी विधायकों की बैठक बुलाई थी जिसमें १५ से कम विधायक मौजूद थे। वही विधायकों के गुवाहाटी पहुंचने का दौर जारी रहा शाम होते-होते कई विधायक पहुंच गए। जबकि सूरत से वापस लौटे शिवसेना विधायक नितिन देशमुख ने खुलकर उद्धव ठाकरे का समर्थन किया और जबरन अगवा करने का आरोप लगाया। एकनाथ शिंदे के साथ महाराष्ट्र शिवसेना विधायक दादाजी भुसे, विधायक संजय राठौड़ और एमएलसी रवींद्र फाटक गुवाहाटी के रैडिसन ब्लू होटल में मौजूद हैं। शिवसेना के नवनियुक्त विधायक दल के नेता अजय चौधरी ने महाराष्ट्र विधानसभा के उपाध्यक्ष को पत्र लिखकर उन विधायकों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की जो विधायक दल की बैठक में शामिल नहीं हुए हैं। मांग हुई है कि १२ विधायकों को आयोग्य घोषित कर दिया जाए।

महा विकास आघाड़ी गठबंधन सरकार को संकट में डालने वाले शिवसेना के बागी नेता एकनाथ शिंदे ने कहा कि एक ''राष्ट्रीय दल'' ने उनकी बगावत को ऐतिहासिक करार देते हुए हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। मुंबई में शिंदे के कार्यालय की ओर से एक वीडियो जारी किया गया, जिसमें वह गुवाहाटी के एक होटल में शिवसेना के बागी विधायकों को संबोधित कर रहे हैं। वीडियो में शिंदे कह रहे हैं, ''हमारी चिंताएं और खुशियां एक समान हैं। हम एकजुट हैं और जीत हमारी होगी। एक राष्ट्रीय दल है, एक महाशक्ति...आप जानते हैं कि उन्होंने पाकिस्तान को मात दी। उस दल का कहना है कि हमने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया है और हमे हरसंभव मदद का भरोसा दिया है।'' शिवसेना के बागी विधायक संजय शिरसाट ने मुख्यमंत्री एवं पार्टी प्रमुख उद्धव ठाकरे को पत्र लिखकर दावा किया कि शिवसेना विधायक ढाई साल से 'अपमान' का सामना कर रहे थे। जिसके चलते मंत्री एकनाथ शिंदे ने पार्टी नेतृत्व के खिलाफ जाने का कदम उठाया। औरंगाबाद (पश्चिम) से विधायक शिरसाट ने २२ जून को लिखे पत्र में दावा किया कि शिवसेना के सत्ता में होने और उसका अपना मुख्यमंत्री होने के बावजूद, ठाकरे के आसपास की मंडली ने उन्हें कभी भी वर्षा तक पहुंचने नहीं दिया। पत्र को शिंदे ने अपने ट्विटर पेज पर पोस्ट किया, जिसमें दावा किया गया कि ये शिवसेना के विधायकों की भावनाएं हैं। पत्र में शिरसाट ने कहा कि एकनाथ शिंदे ने पार्टी के विधायकों की शिकायतें, उनके निर्वाचन क्षेत्रों में विकास कार्यों और निधि से जुड़े मामलों के बारे में उनकी बात सुनी, साथ ही सहयोगी कांग्रेस और राकांपा के साथ उनकी समस्याओं को भी सुना। उन्होंने दावा किया कि शिवसेना के विधायकों की मुख्यमंत्री तक पहुंच नहीं थी, जबकि पार्टी के असली विरोधी होने के बावजूद कांग्रेस और राकांपा को पूरी तवज्जो दी जा रही थी।

शिवसेना की ओर से बागी विधायकों को साधने की कोशिश जारी रही। इन सब के बीच विधानसभा उपाध्यक्ष ने १६ बागी विधायकों को नोटिस भी जारी कर दिया। खबर यह भी आई कि खुद उद्धव ठाकरे ने बगावत कर रहे कुछ विधायकों से संपर्क करने की कोशिश की है और उन्हें मैसेज किया है। बागी विधायकों ने आज भी दोहराया कि वे शिवसेना से अलग नहीं हुए हैं बल्कि पार्टी बचाने के लिए यह कवायद कर रहे हैं।

दूसरी ओर आज भाजपा की सक्रियता भी दिखाई दे रही है। भाजपा पूरे घटनाक्रम में खुलकर बोलती दिखाई नहीं दी। लेकिन देवेंद्र फडणवीस ने रामदास अठावले जैसे गठबंधन के सहयोगियों से मुलाकात की और एक बड़ी बैठक की। सूत्रों ने यह भी दावा कर दिया कि एकनाथ शिंदे और देवेंद्र फडणवीस के बीच वडोदरा में मुलाकात हुई थी। शिवसेना के बागी नेता एकनाथ शिंदे के सैकड़ों समर्थक ठाणे जिले में उनके आवास के पास भगवा झंडे और पार्टी के संस्थापक बाल ठाकरे तथा क्षेत्रीय नेता आनंद दिघे की बड़ी तस्वीरों के साथ एकत्र हो गए। शिंदे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के खिलाफ बगावत का बिगुल फूंकने के बाद २१ जून से बड़ी संख्या में विधायकों के साथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित राज्य असम के गुवाहाटी शहर में डेरा डाले हुए हैं। शिंदे के पुत्र और कल्याण से शिवसेना के सांसद श्रीकांत शिंदे ने कहा कि महा विकास आघाड़ी के गठन के बाद से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के कारण शिवसेना को काफी नुकसान हुआ है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का मकसद शिवसेना को समाप्त करना है क्योंकि वह हिंदू वोट बैंक को साझा नहीं करना चाहती। ठाकरे ने भाजपा और शिवसेना के बागी विधायक एकनाथ शिंदे को चुनौती दी कि वे शिवसेना के कार्यकर्ताओं और पार्टी को वोट देने वाले लोगों को अपने पाले में करके दिखाएं। खेल तो हो चुका है जबकि शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे समझाने में लगे हुए हैं कि ''पूंजी'' शिवसेना को अपने ही लोगों ने धोखा दिया है।''

## शिवसेना में कई बार हुई बगावत

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे और ४० विधायकों की बगावत की वजह से उद्धव ठाकरे की कुर्सी खतरे में है। एकनाथ शिंदे के दावों को सही माने तो उद्धव के हाथों से सरकार और पार्टी दोनों निकलती नजर आ रही हैं। एकनाथ शिंदे का नाम सुर्खियों में छाया हुआ है। शिंदे के कदम ने शिवसेना के नेतृत्व वाले महाराष्ट्र के महाविकास अघाड़ी सत्तारूढ़ गठबंधन के भविष्य पर सवाल खड़ा कर दिया है। शिवसेना में बगावत का यह इतिहास पुराना है। बाला साहेब ठाकरे के समय भी शिवसेना में बगावत देखने को मिली थी। शिवसेना में अब तक एकनाथ शिंदे के अलावा छगन भुजबल, नारायण राणे, संजय निरुपम और राज ठाकरे भी बगावत कर चुके हैं।

## नारायण राणे ने भी छोड़ी थी पार्टी

बाल ठाकरे ने २००३ में जब महाबलेश्वर में कार्यकारी अध्यक्ष के लिए उद्धव ठाकरे के नाम का प्रस्ताव रखा तो नारायण राणे ने विरोध किया। बाद में २००५ में पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए बाल ठाकरे ने नारायण राणे को शिवसेना से निकाल दिया। उस समय नारायण राणे १० समर्थक विधायकों के साथ कांग्रेस में शामिल हो गए। यह शिवसेना के लिए जोरदार झटका था।

प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

# भयावह था कांग्रेस का आपातकाल

२५ जून को सुप्रीम कोर्ट के कुछ सख्त फैसले से नाराज होकर तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा देश को इमरजेंसी के हवाले कर दिया था। यह भयावह दौर था। २५ जून १९७५ को देर रात्रि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में अपने खिलाफ बढ़ती नाराजगी को दबाने के लिए आपातकाल लगा दिया। जिसे आज भी भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में देश के सबसे काले दिन के रूप में देखा जाता है। यह दौर २५ जून १९७५ से २१ मार्च १९७७ तक चला।

तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार की सिफारिश पर भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३५२ के अधीन देश में आपातकाल की घोषणा की थी। २५ जून और २६ जून की मध्य रात्रि में तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद के हस्ताक्षर के साथ ही देश में पहली और संभवतः अंतिम बार इस तरह का आपातकाल लागू हुआ था। २६ जून की सुबह समूचे देश ने रेडियो पर इंदिरा की आवाज में संदेश सुना था, 'भाइयो और बहनों, राष्ट्रपति जी ने आपातकाल की घोषणा की है।' आपातकाल की घोषणा के साथ ही देश के नागरिकों के मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए थे। २५ जून की रात से ही देश में विपक्ष के नेताओं की गिरफ्तारियों का दौर शुरू हो गया था। जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, नानाजी देशमुख, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाल आपटे, अरुण जेटली समेत विपक्ष के तमाम नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक श्री बाला साहेब देवरस को पूना के यरवदा जेल में बंद रखा गया। संघ ने भी लोकतंत्र की रक्षा के लिए प्रतिबंध को चुनौती दी। लाखों स्वयंसेवकों ने प्रतिबंध के खिलाफ और मौलिक अधिकारों के हनन के खिलाफ शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन में भाग लिया। जेलों में जगह नहीं बची थी। प्रशासन और पुलिस के द्वारा भारी उत्पीड़न की घटनाएं सामने आई थीं। प्रेस पर भी सेंसरशिप लगा दी गई थी। हर अखबार में सेंसर अधिकारी बैठा दिया गया, जिसकी अनुमति के बाद ही कोई समाचार छप सकता था। इसीलिए तब एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी समाचार पत्र ने अपने संपादकीय पृष्ठ पर प्रश्न चिन्ह बनाकर खाली छाप दिया था।

२३ जनवरी, १९७७ को मार्च महीने में चुनाव की घोषणा हो गई, जिसमें जनता ने कांग्रेस और तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को हरा दिया था।

१९७१ के चुनाव में इंदिरा गांधी ने अपनी पार्टी को अभूतपूर्व जीत दिलाई थी और खुद भी बड़े अंतर से चुनाव जीती थीं। खुद इंदिरा गांधी की जीत पर सवाल उठाते हुए उनके चुनावी प्रतिद्वंद्वी राजनारायण ने १९७१ में अदालत का दरवाजा खटखटाया था। संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार के तौर पर इंदिरा गांधी के सामने रायबरेली लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ने वाले राजनारायण ने अपनी याचिका में आरोप लगाया था कि इंदिरा गांधी ने चुनाव जीतने के लिए गलत तरीकों का इस्तेमाल किया है। मामले की सुनवाई हुई और इंदिरा गांधी के चुनाव को निरस्त कर दिया गया। इस फैसले से आक्रोशित होकर इंदिरा गांधी ने इमर्जेंसी लगाने का फैसला किया। कोर्ट के फैसले से इंदिरा गांधी इतना क्रोधित हो गई थीं कि अगले दिन ही उन्होंने बिना कैबिनेट की औपचारिक बैठक के आपातकाल लगाने की अनुशंसा राष्ट्रपति से कर डाली, जिस पर राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने २५ जून और २६ जून की मध्य रात्रि में ही अपने हस्ताक्षर कर डाले और इस तरह देश में पहला आपातकाल लागू हो गया। देश में आपातकाल लगाए जाने पर इंदिरा गांधी के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे दिवंगत आरके धवन ने कहा था कि सोनिया और राजीव गांधी के मन में आपातकाल को लेकर कभी किसी तरह का संदेह या पछतावा नहीं था। और तो और, मेनका गांधी को इमर्जेंसी से जुड़ी सारी बातें पता थीं और वह हर कदम पर पति संजय गांधी के साथ थीं। वह मासूम या अनजान होने का दावा नहीं कर सकतीं। दिवंगत आरके धवन ने यह खुलासा एक न्यूज चैनल को दिए गए इंटरव्यू में किया था।

धवन ने बताया था कि पश्चिम बंगाल के तत्कालीन सीएम एसएस राय ने जनवरी १९७५ में ही इंदिरा गांधी को आपातकाल लगाने की सलाह दी थी। इमर्जेंसी की योजना तो काफी पहले से ही बन गई थी। धवन ने बताया था कि तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद को आपातकाल लागू करने के लिए उद्घोषणा पर हस्ताक्षर करने में कोई आपत्ति नहीं थी। वह तो इसके लिए तुरंत तैयार हो गए थे। धवन ने यह भी बताया था कि किस तरह आपातकाल के दौरान मुख्यमंत्रियों की बैठक बुलाकर उन्हें निर्देश दिया गया था कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उन सदस्यों और विपक्ष के नेताओं की लिस्ट तैयार कर ली जाए, जिन्हें गिरफ्तार किया जाना है। इसी तरह की तैयारियां दिल्ली में भी की गई थीं। आपातकाल खत्म होने के बाद हुए चुनाव में जनता पार्टी की सरकार बनी थी, यह और बात है कि आपसी मतभेद के कारण यह सरकार लम्बी नहीं चली और कुछ समय के बाद फिर से कांग्रेस सत्ता में आ गई।

विपक्षी दलों के प्रमुख नेता नजरबंद कर दिए गए। सभा, जुलूस, प्रदर्शन सभी पर रोक लगा दी गई। अदालतें स्वयं

कैद हो चुकी थी, जो जमानत लेने और देने से साफ इनकार कर रही थी। एक लाख से अधिक राजनेताओं-कार्यकर्ताओं को गिरफ्तारी के समय यातनाएं सहनी पड़ी। इमरजेंसी के दौरान संजय गांधी के इशारे पर देश में हजारों गिरफ्तारियां हुईं। देश की राजधानी दिल्ली में एक ही दिन में ७०००० गरीबों को उनके घरों से उतारकर यमुना पुश्ते पर फेंक दिया जाएगा।

देश के हर क्षेत्र में यह तांडव चला। इस तरह देश के सभी राज्यों में केंद्र सरकार की तानाशाही के खिलाफ आंदोलन मुखर होता गया। राज्य की विधानसभाओं से विपक्षी विधायकों ने इस्तीफा देना शुरू किया। इसी बीच बिहार और गुजरात में कांग्रेस के खिलाफ छात्रों का आंदोलन उग्र हो रहा था। बिहार में इसका नेतृत्व लोकनायक जयप्रकाश नारायण कर रहे थे। इस आंदोलन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की सशक्त भागीदारी रही। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अगले दिन यानी २५ जून को दिल्ली के रामलीला मैदान में जयप्रकाश नारायण की रैली थी, जिसमें उन्होंने इंदिरा गांधी पर लोकतंत्र का गला घोटने का आरोप लगाते हुए रामधारी सिंह दिनकर की एक कविता के अंश 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' का नारा बुलंद किया था। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने विद्यार्थियों, सैनिकों और पुलिस वालों से अपील कि वे लोग इस दमनकारी निरंकुश सरकार के आदेशों को ना मानें, क्योंकि कोर्ट ने इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री पद से हटने को कहा है। इसी रैली के आधार पर इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लगाने का फैसला किया था। इंदिरा गांधी के खिलाफ पूरे देश में जन आक्रोश बढ़ रहा था। इसमें छात्र और संपूर्ण विपक्ष एकजुट हो गए थे। कोर्ट के आदेश ने इंदिरा गांधी की हालात को पंगु बना दिया था, क्योंकि इंदिरा गांधी अब संसद में वोट नहीं डाल सकती थी और उनको कांग्रेस पार्टी के किसी नेता पर भरोसा भी नहीं था।

इंदिरा गांधी को आपातकाल लगाने का सबसे बड़ा बहाना जयप्रकाश नारायण द्वारा दिया गया संपूर्ण क्रांति का था। छात्र संगठनों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने देशव्यापी आंदोलन छेड़ रखा था, जिसके कारण युवाशक्ति को जेलों में ठूंसकर अमानवीय यातनाएं दी गई। तत्कालीन छात्र संगठनों से जुड़े शिक्षकों एवं प्राध्यापकों को बेवजह मीसा कानून में बंद कर दिया गया। छात्रों ने स्वयं के कैरियर की परवाह न करते हुए जेल में रहकर राष्ट्रवाद की ज्वाला को प्रज्जवलित किए रखी। इंदिरा गांधी ने २६ जून १९७५ की सुबह राष्ट्र के नाम अपने संदेश में कहा कि जिस तरह का माहौल देश में एक व्यक्ति अर्थात जयप्रकाश नारायण के द्वारा बनाया गया है, उसमें यह जरूरी हो गया है कि देश में आपातकाल लगाया जाए। इसके साथ ही भारतीय संविधान की धारा ३५२ के तहत आपातकाल की घोषणा तत्कालीन राष्ट्रपति ने की थी। आपातकाल लागू होने के साथ ही विरोध की लहर लगातार तेज हो गई। अंततः प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लोकसभा भंग कर चुनाव कराने की सिफारिश कर दी। चुनाव में आपातकाल लागू करने का फैसला जनता को नागवार लगा। १९७७ में हुए लोकसभा चुनाव में जनता पार्टी भारी बहुमत से सत्ता में आई और मोरारजी देसाई देश के प्रधानमंत्री बने।

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

शोधादर्श

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

बिजनौर जनपदवासियों के लिए होगा यह विशेषांक

बिजनौर विशेषांक

क्या आप बिजनौर विशेषांक में अपने संस्थान का विज्ञापन देना चाहते हैं अथवा बिजनौर से संबंधित कोई ऐतिहासिक जानकारी आपके पास है? तब आप संपर्क करें

Email-shodhadarsh2018@gmail.com

Mob- 9897742814

'रुखसाना सुल्ताना' को संजय गांधी का काफी करीबी माना जाता था, इसलिए ही उन्हें गांधी के नसबंदी कैंप की जिम्मा सौंपा गया था, लेकिन जनसंख्या नियंत्रण के लिए चलाए गए इस कैंपन ने विकराल और खौफनाक रूप धारण कर लिया था क्योंकि उस वक्त कुछ ऐसे केस सामने आए, जिसमें लोगों की जबरन नसबंदी की गई थी। रुखसाना सुल्ताना के देखते ही भाग खड़े होते थे लोग जिससे लोगों के बीच खासकर के मुस्लिम समुदाय के अंदर एक खौफ बैठ गया था, हालांकि संजय गांधी का मानना था कि देश में परिवार नियोजन के लिए नसबंदी करानी जरूरी है और इसे जागरूकता अभियान की तरह चलाना चाहिए लेकिन उन दिनों जिस तरह नसबंदी की जा रही थी उससे पुरानी दिल्ली में जागरुकता नहीं बल्कि लोगों के बीच



# इमरजेंसी में बेलगाम थे संजय और ग्लैमर गर्ल 'रुखसाना सुल्ताना'

कुछ नेताओं ने इंदिरा गांधी को समझाया कि यदि उन्होंने प्रधानमंत्री का पद किसी और को दिया तो फिर वह व्यक्ति इसे नहीं छोड़ेगा और पार्टी पर पकड़ खत्म हो जाएगी। इंदिरा गांधी ने तय किया कि वे इस्तीफा देने के बजाय तीन हफ्तों की मिली मोहलत का फायदा उठाते हुए इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगी। सुप्रीम कोर्ट ने भी हाईकोर्ट के फैसले पर पूर्ण रोक लगाने से इंकार कर दिया। उस वक्त ३१ वर्ष की रुखसाना सुल्ताना को संजय गांधी का राईट हैंड कहा जाता था। सुल्ताना ने दिल्ली में जामा मस्जिद के आसपास संवेदनशील मुस्लिम इलाकों में एक साल में करीब १३ हजार नसबंदियां करवाईं। जगह-जगह पर कैंप लगाए गए। नसबंदी कराने वाले लोगों को ७५ रूपए, काम से एक दिन की छुट्टी और एक डब्बा घी दिया जाता था। कहीं-कहीं पर सायकिल भी दी जाती थी। सफाई कर्माचारियों, रिक्शा चलाने वालों और मजदूर वर्ग के लोगों का जबरदस्ती नसबंदी करवायी गयी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रशीद किदवई ने अपनी किताब '२४ अकबर रोड' में इस बारे में काफी कुछ लिखा है। रुखसाना सुल्ताना की पहचान संजय गांधी की करीबी और एक समाजसेविका के तौर पर है। किताब के अनुसार, रुखसाना सुल्ताना की संजय गांधी के साथ इतनी करीबी थी कि संजय की पत्नी मेनका गांधी, इंदिरा गांधी और उस वक्त यूथ कांग्रेस अध्यक्ष अंबिका, रुखसाना सुल्ताना को पसंद नहीं करती थीं। इसके बावजूद रुखसाना सुल्ताना राजनैतिक तौर पर काफी ताकतवर हो गई थीं।

इमरजेंसी के दौरन संजय गांधी ने जनसंख्या नियंत्रण को रोकने के लिए नसबंदी कैंप चलाया था। इमरजेंसी की चीफ ग्लैमर गर्ल 'रुखसाना सुल्ताना' जिसकी जिम्मेदारी सौंपी गई थी समाज सेवी 'रुखसाना सुल्ताना' को, जो कि इतिहास के पन्नों में इमरजेंसी की 'चीफ ग्लैमर गर्ल' नाम के नाम से विख्यात हैं, समाज सेवी और बेइंतहा खूबसूरत 'रुखसाना सुल्ताना' को संजय गांधी का काफी करीबी माना जाता था, इसलिए ही उन्हें गांधी के नसबंदी कैंप की जिम्मा सौंपा गया था, लेकिन जनसंख्या नियंत्रण के लिए चलाए गए इस कैंपन ने विकराल और खौफनाक रूप धारण कर लिया था क्योंकि उस वक्त कुछ ऐसे केस सामने आए, जिसमें लोगों की जबरन नसबंदी की गई थी। रुखसाना सुल्ताना के देखते ही भाग खड़े होते थे लोग जिससे लोगों के बीच खासकर के मुस्लिम समुदाय के अंदर एक खौफ बैठ गया था, हालांकि संजय गांधी का मानना था कि देश में परिवार नियोजन के लिए नसबंदी करानी जरूरी है और इसे जागरूकता अभियान की तरह चलाना चाहिए लेकिन उन दिनों जिस तरह नसबंदी की जा रही थी उससे पुरानी दिल्ली में जागरुकता नहीं बल्कि लोगों के बीच डर फैल गया था। कैंपन से डर गए थे मुस्लिम समाज के लोग ६० साल के बुजुर्गों से लेकर १८ साल के जवानों तक की नसबंदी हो रही थी, नए-नवेले शादी-शुदा लोगों को भी नसबंदी के लिए मजबूर कराया जा रहा था, जिसके कारण लोग दहशत के साए में जी रहे थे और इसलिए जब इमरजेंसी की चीफ ग्लैमर गर्ल 'रुखसाना सुल्ताना' पुरानी दिल्ली कि किसी बस्ती में कदम रखती थीं तो वहां लोग डर के मारे गायब हो जाते थे। रुखसाना सुल्ताना को अवैध निर्माण हटाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। जिसे लेकर खूब विवाद भी हुआ था। रुखसाना सुल्ताना के निजी जीवन की बात करें तो उनकी शादी शिवेन्द्र सिंह के साथ हुई थी, लेकिन जल्द ही दोनों का तलाक हो गया था। रुखसाना सुल्ताना की एक बेटी है, जिसे लोग बॉलीवुड अभिनेत्री अमृता सिंह के रूप में जानते हैं। तलाक के बाद रुखसाना सुल्ताना ने दिल्ली में एक ज्वैलरी बुटीक खोला था। बताया जाता है कि संजय गांधी रुखसाना सुल्ताना के बुटीक पर गए थे, उसके बाद से ही दोनों के बीच जान-पहचान हुई। रुखसाना खुद को संजय गांधी की 'आइसक्रीम वाली दोस्त' बताती थी। हालांकि इसका क्या मतलब है, ये किसी को नहीं पता है! किताब के अनुसार, जामा मस्जिद इलाके में रुखसाना सुल्ताना ने ८००० लोगों को नसबंदी कराने के लिए 'प्रेरित' किया था, जिसके एवज में उसे सरकार से कथित तौर पर ८४,००० रुपए मिले थे। बताया जाता है कि जुलाई १९७६ में जब रुखसाना सुल्ताना ने दिल्ली के तुर्कमान गेट इलाके में कई दुकानों को ध्वस्त कराया, उस दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने इस कार्रवाई का विरोध किया था। जिसके चलते पुलिस ने भीड़ पर लाठी चार्ज, आंसूगैस के गोले और आखिरकार गोलियां भी चलायी थीं। जिसके चलते कई लोगों की मौत भी हुई थी।

तत्कालीन यूथ कांग्रेस की नेता अंबिका ने एक बार अपने एक इंटरव्यू में रुखसाना सुल्ताना की आलोचना की थी और बताया था कि वह इंदिरा गांधी के आवास में रुखसाना सुल्ताना की मौजूदगी को बर्दाश्त भी नहीं कर पाती हैं। अंबिका ने इसे लेकर इंदिरा से रुखसाना की शिकायत भी की थी। इस पर इंदिरा ने अंबिका को संजय गांधी से इस बारे में बात करने को कहा था। किताब के अनुसार, संजय गांधी ने अंबिका द्वारा रुखसाना की शिकायत को यह कहकर नजरअंदाज कर दिया था कि 'यूथ कांग्रेस को रुखसाना की जरूरत है, ना कि रुखसाना को यूथ कांग्रेस की।'

'रुखसाना सुल्ताना' की बेटी हैं अमृता सिंह उस वक्त के समाचार पत्रों में 'रुखसाना सुल्ताना' के लिए काफी कुछ लिखा गया है, हालांकि आपातकाल के समाप्त होते ही 'रुखसाना सुल्ताना' मीडिया और राजनीति के प्लेटफार्म से गायब हो गईं और इसके कुछ वक्त बाद पता लगा कि उन्होंने आर्मी ऑफिसर शविंदर सिंह से शादी कर ली है, जो मशहूर लेखक खुशवंत सिंह के भतीजे थे। साल १९८३ में उनकी एक बार फिर से चर्चा तब हुई, जब फिल्म 'बेताब' के जरिए रूपहले पर्दे पर अभिनेत्री अमृता सिंह ने कदम रखा। अमृता सिंह की मां मुस्लिम और पिता सिख अमृता सिंह अस्सी-नंबे के दशक की मशहूर अभिनेत्री रही हैं।

ऋषभदेव शर्मा

# बुजुर्ग यानी धरती का नमक

लीजिए, अब एक और नई चिंता! बुजुर्ग बढ़ रहे हैं अपने देश में। बुजुर्ग यानी अनुत्पादक भीड़ नहीं, बुजुर्ग यानी धरती का नमक!

बुजुर्गों को बोझ समझने वाले कुछ लोग तो यह सोच-सोच कर ही पतले हुए जा रहे होंगे कि भारत की आम आबादी २०११ से २०२१ के बीच कुल १२.४ प्रतिशत बढ़ी है, जबकि इस दौरान बुजुर्गों की संख्या ३५.८ प्रतिशत बढ़ गई! क्या कीजिएगा अगर जीने की दशाओं से लेकर चिकित्सा की सुविधाओं तक में पिछले ५०-६० साल में देश ने इतना सुधार कर लिया है कि लोगों की औसत जिंदगी के दिन बढ़ गए हैं! इससे अच्छी खबर और क्या हो सकती है भला? लेकिन इसी के फलस्वरूप बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के एक अध्ययन से पता चला है कि भारतवर्ष में बुजुर्ग आबादी की संख्या वर्ष १९६१ से लगातार बढ़ रही है। २०२१ में यह १३.८ करोड़ पर पहुँच गई है। इस अध्ययन में ६० वर्ष या उससे अधिक उम्र वाले लोगों को बुजुर्ग माना गया है। डरें नहीं, अनुमान है कि वर्ष २०२१ से २०३१ के बीच देश की सामान्य आबादी में ८.४ प्रतिशत और बुजुर्गों की आबादी में ४०.५ प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की जाएगी!

बुजुर्गों की संख्या में इस वृद्धि का मुख्य कारण मृत्यु दर में कमी आना है और उसकी वजह देश में स्वास्थ्य सेवाओं में लगातार सुधार है। सयाने बता रहे हैं कि पिछले बीस वर्षों में वृद्ध पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक रही है, लेकिन इधर यह अनुपात उलटने लगा है। रिपोर्ट के अनुसार, २०२१ में देश में लगभग १३.८ करोड़ बुजुर्ग व्यक्ति हैं, जिनमें ६.७ करोड़ पुरुष और ७.१ करोड़ महिलाएँ शामिल हैं। अनुमान है कि अगले दस साल में बुजुर्ग महिलाओं की संख्या साफ तौर पर बुजुर्ग पुरुषों से ज़्यादा होगी। वर्ष २०३१ में बुजुर्गों की संख्या १९.३८ करोड़ पर पहुँचने का अनुमान है। इसमें ९.२९ करोड़ बुजुर्ग पुरुष और १०.०९ करोड़ बुजुर्ग महिलाएँ शमिल होंगी। इस बदलाव के पीछे शायद चिकित्सकीय के अलावा सामाजिक-सांस्कृतिक कारण भी सक्रिय हों। शायद लंबे जीवन की कला पुरुषों को महिलाओं से सीखनी चाहिए! बुजुर्गों को अनुत्पादक बोझ समझने की प्रवृत्ति को भी बदलना होगा। सरकारी नौकरी से रिटायर होने वाले पेंशनशुदाओं की बात अलग है, वरना इस देश में अधिकतर बुजुर्ग तब तक सक्रिय रहने का प्रयास करते हैं, जब तक हाथ-पैर चलते रहें। खेती-किसानी से लेकर राजनीति तक कोई भी बुजुर्ग जल्दी से संन्यास नहीं लेना चाहता न भला दैनिक जीवन में अप्रासंगिक होकर कौन जीना चाहेगा?

कहना जरूरी है कि बढ़ती बुजुर्ग आबादी को बोझ और समस्या मानने वाले लोग स्वार्थी और स्वकेंद्रित हैं। ऐसे ही लोगों के कारण दुनिया भर के समाजों में अलग-अलग तरह से अपने बुजुर्गों से पीछा छुड़ाने की अनेक क्रूर प्रथाएँ प्रचलन में रही हैं। तमिलनाडु के कुछ दक्षिणी जिलों में गैरकानूनी तौर पर प्रचलित 'तलईक्कुत्तल' जैसी कुछ कुप्रथाएँ दुनिया भर में पाई जाती हैं। इसमें परिवार के ही लोग अपने बड़े-बुजुर्गों को मार डालते हैं और उत्सव मनाते हैं! कहने की जरूरत नहीं कि किसी के भी जीने के अधिकार का इस तरह हनन बेहद अमानवीय है। हमें वृद्धों और वृद्धावस्था के प्रति समाज के दृष्टिकोण को बदलना और सकारात्मक बनाना होगा। बूढ़े बैल को कसाई के हवाले करना न कल न्यायसंगत था, न ही कल होगा!

यहाँ एक और अध्ययन की चर्चा जरूरी है। 'एल्डरली केयर इंडेक्स' से पता चलता है कि पूरे भारत में अपने बुजुर्गों का खयाल रखने में राजस्थान नंबर एक पर पाया गया है, जबकि नंबर दो और तीन पर क्रमशः महाराष्ट्र और बिहार हैं। इससे यह भी पता चलता है कि हमारा समाज अपने बुजुर्गों के प्रति एक बार फिर सजग हो रहा है।

अंततः इतना ही कि-वृद्धाएँ धरती का नमक हैं, किसी ने कहा था! जो घर में हो कोई वृद्धा... खाना ज्यादा अच्छा पकता है

(अनामिका)

सौरभ भारद्वाज

# युवाओं के लिए सेना द्वारा नई भर्ती 'अग्निपथ'

## "देश की रक्षा के लिए भारत सरकार ने एक अहम कदम उठाया है, इंडियन आर्मी में एक भर्ती कराने जा रही है जिसका नाम है अग्निपथ।"

अग्निपथ भर्ती योजना २०२२ क्या है यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। आइए जानते हैं कि अग्निपथ भर्ती योजना २०२२ क्या है, अग्निपथ स्कीम भारत सरकार द्वारा सेना में ४ साल के लिए बहाली हेतु लाई गई एक महत्वाकांक्षी योजना है जिस पर सरकार ६० दिनों के भीतर एक्शन लेगी। अग्निपथ भर्ती योजना के माध्यम से भारतीय सेनाओं को ज्यादा युवा और नई तकनीकों में माहिर बनाने की योजना है। इस स्कीम की सहायता से सरकार को सेना की औसत उम्र ३२ साल से २६ साल करने में सहायता मिलेगी जिससे न सिर्फ सशस्त्र बल में युवा शक्ति का संचार होगा, बल्कि बहुत से युवाओं को नौकरी भी मिलेगी। अग्निपथ स्कीम २०२२ के आ जाने के बाद सेना में सिपाही के पद पर नई भर्तियां अब अग्निपथ योजना के तहत होंगी। साथ ही इसके तहत भविष्य में मेरिट और संगठन की जरूरत को देखते हुए २५ प्रतिशत तक अग्निवीर सैनिकों को सेना में ४ वर्ष की सेवा के बाद भी रिटेन किया जाएगा। वहीं चार साल की नौकरी के बाद बाकी के ७५ प्रतिशत युवाओं को एक मुश्त राशि के साथ-साथ सरकार की तरफ से तकनीकी योग्यता का सर्टिफिकेट दिया जाएगा, जिससे उन्हें भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में क्षमता अनुसार नौकरी पाने में सहायता प्राप्त होगी। इसके साथ ही सभी उम्मीदवार नियमित संवर्ग में भर्ती के लिए बतौर वहलन्टियर आवेदन कर सकते हैं।

अग्निपथ स्कीम भर्ती के लिए आर्मी के पुराने तरीके का ही पालन किया जाएगा। इसके लिए शारीरिक परीक्षण के साथ-साथ युवाओं को लिखित परीक्षा से भी गुजरना होगा। अग्निपथ पात्रता मानदंड के अनुसार यदि अग्निपथ भर्ती योजना के लिए आवेदन देने वाले युवाओं की उम्र सीमा पर गौर करें, तो इस योजना के लिए आवेदन देने वाले युवाओं की न्यूनतम आयु १७ साल ६ महीने और अधिकतम आयु २१ साल निर्धारित की गई है (केवल साल २०२२ के लिए २३ वर्ष रखी गई है।)। अग्निपथ भर्ती योजना के तहत युवाओं को ट्रेनिंग पीरियड समेत कुल ४ वर्षों के लिए स्शस्त्र सेवा बल में फुल टाइम काम करने का मौका मिलेगा, जिसके लिए भर्ती सेना के तय नियमानुसार ही होगी। खास बात ये है कि इस योजना के तहत न सिर्फ पुरुष, बल्कि महिलाएं भी आवेदन कर सकती हैं। युवा इस योजना के माध्यम से सेना के तीनों प्रमुख अंग यानि कि थल सेना, वायु सेना और नौ सेना में बहाल हो सकेंगे।

युवा की उम्र साढ़े १७ से २१ वर्ष के बीच होनी चाहिए। भर्ती के लिए आर्मी के पुराने तरीके का ही पालन किया जाएगा। शारीरिक परीक्षण के साथ-साथ लिखित परीक्षा ली जाएगी। ट्रेनिंग पीरियड (६ माह) समेत कुल ४ वर्षों के लिए स्शस्त्र सेवा बल में फुल टाइम सेवा करने का मौका मिलेगा। पुरुष और महिला दोनों अग्निपथ योजना के लिए आवेदन कर सकते हैं। सेना के तीनों अंगों के लिए अग्निपथ योजना से की जाएगी भर्ती।

अग्निवीरों को तीन सेवाओं में जोखिम और कठिनाई भत्ते के साथ एक आकर्षक कस्टमाइज्ड मासिक पैकेज दिया जाएगा। चार साल की सेवा अवधि पूरी होने पर, अग्निवीरों को एकमुश्त श्सेवा निधिश पैकेज का भुगतान किया जाएगा। सेवा निधि राशि आयकर से मुक्त होगी। अग्निपथ स्कीम के तहत पहले साल युवाओं को ३० हजार रूपए प्रति माह मिलेंगे, जिसमें से लगभग ६००० रूपए उनकी मासिक आय से काट ली जाएगी और उसे उनके बचत खाते में जमा किया जाएगा। इसके बाद उतना ही हिस्सा सेना भी उनकी सेविंग में मिलाएगी। प्रत्येक साल सैलरी बढ़ने के साथ-साथ बचत खाते में जमा की जाने वाली रकम भी बढ़ेगी। साथ ही ४ साल बाद जब ये युवा सेना को छोड़ेंगे, तब उन्हें लगभग ११,७०,००० सेवा निधि के रूप में दिए जाएँगे। अग्निवीरों का वेतन पैकेज प्रथम वर्ष का पैकेज ४.७६ लाख रुपये और अंतिम वर्ष का पैकेज ६.६२ लाख रुपये होगा।

अग्निवीरों को सेना की तरफ से ऐसे युवाओं एक विशेष सर्टिफिकेट भी दिया जाएगा जिसकी वजह से उन्हें विभिन्न पदों पर नौकरी पाने में सहायता मिलेगी। विभिन्न राज्यों ने अग्निवीरों को सेवाओं में प्राथमिकता देने की बात भी कही है। खास बात ये है कि इन सब के अलावा अग्निवीरों का ४८ लाख रुपए का गैर-अंशदाई जीवन बीमा भी होगा।

अग्निपथ योजना के तहत सेना में भर्ती होने वाले युवाओं का ४८ लाख रुपयों का गैर-अंशदाई जीवन बीमा किया जाएगा। वहीं यदि सेवा के दौरान किसी की मृत्यु हो जाती है, तो ४४ लाख रुपये पीड़ित परिवार को दिए जाएँगे। इन ४४ लाख रुपयों के अलावा सरकार ऐसे शहीदों के बचे हुए सेवाकाल (अधिकतम ४ साल) के वेतन का भुगतान भी करेगी। साथ ही अन्य अग्निपथ योजना के माध्यम से भर्ती हुए जवानों को मिलने वाली सेवानिधि भी, शहीद के परिवार को दी जाएगी। यदि कोई जवान सेवा के दौरान दिव्यांग हो जाता है, तो उसे उसकी दिव्यांगता के प्रतिशत के आधार पर मुआवजा दिया जाएगा। अग्निपथ योजना में बेसिक पे के साथ-साथ युवाओं को भत्ते भी दिये जाएंगे। इन भत्तों में रिस्क एंड हार्डशिप, राशन, ड्रेस और ट्रैवल एलाउंस प्रमुख भत्ते हैं। इसके अलावा सेवा निधि के तहत मिलने वाले रुपए को 'कर मुक्त' किया गया है जिससे युवाओं की आर्थिक स्थिति को भी बल मिलेगा। हालांकि अग्निवीरों को ग्रेच्युटी और पेंशन संबंधी लाभ नहीं प्राप्त होंगे। अग्निपथ सेना भर्ती प्रक्रिया सेना के आधिकारिक वेबसाइट joinindianarmy.nic.in पर जान सकते हैं।

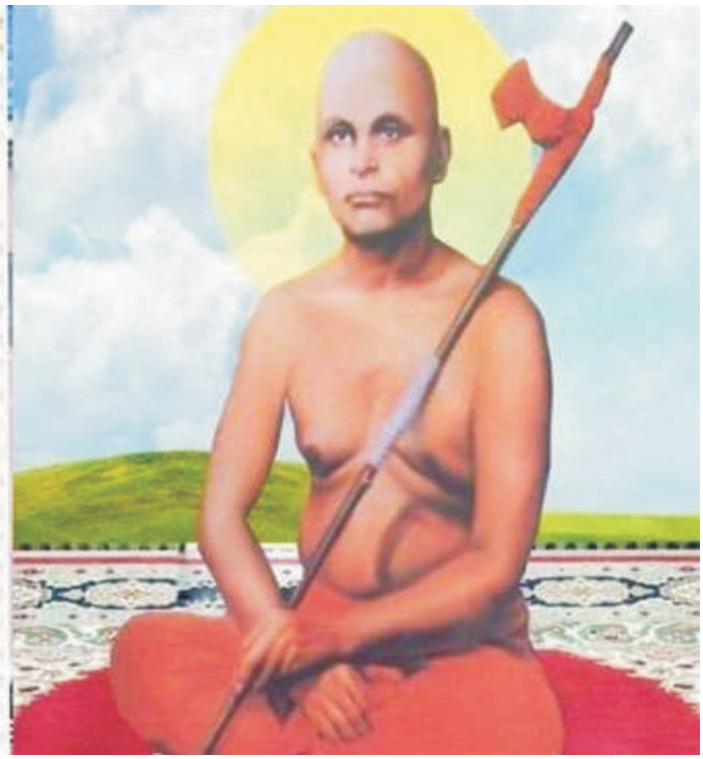

# आखिर क्यों पुनः प्रासंगिक हो चुके हैं स्वामी सहजानंद सरस्वती के जीवन आदर्श?

गोपाल जी राय

देश में किसान आंदोलन की सफलता-विफलता की एक लंबी फेहरिस्त है। लेकिन सरकारी सिस्टम से त्रस्त किसान-मजदूर भाइयों को उनकी वाजिब मांगों के प्रति जब-तब जनसमर्थन मिलता आया। इसके पीछे स्वामी जी द्वारा वक्त वक्त पर जनहितकारी मुद्दों के प्रति बरती गई दृढ़ता और उसे मिले देश व्यापी समर्थन से एक नई राह दिखाई है।

ऐसे में किसान-मजदूरों के असली और पहले सफल मसीहा स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी के जीवन आदर्शों और इस वास्ते किये गए अथक परिश्रमों की याद हर किसी को उनकी पुण्यतिथि पर आ ही जाती है। ऐसा इसलिए कि उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व से किसान समुदाय काफी लाभान्वित हुआ था और तत्कालीन सियासी धुरी का केंद्रबिंदु समझा जा रहा था। और आज एक बार फिर वही स्थिति समुपस्थित हो चुकी है।

सवाल किसानों के सुलगते हुए प्रश्नों का तो है ही, साथ ही आर्यावर्त के उस समावेशी अस्तित्व का भी है जिसे देश-विदेश की धरती से लगातार चुनौतियां मिल रही हैं। इसलिए अन्न दाता किसानों और अमूमन सैनिक बनकर सुरक्षा करने वाले उनके नौनिहालों के ऊपर एक महती जिम्मेदारी आ पड़ी है। यदि वे किसी भी किसान-मजदूर आंदोलन को स्वामी सहजानंद सरस्वती के नक्शेकदम का अनुकरण करते हुए चलाएंगे तो निःसन्देह भारत मजबूत होगा और उनका प्रभुत्व बढ़ेगा। लेकिन यदि वह उनके बताए मार्गों से भटकेंगे तो जीवन संघर्ष बढ़ेगा। इससे समकालीन सत्ता की चुनौती भी बढ़ेगी, जो उनकी मांगों के समक्ष लगभग नतमस्तक हो जाती है। कहना न होगा कि २१ वीं सदी के तीसरे दशक में भी कतिपय किसान नेता अपने क्षुद्र जातीय, साम्प्रदायिक व क्षेत्रीय सोच से आगे व्यापक राष्ट्रीय समझ को विकसित नहीं कर पा रहे हैं, जिससे किसान आंदोलन की रीति-नीति पर भी कई बार सवालिया निशान खड़े हो रहे हैं।

जबकि, बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के अंतिम वर्षों और तीसरे दशक के प्रारंभिक वर्षों में फैली महामारी प्लेग के दौरान स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने संत के सामाजिक सरोकारों को उद्वेलित करते हुए किसान-मजदूर जैसे जनसाधारण की सेवा का और शासन को सहयोग का जो अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया था, उसकी दरकार आज हर कोई महसूस कर रहा है। खासकर मोदी-योगी-नीतीश सरकार की तिकड़ी को तो उनके जैसे जननेता के व्यवहारिक सपोर्ट की आज सख्त जरूरत है।आज भारत भूमि पर भगवा सरकार है, भगवा संतों से यह सनातन भूमि आच्छादित है, लेकिन भारतीय किसान यूनियन के तहत गत वर्ष चले किसान आंदोलन की सफलता से उत्साहित जनमानस और तेजी से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था के दृष्टिगत आसेतु हिमालय में अधिकांश संतों, उनके संगठनों व आश्रमों से वह आश्वस्ति भाव निकलनी चाहिए, जिससे निज समस्या व जनसुविधाओं की कमी से जूझ रहे लोगों को कुछ राहत मिल सके।

कहते हैं कि वर्तमान में ही इतिहास गढ़ा जाता है। लेकिन यह कैसी विडंबना है कि समकालीन वर्तमान अपने धवल अतीत को पुनः गढ़ पाने में असहाय प्रतीत होता दिखाई दे रहा है। यह कौन नहीं जानता कि अमूमन इतिहास खुद को दुहराता है, लेकिन स्वामी सहजानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व और कृतित्व अब तक अपवाद स्वरूप है। आगे क्या होगा भविष्य के गर्त में है, पर वर्तमान को उनकी याद सताती है।

भले ही उनको गुजरे जमाने हो गए, फिर भी इतिहास खुद को दुहरा नहीं पाया! जबकि लोगबाग बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं किसी समतुल्य नायक का, जो उनकी जीवनधारा बदल दे। किसानी जीवन की सूखी नदी में दखल देने वाली व्यवस्था की रेत और छाड़न को किसी अग्रगामी चिंतनधारा से ऐसे लबालब भर दे कि पूंजीवाद और साम्यवाद के तटबंध बौने पड़ जाएं, समाजवादी उमड़ती दरिया और दरियादिली देख।

आप मानें या नहीं, लेकिन भारतीय राजनीति में जब भी किसानों की चर्चा होती है तो उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार संगठित करने वाले दंडी स्वामी 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती' की याद बरबस आ जाती है। यदि यह कहा जाए कि स्वामी जी किसानों के पहले और अंतिम अखिल भारतीय नेता थे तो गलत नहीं होगा।

दरअसल, वो पहले ऐसे किसान नेता थे जिन्होंने किसानों के सुलगते हुए सवालों को स्वर तो दिया, लेकिन उसके आधार पर कभी खुद को विधान सभा या संसद में भेजने की सियासी भीख आमलोगों से कभी नहीं मांगी। इसलिए वो अद्वितीय हैं और अग्रगण्य भी। समकालीन किसान नेताओं का जब सत्ता पक्ष या विपक्ष से संसर्ग स्थापित होता दिखाई देता है तो यही आशंका बलवती होती है कि कहीं ये लोग भी कृषक व कृषक मजदूरों के हितों से सौदेबाजी नहीं कर लें।

क्योंकि उत्तर भारत के किसान नेता चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की सफलता से कृषक समाज चाहे जितना उत्साहित हुआ हो, लेकिन बाद के वर्षों में किसानों के

वाजिब मुद्दों से भारतीय किसान यूनियन का भटकाव और उसके हुए कई फाड़ के बाद भाकियू की असली धारा द्वारा देश विरोधी तत्वों को भी अपने साथ कर लिए जाने से उनकी लोकप्रियता चाहे जितनी भी बढ़ी हो, लेकिन राष्ट्रीय एकता व अखंडता के प्रति चिंतित भारतीय समाज में उनके इरादों के प्रति शक भी बढ़ा है, जो किसान आंदोलन की तात्कालिक सफलता के बावजूद एक निराशा भाव तो पैदा करता ही है।

खासकर तब जब भारतीय किसानों की दशा और दिशा को लेकर हमारी संसद और विधान मंडल गम्भीर नहीं हैं। त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाएं भी अपने मूल उद्देश्यों से भटक चुकी हैं। ये तमाम संस्थाएं जनविरोधी पूंजीपतियों के हाथों की 'कठपुतली' मात्र बनी हुई हैं। ये बातें तो किसानों की करती हैं, लेकिन इनके अधिकतर फैसले किसान विरोधी ही होते हैं। सम्भावित किसान विद्रोह से अपनी खाल बचाने के लिए इनलोगों ने किसानों को जाति-धर्म-भाषा-क्षेत्र में इस कदर बांट रखा है कि वो अपने मूल एजेंडे से ही भटक चुके हैं। इसलिए उनकी आर्थिक बदहाली भी बढ़ी है। सच कहा जाए तो जबसे किसानों में आत्महत्या का प्रचलन बढ़ा है, तबसे स्थिति ज्यादा जटिल और विभत्स हो चुकी है। इसलिए स्वामी सहजानन्द सरस्वती की याद हर किसी को बार बार आती है। किसान आंदोलन के साधन और सुचिता के बारे में स्वामी जी हमेशा सतर्क रहते थे।वैसे तो स्वामी जी का सियासी कद देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के समतुल्य है। लेकिन उन्हें मृत्यु के उपरांत भारत रत्न से नवाजे जाने की जरूरत नहीं समझी गई। शायद इसलिए कि किसानों की आवाज जन्म-जन्मांतर तक दबी रहे। वह उनके नाम पर भी आगे अंतस ऊर्जा नहीं प्राप्त कर सके। इस बात में कोई दो राय नहीं कि भारत में संगठित किसान आंदोलन को खड़ा करने का जैसा श्रेय स्वामी सहजानंद सरस्वती जी को मिला, बाद में उसका हकदार कोई दूसरा नेता नहीं बन सका।

ऐसा इसलिए कि सेवा और त्याग स्वामी जी का मूलमंत्र था। राष्ट्रीयता और मानवता के प्रति वह पूरी तरह से समर्पित थे। व्यवस्था से भ्रष्टाचार हटाने के लिए वह शतप्रतिशत आमादा दिखे। अब कोई भी इस मूलमंत्र को नहीं अपना पायेगा, क्योंकि कृषक समाज की प्राथमिकता बदल गई है।

आज किसानों के एक बड़े वर्ग के लिए आरक्षण जरूरी है, लहलीपहप वाली योजनाएं पसंद हैं, जबकि कृषि अर्थव्यवस्था को हतोत्साहित करने वाले और किसानों का परोक्ष शोषण करने वाले कतिपय कानूनों का समग्र विरोध नहीं। यही वजह है कि खेतों को बिजली, बीज, खाद, पानी, मजदूरी और उचित समर्थन मूल्य दिए जाने के मामलों में निरन्तर लापरवाही दिखा रही सरकारों का कोई ठोस विरोध आजतक नहीं हो पाया है।

निकट भविष्य में होगा भी नहीं, क्योंकि अब नेतृत्व के बिक जाने का प्रचलन बढ़ा है! किसानों के घर अब डहक्टर, इंजीनियर व अधिकारी आदि पैदा नहीं हो रहे। यह और भी चिंता की बात है। सच कहा जाए तो मनरेगा ने 'गंवई हरामखोरी' को ऐसा बढ़ाया है कि कृषि मजदूरों का मन भी अपने पेशे से उचट चुका है जिससे शिक्षित किसानों के किसानी कार्य बहुत प्रभावित हो रहे हैं। मोदी सरकार द्वारा गत वर्षों में लाए गए तीन कृषि कानूनों के विरोध के पीछे भी कुछ यही वजह है, लेकिन विरोध का तरीका बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय वाला नहीं है।

बावजूद इसके, इन ज्वलन्त सवालों को स्वर देने वाला कोई मजबूत राष्ट्रीय नेता नहीं दिखता, बल्कि किसी अवसरवादी गठजोड़ की झलक जरूर मिलती है। भाकियू नेता राकेश टिकैत के तेवर कुछ उम्मीद जरूर बंधाते हैं, लेकिन उत्तर भारत के दायरे से आगे बढ़कर पूर्वी भारत, पश्चिमी भारत, मध्य भारत और दक्षिणी भारत के किसानों के बीच उनकी पहुंच अत्यल्प है, जिससे उनका आंदोलन सफल होकर भी परिपूर्ण नहीं समझा जा रहा है। क्योंकि उनके मंच पर भी भारत के ५ महत्वपूर्ण भागों में से ४ भाग नदारत हैं।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि मौजूदा दौर में एक दो संगठन नहीं, बल्कि दो-तीन सौ संगठन मिलकर किसान हित की बात को आगे बढ़ा रहे हैं या फिर अपनी सियासी रोटियां किसी अन्य दल के लिए सेंक रहे हैं, यह बात किसी की भी समझ में नहीं आती। इसलिए कहा जाता है कि स्वामी जी के बाद कोई ऐसा किसान नेता पैदा नहीं हुआ जो चुनावी राजनीति से दूर रहकर सिर्फ किसानों की ही बात करे। उनके भावी हितों-जरूरतों की ही चर्चा परिचर्चा करे और उन्हें आगे बढ़ाए।

कहने को तो आज प्रत्येक राजनीतिक दल में किसान संगठन हैं लेकिन किसान हित में उनकी भूमिका अल्प या फिर नगण्य है। इस स्थिति को बदले बिना कोई राष्ट्रीय किसान नेता पैदा होना सम्भव ही नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दण्डी संन्यासी होने के बावजूद उन्होंने 'रोटी को भगवान' कहा और 'किसानों को देवता' से भी बढ़कर बताया। इससे किसानों को भी अपनी महत्ता का भी पता चला। किसानों के प्रति स्वामी जी इतने संवेदनशील थे कि तत्कालीन असह्य परिस्थितियों में उन्होंने स्पष्ट नारा दिया कि "जो अन्न वस्त्र उपजाएगा, अब वो कानून बनाएगा। ये भारतवर्ष उसी का है, अब शासन वही चलाएगा।"

निःसन्देह, स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने आजादी कम और गुलामी ज्यादा देखी थी। इसलिए काले अंग्रेजों से ज्यादा गोरे अंग्रेजों के खिलाफ मुखर रहे। समझा जाता है कि किसानों से मालगुजारी वसूलने की प्रक्रिया में जब उन्होंने सरकारी मुलाजिमों का आतंक और असभ्यता देखी तो किसानों की दबी आवाज को स्वर देते हुए कहा कि "मालगुजारी अब नहीं भरेंगे, लट्ठ हमारा जिंदाबाद।" इतिहास साक्षी है कि किसानों के बीच यह नारा काफी लोकप्रिय रहा और ब्रिटिश सल्तनत की चूलें हिलाने में अधिक काम आया।

स्वामीजी का परिचय संक्षिप्त है, लेकिन व्यक्तित्व काफी विराट। हालांकि परवर्ती जातिवादी किसान नेताओं और उनके दलों ने उनके व्यक्तित्व को वह मान-सम्मान नहीं दिया, जिसके वे असली हकदार हैं। यही वजह है कि किसान आंदोलन हमेशा लीक से भटक गया। समाजवादी और वामपंथी नेता इतने निखट्टू निकले की, उनलोगों ने किसान आंदोलन का गला ही घोंट किया। उनके बाद चौधरी चरण सिंह और महेंद्र टिकैत किसान नेता तो हुए, लेकिन किसी को अखिल भारतीय पहचान नहीं मिली, क्योंकि इनकी राष्ट्रीय पकड़ कभी विकसित ही नहीं हो पाई। दोनों पश्चिमी उत्तरप्रदेश में ही सिमट कर रह गए। भाकियू नेता राकेश टिकैत की स्थिति उनसे भी कमतर है, क्योंकि देश विरोधी ताकतों की भाषा बोलने-बोलवाने के आरोप उनपर लगे हुए हैं। किसान हित में एक उल्लेखनीय उपलब्धि उनके खाते में है, लेकिन अन्य उपलब्धियों को हासिल करने वाली बेचैनी उनमें दिखाई नहीं दे रही है।

;लेखक वरिष्ठ पत्रकार और स्तम्भकार हैं और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय अंतर्गत बीओसी (डीएवीपी) के सहायक निदेशक हैं।)

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज
यूट्यूब चैनल
हेतु आवश्यकता
है प्रतिनिधियों की

# द्रोपदी मुर्मू होंगी भारत की अगली राष्ट्रप्रमुख?

# द्रौपदी मुर्मू पर भाजपा के बड़े राजनीतिक संकेत

अशोक मधुप

झारखंड की पूर्व राज्यपाल और आदिवासी द्रौपदी मुर्मू को भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन ने राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार बनाया है।

ओडिशा की रहने वालीं द्रौपदी मुर्मू इससे पहले झारखंड की पहली महिला आदिवासी राज्यपाल भी रह चुकी हैं। उनकी उम्र ६४ साल है। यह पहला मौका है जब देश को आदिवासी महिला राष्ट्रपति मिलने जा रही हैं। इससे पहले अब तक देश में कोई आदिवासी राष्ट्रपति नहीं रहा।

झारखंड की पूर्व राज्यपाल और आदिवासी द्रौपदी मुर्मू को भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन ने राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार बनाया है। भाजपा की संसदीय दल की बैठक में द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाने की घोषणा कर दी गई। इस घोषणा के बाद इन कयासों को विराम लग गया कि देश के मुस्लिमों और मुस्लिम देशों को प्रसन्न करने के लिए भाजपा राष्ट्रीय विचारधारा वाले किसी मुस्लिम को राष्ट्रपति बना सकती है।

उल्लेखनीय है कि भाजपा की पूर्व राष्ट्रीय प्रवक्ता नुपूर शर्मा की मुहम्मद साहब के बारे में की गयी विवादास्पद टिप्पणी के बाद देश के मुस्लिम ही नाराज नहीं थे, अपितु इस बयान को लेकर कई मुस्लिम देश भी अपनी नाराजगी जाहिर कर चुके थे। कुछ स्थानों पर भारतीय सामानों का बहिष्कार भी शुरू हुआ था। इसे लेकर और देश में उत्पन्न हालात के मद्देनजर अखबारी और राजनैतिक खेमों में ये कयास लगाए जा रहे थे, कि भाजपा किसी राष्ट्रवादी मुस्लिम को राष्ट्रपति बना सकती है। इसके लिए केरल के राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान और केंद्र सरकार में अल्पसंख्यक मामलों के विभाग के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी के नाम की जोर-शोर से चर्चा थी। मुख्तार अब्बास नकवी का राज्यसभा कार्यकाल खत्म हो रहा है। ऐसे में हाल में हुए राज्यसभा के चुनाव में उन्हें भाजपा द्वारा टिकट न दिए जाने से इन चर्चाओं को बल मिल रहा था। अब झारखंड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू के नाम की घोषणा होने से इन कयासों को विराम लग गया। स्पष्ट हो गया कि भाजपा को इस विरोध की ज्यादा चिंता नहीं है। उसका लक्ष्य आगामी तीन राज्यों के विधानसभा और २०२४ का लोकसभा चुनाव है।

ओडिशा की रहने वालीं द्रौपदी मुर्मू इससे पहले झारखंड की पहली महिला आदिवासी राज्यपाल भी रह चुकी हैं। उनकी उम्र ६४ साल है। यह पहला मौका है जब देश को आदिवासी महिला राष्ट्रपति मिलने जा रही हैं। इससे पहले अब तक देश में कोई आदिवासी राष्ट्रपति नहीं रहा। इस लिहाज से मुर्मू आदिवासी और महिला, दोनों वर्ग में फिट बैठती हैं। उनके नाम के ऐलान के साथ ही राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि भाजपा का यह निर्णय यह बताता है कि गुजरात, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनावों को देखते हुए भाजपा का फोकस इन प्रदेशों के आदिवासी समुदाय पर है। माना जा रहा है कि पार्टी ने द्रोपदी मुर्मू को टिकट देकर आदिवासी वोटों को साधने का प्रयास किया है। वे महिला हैं। भाजपा पहले ही महिला वोट पर फोकस किए हुए है। महिला मतदाता भाजपा की बड़ी ताकत हैं। इन महिला वोटर को अपने से जोड़े रखने के लिए यह ज्यादा महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का भले ही यह कहना है कि भाजपा गुजरात, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के वोटरों को रिझाने के लिए ऐसा कर रही है किंतु यह भी सच है कि उसका यह निर्णय २०२४ में होने वाले लोकसभा चुनाव में भी उसे लाभ पंहुचा सकता है। जहां तक मुख्तार अब्बास नकवी की बात है तो उनको हाल में ना राज्यसभा का टिकट मिला, ना ही रामपुर लोकसभा उपचुनाव लड़ाने के लिए भाजपा ने उन्हें टिकट दिया। इससे इन बातों को बल मिलता है कि भाजपा आगे चलकर उन्हें उपराष्ट्रपति बनाने का इरादा रखती है। हालाकि ये राजनीति है। यह पलदृपल बदलती रहती है। उपराष्ट्रपति चुनाव के समय क्या हालात होंगे? यह अभी नहीं कहा जा सकता।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)


## महत्वपूर्ण है शोधादर्श का यह विशेषांक

पीड़ा सहते-सहते जो पीड़ा का गायक बन गया। ग़रीबी में दिन गुज़ारे मगर कभी हाथ न फैलाया। जिसने फिल्म जगत को एक अमर गीत देने के बाद फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया। जिसने राजीव गांधी और संजय गांधी को हिंदी बोलना सिखाया। जिसने अपराध जगत की पत्रकारिता की और कितने ही मामले उजागर किए मगर न कभी बिका और न कभी हटा। हार मानना तो इस महान व्यक्ति ने सीखा ही नहीं था। वह यारों का यार था और कष्टों के बावजूद मस्त था। वो किसी के लिए कुछ भी रहा हो मगर एक बेमिसाल था।

अगर आप भी इस महान व्यक्ति के बारे में जानना चाहते हैं तो पढ़ें शोधादर्श का यह विशेषांक

# स्वामी रामानन्द के महान शिष्य 'सन्त रैदास'

सन्त साहित्यान्तर्गत ही अनेक उल्लेख ऐसे मिलते हैं जिनके आधार पर सन्त रैदास के जीवन-वृत्त एवं जीवन-काल सम्बद्ध कुछ अनुमान किए जा सकते हैं।

भक्तमाल (बड़ेई रैदास हरिदासम सौं प्रीतिकरी पिता न सुहाई। दई ठौर पिछावर हीं।- भक्तमाल) एवं उसकी प्रियादास कृत टीका 'भक्ति रसबोधिनी' (हुतो धनमाल कन दियो न हाल, तिया पति सुखजाल अहो, किये जब न्यार दी। गाँठ पददासी कहूँ बात न प्रकासी, ल्यावे खाल करे जूती साधु-संत को संभार री।- भक्ति रसबोधिनी, टीका) के उल्लेखानुसार सन्त रैदा के माता-पिता जाति के चमार और घर के सम्पन्न थे। इनके हरि-भक्ति में जीन रहने के कारण माता-पिता ने रुष्ट होकर इनको और इनकी पत्नी को खाली हाथ घर से निकाल दिया, फलतः ये घर के पीछे ही झोपड़ी बनाकर उसी में रहते हुए साधु-सेवा करने लगे। आर्थिक अभाव से इनका जीवन बड़ा कष्टमय था। इनकी रचनाओं के अन्तर्गत ही एक पद (हम अपराधी नीच घर जनमै कुटुम्ब लोग करै हाँसी रे।- पद ६०, वि. सं. ११७१ प्रति) ऐसा मिलता है जिसकी अभिव्यंजना उक्त कथन का समर्थन करती है। उक्त दोनों ग्रन्थों में सन्त रैदास के माता-पिता का निवास-स्थान और नामादि का किंचित् उल्लेख भी नहीं मिलता।

इनकी जन्मतिथि से सम्बद्ध कोई प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती तथापि परम्परा से मान्य है कि माघी पूर्णिमा को इनका जन्म हुआ। 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्राप्त दो पदों के आधार पर मान्य है कि इनका परिवार वाराणसी के आसपास रहता था। अतः इनका जन्म भी वाराणसी के आसपास ही होना चाहिए। जिन पदों के आधार उक्त मान्यता को स्वीकार किया जाता है उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है। साथ ही, उक्त दोनों पदों की अन्तिम दो पंक्तियों में इतना अधिक साम्य है कि वे परस्पर एक-दूसरे की पाठ-भेद ही प्रतीत होती हैं। (१. क- मेरी जाति कुट बाँटलाँ ढोर ढोवत नित ही बनारसी आसापासा। अब विप्र प्रधान सहित करहीं डंडउति तेरे सरणाई रविदास दासा।। ख- जाकै कुटंब सब ढोर ढोवत फिरहिं अजहुँ बनारसी आसापासा। आचार सहित विप्र करहिं डंडउति तिन तनै रविदासन दासा।।- गुरु ग्रन्थ साहब) हस्तलिखित संग्रह ग्रन्थ (अनेके अधम जीव नांऊ गुण पतित पावन भये परसिसारं। भगत रैदास रंरकार गुण गावता, सन्त साधु भये सहज पारं।। - पद सं. ३६, वि. सं. १७७१ प्रति) (वि. सं. १७७१) में भी एक पद ऐसा मिलता है जिसमें स्पष्टतः जाति का उल्लेख हुआ है परन्तु उसमें भी जन्म स्थान अथवा परिवार के निवास-स्थान का कोई उल्लेख नहीं है। 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्राप्त उक्त दोनो पदों की अभिव्यंजना और हस्तप्रति में प्राप्त अभिव्यंजना अहमु-प्रधान है जबकि उक्त हस्तप्रति में प्राप्त पदाभिव्यंजना दैनरू भक्ति की सूचक है। अस्तु, रैदास के जन्म-स्थान का निर्णय करने हेतु 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्राप्त पद अपर्याप्त प्रमाण है। 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्राप्त जाति और निवास-स्थान द्योतक उक्त दोनों उद्धरणों से स्पष्ट है कि इनके रचयिता की जाति 'कुठ बाँठलाँ' थी और उनका परिवार वाराणसी के आस-पास रहते हुए ढोर ढोया करता था। ब्रिग्स ने अपनी पुस्तक 'दि चमार्सा' में चर्मकारों की अनेक जाति एवं अन्तर्जातियों का उनके भेद-प्रभेद के साथ विस्तृत वर्णन किया है। इस वर्णन के अन्तर्गत 'कुठ बाँठलाँ' नाम किसी अन्तर्जाति या उसके भेद-प्रभेद का उल्लेख नहीं है तथापि 'कुटवाँ' अथवा 'कैटवा' नाम अन्तर्जाति का वर्णन है। चमड़ा काटना ही इस जाति का मुख्य व्यवसाय है। बहुत सम्भव है कि उक्त दोनों पदों में प्रयुक्त 'कुण्ठ बाँठलाँ' शब्द 'कुटवाँ' अथवा 'कटवाँ' शब्द का ही परिवर्तित रूप हो।

चर्मकारों की अन्तर्जातियों में भी ढोर ढोनेवाली जाति ही निम्नतम समझी जाती है। मरे जानवरों की खाल साफ कर उनको जूतों बनाने वाली जाति के हाथ बेचना ही इनका मुख्य व्यापार है। अपने व्यवसाय के कारण इस जाति के लोग गाँवों और शहरों की सीमा के आसपास ही बसते हैं। जूते बनाने वाली जाति चर्मकारों में श्रेष्ठ मानी जाती है; ये लोग ढोर ढोरेवाली जाति का छुआ पानी भी नहीं पीते। (३. विग्स, दि चमार्स : द रिलिजस लाइफ ऑफ इण्डिया, पृ० ३३५।)

चर्मकारों की अनेक अन्तर्जातियों में एक 'चमकह्या' नामक जाति भी है। ये मुख्यतः फतेहुपर, रायबरेली, सुल्तानुपर, फैजाबाद और बस्ती में पाये जाते हैं। इनकी संख्या बहुत कम है। यह भी कहा जाता है कि सन्त रैदास इसी जाति में हुआ था। (१. दि चमार्स, पृ० २६) उपलब्ध रचनाओं में 'चरमटा', 'गाँठि न जानहीं पनही' जैसी उक्ति भी मिलती है। चर्मकारों की एक अन्तर्जाति 'अहरवर' (वही, पृ० २५ और ३०) कहलाती है। ये अधिकतर बुन्देलखण्ड, फरूखादाबाद, हरदोई और बुलन्दशहर में पाये जाते हैं। कहीं-कहीं ये लोग चमड़े का व्यापार न कर खेती ही करते हैं। इस जाति के लोग भी सन्त रैदास के वंशज होने का दावा करते हैं। भक्तों एवं सन्तों द्वारा रचित साहित्य में प्राप्त उद्धरणों एवं सन्त रैदास की उपलब्ध रचनाओं की अभिव्यंजना के आधार पर प्रायः निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि उनका जन्म चर्मकारों की जूते गाँठने वाली अन्तर्जाति में ही हुआ था। अतः यह भी स्पष्ट है कि गुरु ग्रन्थ साहब मे प्राप्त पदों के रचयिता चर्मकारों की 'कुठ बांठला' जाति में जन्म लेने वाले सन्त रविदास प्रसिद्ध सन्त रैदास से भिन्न कोई साधु-महात्मा रहे होंगे। सन्त रैदास की गणना स्वामी रामानन्द के बारह शिष्यों में की जाती है। अतः मान्य है कि ये सभी उनके संग रहते हुए उनकी विविध यात्राओं में सम्मिलित होते थे। प्राप्त उद्धरणों के आधार पर स्वामी रामानन्द एवं सन्त रैदास का समकालीन होना भी सम्भाव्य नहीं प्रतीत होता। महाराष्ट्र और राजस्थान में सन्त रैदास के अनेक अनुयायी पाये जाते हैं, अतः अनुमान होता है कि उन सुदूर स्थानों तक यात्राएँ (इनके प्राप्त पदों की भाषा में भिन्नता होने एवं इनके अनुयायियों के अनेक प्रदेश में पाये जाने के कारण यह अनुमान करना अनुचित नहीं जान पड़ता कि जहाँ कहीं भी उनका जन्म हुआ हो, इन्होने भिन्न-भिन्न स्थानों में पर्यटन अवश्य ही किया था। -उदासी सन्त रैदास, परशुराम चतुर्वेदी, 'हिन्दुस्तानी', पृ० ४१) की होंगी। उपलब्ध रचानाओं पर भी विभिन्न प्रान्तीय बोलियों का स्पष्ट प्रभाव है। रानी झाली और मेड़तणी मीरा से सम्बद्ध

जनश्रुतियों के आधार पर भी इनका राजस्थान जाना प्रसिद्ध है। वहाँ एक छतरी भी हे जो सन्त रैदास की छतरी कहलाती है। सन्त रैदास के जीवन-काल का निर्णय तीन विभिन्न सूत्रों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है। अन्य सन्तों की रचनाओं में प्राप्त उल्लेख, सन्त रैदास की पदावली में प्राप्त अन्य सन्तों के नामोल्लेख और मिर्जापुर स्थित 'साधों' सम्प्रदाय की मान्यताएँ।

१. अन्य सन्तों की वाणियों में सन्त रैदास सम्बन्धी उल्लेख

गुरु ग्रन्थ साहब में प्राप्त सन्त धन्ना की रचना माने गए एक पद (१. रविदास ढूवंता ढोरनी तिन्ही तिआगी माइगा। परगटु होआ साध संगी हरि दरसन पाइआ।। - गुरु ग्रन्थ साहब, पृ० ८८७) में अनेक सन्तों के नामोल्लेख उनकी विशिष्टताओं के वर्णन के साथ किया गया है। उनमें 'रविदास ढूवंता ढोरनी' जैसा उल्लेख भी प्राप्त है। पद में कहा जा रहा कि नामदेवी छीपी, कबीर जुलाहा, सेना नाई और रविदास चमार जो ढोर ढोते थे, का जीवन हरि भक्ति के कारण सफल हो गया। उनके हृदय में प्रभु का वास हुआ और वे भक्तों में प्रसिद्ध हो गए। उनकी प्रशस्ति से जाटरो (जाट का पुत्र) को प्रेरणा मिली और वह 'उठि भक्ति लागा' सद्भाव से उसको 'मिले प्रतखि गुंसाई'। पद में उल्लिखित सन्त रविदास ढोर ढोते थे। 'गुरु ग्रन्थ साहब' मे ही दो पद ऐसे मिलते हैं जिनमें किसी सन्त रविदास जो जाति के कुठ बाँठला और जिनका परिवार वाराणसी के आसपास रहते हुए ढोर ढोया करता था, की चर्चा मिलती है। अद्यावधि उक्त पदों की गणना सन्त रैदास की रचनाओं के अन्तर्गत ही की जाती रही है। वे दोनो पद उपलब्ध हस्तलिखित संग्रह ग्रन्थों में प्राप्त रैदास के पदों के अन्तर्गत प्राप्त नहीं होते। अतः इनकी प्रामाणिकता सहज सन्दिग्ध है। साथ ही, हस्तलिखित संग्रहों से प्राप्त सन्त रैदास की सम्पूर्ण रचनाओं में 'रैदास चमारा', 'रैदास खलास चमारा', 'भणै रैदास' जैसे पदों से ही रचयिता का नामोल्लेख हुआ है। सन्त-गाथाओं से भी उनका जूता गाँठना ही व्यक्त होता है। अतः बहुत सम्भव है कि उक्त दोनो पदों में वर्णित 'रविदास' प्रसिद्ध सन्त रैदास से भिन्न कोई सन्त-महात्मा रहे हों। स्वयं धन्ना जाट का परिचय अथवा जीवन-काल अद्यावधि सर्वथा अज्ञात है। नाभादास और अनन्तादास ने उनकी गणना स्वामी रामानन्द के बारह शिष्यों के अन्तर्गत की है।

दादू दयाल ने भी सन्त रैदास का नामोल्लेख बड़ी श्रद्धा के साथ किया है। (२. (क) नामदेव कबीर जुलाहा जन रैदास तिरै- दादू दयाल, परशुराम चतुर्वेदी, पृ. ३४६, राग नट, बाराइण पद ५, (ख) इति रस लागे नामदे रे पीपा अर रैदास- वही, पृ. ३२८, (ग) कहाँ लीन सुखदेव था कहाँ कहाँ पीपा रैदास, दादू साँचाँ क्यूँ छिपै सकल लोक प्रकाश- वही, पृ. २६) इन पदाभिव्यंजानाओं से यह प्रतीत होता है कि इन पदों के रचना-काल तक इनमें उल्लिखित सभी सन्त-महात्मा परलोकगत हो चुके थे।

हित हरिराम व्यास ने भी अपनी रचना में अन्य अनेक सन्तों के साथ ही सन्त रैदास का भी नामोल्लेख किया है। ((क) इतना है सब कुटुम हमारो, सेना धना नामा पीपा कबीर रैदास चमारो- नागरीदास ग्रन्थावली, डॉ. किशोरीलाल गुप्त, पृ. ३८०, (ख) नामा सेन धना रैदास दीनता करी कबीर, तिनकी बात श्रवनि सुख बरसे नीर। - वही, पृ. ३७८) इन पदाभिव्यंजनाओं से उक्त सन्तों के प्रति उनकी विशेष ममत्वपूर्ण भावना स्पष्ट हो उठती है। साथ ही, यह भी स्पष्ट हो जाता है कि इन पदों के रचना-काल तक इनमें उल्लिखित सन्त-महात्मा परलोकगत हो चुके थे।

सन्त-साहित्यान्तर्गत प्राप्त उक्त तीनों उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि सन्त रैदास इन तीनों सन्त धन्ना, दादू दयाल और हित हरिराम व्यास के पूर्ववती थे।

२. सन्त रैदास की रचनाओं में प्राप्त अन्य सन्तों के नामोल्लेख

सन्त रैदास की रचना माने जाने वाले कुछ पदों में त्रिलोचन, नामदेव, कबीर, सधना और सेन जैसे प्रसिद्ध सन्तों के नाम मिलते हैं। ऐसे अधिकांश पद ((क) नामदेव कबीर तिलोचनु सधना सेनु तिरै। - गुरु ग्रन्थ साहब, पृ. ११०६, (ख) जाके बाप वैसी करी पूत ऐसी करी तिहु रे लोक परसिध कबीरां। (ग) हरि के नाम कबीरा उजागर, जनम-जनम के काटे कागर, निमत नामदेउ दूधु पीआइआ तउ जग जनम संकट नहीं आइआ।- वही, पृ. ४८७।) गुरु ग्रन्थ साहब और एक पद ((क) निरगुण का गुण देखो आई देहि सहित कबीर सिधाई। - सेवादासजी की वाणी, हस्तप्रति- वि. सं. १८५६ की, (ख) नामदेव कहिए जाति कै औछ जाको जस गावै लोक भगति हेत भगता के चले अंकमाल ले बीठल मिले।- वही) 'रैदास जी के पद' शीर्षक हस्तलिखित संग्रह-ग्रन्थ में प्राप्त होते हैं। उक्त पदों में से कोई भी पद वि. सं. १७७१ की हस्तप्रति में नहीं मिलता। उक्त पदों में कथित ये सन्त-महात्मा विशेष प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित रहे हैं। आज भी इनको बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। तथापि इनके जीवन-काल एवं जीवन-वृत्त का अधिकांश अनुमानाश्रित ही है। आश्चर्यजनक तथ्य है कि इनमें से प्रत्येक की जाति का ज्ञान निर्विवाद है। ये जाति के कसाई और एक उच्चकोटि के सन्त थे। इनका जीवन-काल एवं जीवन-वृत्त सर्वथा अज्ञात है। अनुमान किया जाता है कि ये वि.सं. १४वी. शताब्दी (१. सम्भवतः ये नामदेव के समय में वि. सं. १४वीं. शताब्दी के द्वितीयार्द्ध में विद्यमान थे।- हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास, भाग ४, पृ. १०६, ना. प्र. सभा, वाराणसी) के उत्तरार्द्ध में विद्यमान थे। यह भी माना जाता है कि इनकी दक्षिण के सन्त नामदेव और ज्ञानदेव से भेंट हुई थी।

कबीर साहब के पूर्ववर्ती सन्तों में सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम नामदेव का ही आता है। इनका जन्म (२. इनका वि.सं. १३२७ (शाके ११९२) में सतारा जिले के नरसी बमनी नाम गाँव में हुआ। - 'हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास', भाग ४, पृ. १०६, ना. प्र. सभा, वाराणसी) वि. सं. १३२४ और मृत्यु वि. सं. १४०७ में मान्य है। ये जाति के छीपी थे। कपड़ा छापना इनका काम था। इन्होने उत्तर भारत के अनेक स्थानों की यात्रा की थी और जीवन के अन्तिम समय में पंजाब जाकर वहीं बस गये थे और वहीं उनकी मृत्यु थी हुई।

सन्त सेन का समय चौदहवीं विक्रमी शताब्दी के उत्तरार्द्ध और पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में समझा जाता है।- 'उत्तर भारत की सन्त परम्परा', प्र. २३३।) और जीवन-काल अज्ञात है, तथापि मान्य है कि स्वामी रामानन्द के समकालीन थे। ये जाति के दर्जी थे।

सन्त त्रिलोचन का जन्म (त्रिलोचन का जन्म वि. सं. १३२४ में होना प्रसिद्ध है।- 'हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास', भाग ४, पृ० ११७) वि. सं. १३३४ में प्रसिद्ध में प्रसिद्ध है। ये जाति के वैश्य और महाराष्ट्र के निवासी थे। नाभादास कृत 'भक्तमाल' के लेखानुसार उक्त दोनों ही सन्त प्रसिद्ध सन्त ज्ञानदेव के शिष्य थे।

सन्त कबीर के भी जन्म-काल और जीवन से सम्बद्ध मान्यताएँ प्रायः अनुमानाश्रित ही हैं। इनके जीवन-काल के विषय में दो मत हैं- एक के अनुसार वि. सं. १४२५-१५०५ और दूसरे के अनुसार वि .सं. १४५५ से १५५५ पर्यन्त है। 'कबीरपंथ' में इनका जन्म ज्येष्ठ पूर्णिमा १४५५ और मृत्यु माघ शुक्ल एकादशी १५७५ मान्य (१. त्रिलोचन का जन्त वि. सं. १३२४ में होना प्रसिद्ध है। - 'हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास', भाग ४, पृ० १२६) है। प्रसिद्ध है कि इन्होने राजस्थान, गुजरात, जगन्नाथपुरी और दक्षिण तक यात्राएँ की थीं। प्रसिद्ध सन्त पीपा (२. जो कवि नाम कबीर न होते। तो लोक वेद - कलि जुग मिलि करि, भक्ति रसातलि देते। भक्ति प्रताप राखिब कान निज जन आप पठाया। नाम कबीर साँच प्रकास्या तहाँ पीपै कछु पाया।- पीपाजी की वाणी- लेखक, अगरचंद नाहटा 'संतवाणी' पत्रिका, पृ. २१) जी ने इनका नाम विशेष श्रद्धा के साथ लिया है।

सन्त साहित्यान्तर्गत अन्यान्य सन्त-महात्माओं की रचनाओं में सन्त रैदास का नामोल्लेख एवं स्वयं सन्त रैदास की रचनाओं में अन्यान्य सन्त-महात्माओं के उल्लेखों के आधार पर जो तिथियाँ प्राप्त होती हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन सन्तों के जीवन-काल की सीमाएँ वि.सं. १४वीं शताब्दी के द्वितीय चरण से प्रारम्भ होकर १६वीं शताब्दी के तृतीय चरण पर्यन्त चली आती हैं। यदि 'गुरु-ग्रन्थ साहब' और वि.सं. १८५६ की हस्तप्रति में प्राप्त पदों को भी प्रामाणिक माना जाय तो सन्त रैदास का जीवन-काल वि. सं. १५७५ पर्यन्त भी मान्य हो सकता है।

३. मिर्जापुर स्थित 'साधों' का सम्प्रदाय

(३. 'उदासी सन्त रैदास', पत्रिका 'हिन्दुस्तानी'- परशुराम चतुर्वेदी)

मान्य है कि मिर्जापुर आदि अनेक जिलों में प्रचलित 'साधों' के सम्प्रदाय की स्थापना सन्त रैदास की शिष्य-परम्परा में वीरभान द्वारा वि.सं. १६०० (ई. सं. १५४३) के लगभग की गई थी। वीरभान उदयभान के शिष्य थे, उदयभान की गणना सन्त रैदास के शिष्यों में की जाती है।

उपर्युक्त साक्ष्य के आधार पर सन्त रैदास का वि.सं. १६वीं शताब्दी के पूर्वार्ध पर्यन्त विद्यमान रहना तो निःसन्देह मान्य हो सकता है। सम्भवतः उसके बाद तक भी जीवित रहे हों। यदि इनको दीर्घजीवी माना जाये जैसा कि अनेक जनश्रुतियों से आभासित होता है कि इनका जीवन-काल वि.सं. १५वीं. शताब्दी के उत्तरार्द्ध से १६वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के बीच माना जा सकता है।

गुरु सन्त रैदास की गणना स्वामी रामानन्द के बाहर शिष्यों के अन्तर्गत की जाती है। 'रहस्यत्रयी' के टीकाकार ने स्वामी रामानन्द के शिष्यों की जा नामवली (४. 'उत्तर भारत की सन्त परम्परा'- परशुराम चतुर्वेदी) दी है उसमें एक नाम रामदास (रविदास) आता है। मान्य है कि यह रामदास (रविदास) ही प्रसिद्ध सन्त रैदास थे। सम्भवतः इस मान्यता के आधार ही 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्राप्त 'रविदास' नामांकित पदों को सन्त रैदास की रचना मान लिया गया है। इस मान्यता का कोई समुचित आधार नहीं है।

नाभादास कृत 'भक्तमाल' और 'भक्त चरितांक' (कल्याण, गोरखुपर) में भी रामदास नामक अन्य सन्तों एवं भक्तों का उल्लेख मिलता है। 'भक्त चरितांक' में वर्णित भक्त रामदास भी चर्मकार जाति के ही थे। वे दक्षिण भारत में गोदावरी के तट पर स्थित कनकावती नगरी में रहते थे। इनसे सम्बद्ध निम्नांकित कथा प्रसिद्ध सन्त दैरास से भी सम्बद्ध है। (१. 'भक्त चरितांक', कल्याण, गोरखपुर, पृ० ५६५। उक्त कथानुसार भक्त रामदास जाति के चर्मकार थे। वे दक्षिण भारत के निवासी थे। इनकी पत्नी का नाम

'मूली' था। इनको एक पुत्र था। भक्त रामदास अपना जातिकर्म करते हुए भगवन्नामोच्चारण करते रहते थे। एक बार कोई चोर चोरी के माल से मिला एक शालीग्राम इनको देकर अपना जूता गँठवा ले गया; सन्त रामदास शालीग्राम शिला पर ही अपना औजार घिसने लगे। एक दिन किसी साधु ने देख लिया और वे उस शालीग्राम को भक्त से माँग ले गये और विधिवत् उसकी पूजा करने लगे। भगवान् सन्तुष्ट न हुए और उन्होने उस साधु को स्वप्न में आदेश दिया कि वे शालीग्राम विग्रह को भक्त के पास पुनः पहुँचा दें। भक्त और भक्ति की महिला का गान करते हुए साधु ने शालीग्राम पुनः भक्त तक पहुँचा दिया।) साथ ही उनकी पत्नी का नाम भी 'मूली' माना जाता है। 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्राप्त पदों के रचयिता रविदास निश्चय ही इन भक्त रामदास से भिन्न हैं। सन्त रविदास का परिवार वाराणसी रहते हुए ढोर ढोता था। भक्त रामदास दक्षिण भारत के निवासी हैं और जूते गाँठते हैं। भक्तों एवं सन्तों से सम्बद्ध अनेक जन-श्रुतियाँ यदा-कदा कुछ परिवर्तित होकर अथवा प्रायः उसी रूप में अनेक भक्तों से सम्बद्ध हो चल निकलती हैं। इनका तात्पर्य ऐतिहासिक तथ्य में नहीं अपितु चमत्कारपूर्ण वर्णन द्वारा कथित सन्त अथवा भक्त की महिमा का प्रख्यापन करना ही होता है।

नाभादास कृत 'भक्तमाल' में भी 'रामदास' (२. (क) रामदास भक्त का वर्णन, 'भक्तमाल' नाभादास कृत, पृ. १८१, (ख) रामदास भक्त जू का वर्णन, वही, पृ. ३४) नाम के दो भक्तों के चरित्र लिखे गए हैं। इनमें से एक तो द्वारिका के पास गाँव डाकोर के निवासी थी, दूसरे सन्त रामदास के निवास-स्थान का उल्लेख नहीं है। उपर्युक्त दोनों ही कथाओं से उनमें वर्णित महात्माओं के जीवन-काल और जाति का अनुमान नहीं हो पाता। सम्भवतः इनमें से कोई 'रामदास स्वामी रामानन्द' के शिष्य रहे हों।

'भक्तमाल' की टीका 'भक्ति रसबोधिनी' (३. भक्ति रसबोधिनी, पृ. ७०-७१) बोधिनी में दी गयी कथा के अनुसार भी यही प्रतीत होता है कि स्वामी रामानन्द ने अपने एक शिष्य को चमार कुल में जन्म लेने का शाप दिया, कालान्तर में वही 'ब्रह्मचारी' सन्त रैदास रूप में जन्मा और गुरु-कृपा से पाप-मुक्त हुआ। जनश्रुतियों में भी सन्त रैदास का रैदास से भिन्न अन्य कोई नाम नहीं मिलता। 'रामदास' नाम सन्तों के वर्णन 'रामदास भक्त' अथवा 'रामदास भक्तजू का वर्णन' शीर्षक से ही किया गया है। उक्त स्थिति में 'रहस्यत्रयी' की टीका में वर्णित रामदास (रविदास) को ही सन्त रैदास मान लेने का कोई समुचित आधार प्राप्त नहीं होता।

जनश्रुतियों का कलेवर चमत्कारपूर्ण होता ही है क्योंकि ये भाव-विह्वल जनमानस के उद्गार हैं। उनमें ऐतिहासिक तथ्य नगण्य होते हुए भी उनसे व्यक्त तात्पर्य अवश्य ग्राह्य है। इनके आधार पर सन्त रैदास के चरित्र का अति भव्य चित्र मिलता है। एकनिष्ठ समर्पण, निर्लोभता और अपरिग्रह उनके विशिष्ट गुण थे। निष्काम साधु-सेवा उनका जीवन था, हरि-चरणों में उनकी स्वाभाविक प्रीति थी। ऐसे महत् संस्कार निश्चय ही किसीस महत् पूर्व-परम्परा के सूचक हैं। जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार-शुद्ध-हृदय में ही स्वाभाविक भक्ति का उदय हो सकता है। इस अर्थ में ही उनके पूर्व-जन्म में ब्राह्मण होने की कथा को स्वीकार किया जा सकता है। इन्हीं जनश्रुतियों के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि अपने समय में सन्त रैदास विशेष लोकप्रिय और विद्वत्-वर्ग से भी समादृत थे। नाभादास कृत 'भक्तमाल' में प्राप्त छप्पय की एक पंक्ति 'वर्णाश्रम अभिमान तजि पद रज बंदहि जासुकी' से भी जनश्रुतियों से व्यक्त उक्त भावना का समर्थन होता है। ऐसे सरल चित्त, सहृदय सन्त के प्रति जन-सामान्य की श्रद्धा-सरिता उक्त गाथाओं के माध्यम से अनेकधा प्रवाहित हुई।

जन्म-तिथि की भाँति ही मृत्यु-तिथि की भी परम्परागत मान्यता से भिन्न कोई सूचना उपलब्ध नहीं, इस मान्यतानुसार चैत कृष्ण द्वादशी ही सन्त रैदास की निर्वाण-तिथि मान्य है।

झाली रानी और मेड़तणी मीरा से सम्बद्ध कथाओं और चित्तौड़गढ़ में बनी 'छतरी' जो सन्त रैदास की छतरी कहलाती है- के आधार पर कहा जाता है कि उनकी मृत्यु चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में हुई।

दूसरी ओर वह 'काम-प्रतीक' रूप में मोक्ष की सबसे बड़ी बाधा मानते हुए कबीर ने स्त्री का एक प्रकार का अवमानना परक चित्र प्रस्तुत किया।' 'बाघिन', सर्पिन, विषबेल, नरककुंड आदि जाने क्या-क्या वीभत्स बिम्ब प्रस्तुत हुए है :

"स्त्री काली नागिन है,
कांमणि काली नागणं तीन्यूं लोक मंझारि।"
"कांमणि मीनीं पांणि की, जो छेड़ौ तो खाई।"
स्त्री का संसर्ग प्रेम, बुद्धि, विवेक आदि सब सद्गुण नष्ट कर देता है,
"नीर सेती नेह, बुधि, विवेक सब ही हरै,
कांई गमावै देह, कारिज काई मां सरै।"
स्त्री में अनुरक्त मनुष्य की भक्ति,
मुक्ति और ज्ञान तीनों समाप्त हो जाते हैं,
"नारी नसावैं तीनि सुख, जा नर पासैं हाइ।
भक्ति मूक्ति निज ग्यान में, पैसि न सकई काई।।"
इस प्रकार कबीर ने स्वर्ण और स्त्री को विषफल कहा, जिसका संसर्ग और भोग विषमय होता है,
"एक कनक अरू कामनी, विषफल कीएउ पाइ।
देखे ही थै विष चढ़ै, खांचे सूं मरि जाय।।"
स्वर्ण और स्त्री को अग्नि-खान कहा गया,
जिसे देखते ही आग धधक उठती है और स्पर्श विनाश कर देता है,
"एक कनक अरू कांमनी, दोउ अगनि की झाल।
देखें ही तन प्रजलै, परस्यां ह्वै पैमाल।।"
स्त्री के प्रेम ने तबाह कर दिया है,
कितने ही लोग हंसते-हंसते नकर में जा रहे हैं,
"कबीर भग की प्रीतड़ी, केते गए गड़ंत।
केते अजहूं जायसी, नरकि हसंत हसंत।।"
स्त्री नरक कुंड है, जिससे कोई साधु-जन ही बच पाता है,
"नारी कुंड नरक का, बिरल थंभे बाग।
कोई साधु जन उबरै, सब जग मूंवा लाग।।"

जाहिर है कि कबीर ने मनोविकार में से 'कामपरता' के दमन पर अत्यधिक जोर दिया है और ऐसे स्थानों पर 'स्त्री' तत्त्व उनके लिये कामुकता का प्रतीक है। इस सन्दर्भ में स्त्री को गर्हित और त्याज्य माना गया है। कामोद्दीपन के लिये एक मात्र स्त्री को ही महापातकी मानने की बहुत गहरी नेतृत्वशास्त्री, समाज-सांस्कृतिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि रही है, जिसका खुलासा किये बिना, सतही तौर पर देखते हुए कबीर तथा अन्य निर्गुण सन्तों की सामाजिक चेतना अन्तर्विरोधपूर्ण दिखाई देने लगती है। सामाजिक विषमता पर प्रहार करते हुए निर्गुण सन्तों की वाणी में, 'स्त्री' जैसे हाशिए पर है। वह एक सामाजिक पहचान से वंचित होकर या तो दासत्व का प्रतीत है या काम-व्यभिचार जैसे महापातकों की कारण स्वरूप एक वस्तु है। दासत्व और कामुक प्रतीकात्मकता के दो रूप, दो भिन्न परस्पर विरोधी परम्पराओं से ग्रहण किये गये हैं।

निर्गुण कवियों ने कहा है कि माया निर्गुणात्मक है और कंचन तथा कामिनी के रूप में जीव को सत्पथ से हटाती है। जगत की सभी मोह एवं आकर्षणमयी वस्तुएं माया का प्रतीक हैं। इसने सारे संसार को ग्रस रखा है। निर्गुण कवियों ने नारी के रूप में इसका मानवीकरण किया है। जो ठगिनी है, इसके निवारण के साधन हैं- सत्संग, भक्ति और ब्रह्म मिलनेच्छा। निर्गुण कवियों ने कहा है जिसको जीव संज्ञा दी जाती है, वह माया की सृष्टि है। माया ने सब जीवों को बांध रखा है। माया ठगी जाती है। माया ने किसी को ठगने से नहीं छोड़ा परन्तु इसको किसी ने नहीं ठगा। जो इसे ठग सके उसे ही सच्चा भक्त समझना चाहिए।

यद्यपि जीव और ब्रह्म में अभेद भावना है, दोनों एक ही सत्ता हैं किन्तु माया के आवरण से आवृत होने के कारण वह उससे भिन्न हो जाता है। आत्मा-परमात्मा के बीच में अन्तर डालकर दोनों को पृथक प्रतीति कराने वाली शक्ति ही माया है। इसलिए निर्गुण कवियों ने माया को ठगिनी कहा है।

निर्गुण कवियों के मतानुसार जो कुछ दृश्यमान जगत है वह भ्रममय, चंचल और नश्वर है। जगत चार दिन की चांदनी है। इस पर विश्वास करना अपने आपको छलना है। धन, वैभव, आडम्बर, विलास, सुख और दुःख ये सब जगत् के रूप हैं।

जगत की उत्पत्ति और स्थिति प्राचीन काल से चिन्तन का विषय रही है। सन्त कबीर कहते हैं कि उत्पत्ति होती है और विनाश होता है। यह चक्र चलता रहता है। इसी प्रवाह क्रम को संसार नाम दिया गया है। इस जगत् की दो अवस्थाएँ हैं- उत्पत्ति और विनाश। निर्गुण कवियों ने मुक्त कंठ से जगत की असारता व्यक्त की है और उस परम प्रियतम के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित किया है।

निर्गुण कवियों के जीवन का लक्ष्य सहज दर्शन, सहज साधना और सहज जीवन का उपदेश देना था। सहज दर्शन के रूप में उन्होने अद्वैत वेदान्त का प्रतिपादन किया है। इस प्रकार से निर्गुण कवियों ने अपने काव्य में ब्रह्म, जीव, माया तथा जगत् का अच्छा वर्णन किया है।

भक्ति साहित्य में निर्गुण कवियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी भाषा में निर्गुण शब्द का अर्थ निर्गुण साधकों के लिए रुढ़ हो गया है। हिन्दी साहित्य में निर्गुण काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा है। चौदहवीं शताब्दी से लेकर अद्यतन निर्गुण कवियों की भक्ति धारा अनेक स्त्रोतों से फूट निकली है। इसलिए यहां पर मैं केवल प्रमुख निर्गुण कवियों का ही उल्लेख करुंगी। इसमें मैंने उन्ही निर्गुण कवियों के अध्ययन पर विशेष बल दिया है जिनमें काव्यत्व का स्फुटन ओर मधुर रहस्य भावना का उन्मेष और सामाजिक सरोकार पाया जाता है। इस दृष्टि से- नामदेव, कबीर, रैदास, नानक दादू, सुन्दरदास, गरीबदास, मलूकदास आदि प्रमुख हैं।

उपर्युक्त समस्त कवियों की सामान्य प्रवृत्तियां एक सी ही हैं। सारग्राह्यता इन कवियों की प्राणभूत विशेषता थी। उन्होने अपने समय की समस्त प्रचलित धार्मिक एवं दार्शनिक विचार धाराओं, साधनाओं और सम्प्रदायों के सारभूत तत्त्वों को 'अनुभौ' के द्वारा आत्मसात करके तथा उन्हें अपने प्रतिभा और प्रयोग के सांचे में ढालकर एक अभिनव रूप दे दिया है, जो उनकी मौलिक देन है। वे सत्य के अनन्य उपासक हैं। उन्हें झूठ और मिथ्यात्व से घृणा थी। बुद्धिवादिता, सामाजिक और आध्यात्मिक, सान्तयात्मक, विचारात्मक आदि उनकी अन्य प्रमुख

उल्लेखनीय प्रवृत्तियां हैं। उनकी इन विशेषताओं ने समाज को एक सूत्र में बांध रखा है।

सन्त ज्ञानेश्वर के समकालीन सन्तों में सन्त नामदेव भी बहुत प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म नरसी बमनी ग्राम जिला सतारा है। इसी को डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी 'नरसी बैनी' नाम देते हैं। डॉ. भंडारकर के मतानुसार इनका जन्म सन् १२७० में हुआ था। इनके पिता का नाम दामाशेर और माता का नाम जोना बाई था। इनकी जाति दर्जी थी जिसको मराठी में 'शिपी' कहते हैं। कुछ लोगों ने उन्हें क्षत्रिय जाति का सिद्ध करने की चेष्टा की है।३३ नामदेव अपने समय में महाराष्ट्र तथा उत्तरी भारत में इतने प्रतिष्ठित हो चुके थे कि कबरी, रैदास, मीरा आदि ने उनका स्मरण बड़े आदर से किया है।

इनके पिता और पूर्वज भगवान के भक्त थे। भक्ति की प्रेरणा इन्हें उनसे ही मिली और अन्त में ये विरक्त हो गये। किवदन्ती है कि पहल ये डाकू हो गये थे। नामदेव पहले सगुणोपासक थे तथा बाद में निर्गुणपासक हो गये थे, इनका साहित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं हमारे विचारानुसार हिन्दी साहित्य में सन्त मत के प्रवर्तन का श्रेय नामदेव को देना ही समीचीन है। हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं के योगदान में सन्त नामदेव का प्रमुख स्थान है। सन्त नामदेव मराठी साहित्य के प्रमुख भक्त कवि थे। उनके बहुत से पद हिन्दी में भी हैं जिनका संकलन आदि ग्रन्थ में है। मराठी इतिहासकारों के अनुसार इनका निधन संवत् १४०७ में हुआ था। आचार्य क्षितिमोहन ने संवत् १५२१ को इनकी निर्वाण तिथि माना है। निश्चित प्रमाणों के अभाव में इस सम्बन्ध में किसी निश्चित तिथि का निर्देश नहीं कर सकते।

कबीर का जन्म, जाति, जन्म-स्थान, माता पिता एवं जीवन की घटनाएं विवाद का कारण हैं क्योंकि स्वयं कबीरदास अपने विषय में मौन रहे हैं। कबीर की जन्म-तिथि के सम्बन्ध में कबीर पंथियों द्वारा कहा गया यह दोहा काफी प्रसिद्ध हो चुका है-

"चौदह सो पचपन साल भये, चन्द्रवार एक ठाठ भए
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी प्रगट भए।"

कबीर की रचानाओं में बीजक कबीर का प्रामाणिक रचना मानी गई है। इसके तीन भाग हैं- साखी, शबद, रमैनी, कबीर की वाणियों के प्रकाशित संग्रहों में डॉ. श्याम सुन्दर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रन्थावाली' और 'सन्त कबीर' ही प्रामाणिक माने जा सकते हैं।

रविदास रामानन्द की शिष्य-परम्परा में थे ऐसा कुछ विद्वानों का मानना है। कबीर के समकालीन कवियों में इनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इन्होंने स्वयं अपनी जाति चमार बताई है- 'कह रैदास खलास चमारा' रविदास पढ़े-लिखे नहीं थे, कबीर के समान बहुश्रुत थे। मीरा बाई ने इन्हें अपने गुरु के रूप में स्मरण किया है। इनके पिता का नाम रघुदास तथा माता का नाम धुरविनिया था। इनके परिवार वालों का व्यवसाय काशी में मृत पशु ढोने का था। धन्ना भगत ने इनके विषय में कहा है कि रैदास ढोरों को ढोने का धन्धा करते थे। साधु-सन्तों में लीन रहते हुए इन्हें ईश्वर के दर्शन हुए थे-

रैदास के नाम पर भी अच्छा साहित्य उपलब्ध होता है। कहा जाता है कि इनका विफुल साहित्य राजस्थान में हस्तलिखित रूप में विद्यमान है। 'गुरु ग्रन्थ साहब' में भी इनके पद सम्मिलित हैं। पं. परशुराम चतुर्वेदी ने 'गुरु ग्रन्थ साहब' में प्राप्त रैदास जी के पदों को अधिक प्रामाणिक माना है, 'इन संग्रहों में आयी हुई अपनी भाषा के कारण भी सम्भव समझा जा सकता है। फिर भी 'गुरु ग्रन्थ साहब' में आए हुए पों को उसकी प्राचीनता के कारण कुछ अधिक प्रामाणिक समझा जाए, तो अनुचित न होगा। 'रैदास जी की बानी' वैल बेडियर प्रेस प्रयाग से प्रकाशित है।

नानक ने कहा है कि मात्र सच्ची भक्ति को ही सूत के रूप में धारण करना चाहिए-

नायं मानिए पत उवजइ सालहि सच सू।
दरगे अन्दर पाइये, तग न तूटस पूरा।

सन्त कवि नानक का साहित्य 'गुरु ग्रन्थ साहब' बृहतकाय ग्रन्थ में संगृहित हैं उनके पदों का स्वतंत्र रूप से संकलन 'नानक वाणी' में किया गया है।

दादू दयाल के शिष्यों ने उनकी वाणी के संग्रह 'हरडे वाणी' तथा 'अंग वधू' नाम से किये थे। दादू में खंडनात्मकता का स्वर इतना तीव्र नहीं जितना कि कबीर में था।

कवि मलूकदास जाति के खत्री थे। ये आजीवन गृहस्थ रहे और सं. १७६३ में इन्होने कड़ा गांव में प्राण छोड़े। कुछ लोगों के मतानुसार इन्होंने किसी द्रविड़ देशनिवासी विट्ठल दास से दीक्षा ली थी। मलूक दास जी की नौ रचनायें बताई जाती हैं।

निर्गुण कवि रविदास जी अत्यन्त विनम्र व मधुर स्वभाव वाले महात्मा थे। वे कथनी और करनी के पूरे थे मगर उन्होंने अपनी कोई बात तीखे स्वर में नहीं कही। वह जिस युग की पीठिका लेकर आये वह युग अशान्ति और अव्यवस्था का युग था। उस समय सामाजिक स्थिति सोचनीय थी। समाज ऊँच और नीच वर्ग में विभाजित हो गया था। निचले स्तर की मानी जाने वाली जातियां दुःखी थीं। उन्हें अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। यह युग धार्मिक संकीर्णता का युग था। यह दुर्व्यवस्था देखकर निर्गुण कवि रविदास ने आवाज उठाई थी। इन्होनं अपनी वाणी को इनका विषय बनाया था।

सन्त रविदास जी ने अपनी वाणी में निचली जातियों में आत्मविश्वास की भावना पैदा की तथा मनुष्यों को उन्होंने सात्विक जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया। समाज सुधार के लिए उन्होंने कथनी और करनी की एकता, परनिंदा, त्याग, अंहकार का त्याग करने का उपदेश दिया। उन्होंने मनुष्य की महानता की कसौअी मात्र प्रभु भक्ति को ही माना है। वे कहते हैं जाति-पाति के भेद निरर्थक हैं। रविदास जी ने जाति-पाति के भेद-भाव को महारोग कहकर लोगों को समझाते हुए कहा है कि यह रोग मानव तनका विनाश करता है और मनुष्य को मनुष्य नहीं समझने देता।

"जात पात के फेरमंहि, उरझि रहइ सम लोग।
मानुषता कूं खात हइ, 'रविदास' जात कर रोग।"

उन्होंने कहा है कि जन्म के आधार पर कोई नीच नहीं होता। गन्दे कर्म मनुष्य को ओछा बनाते हैं-

"रविदास जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच,
नर कूं नीच करि डारि है, ओछेकरम को कीच।"

वर्ग भेद और जाति-भेद का जो घुन समाज को अन्दर ही अन्दर चाट रहा था उन्होने उसे निर्मूल करने का प्रयास किया है। उनका यह प्रयास आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना तब था। उनका उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता को एकसूत्र में निबद्ध करने का है उन्होंने पहले संघर्ष किया फिर एकता की आवाज उठाई। वे जानते थे कि जाति, वर्ण और वर्ग सम्बन्धी सभी मतभेदों को समाप्त कर ही एकता स्थापित की जा सकती है। इस प्रकार से मानवीय हित को अपनी वाणी का मूलाधार बनाया है। जाति-पाति की दृष्टि से मनुष्य को घृणा से देखने के व्यवहार को रविदास ने मानवीय हितों के विपरीत समझा है। भारत का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि जाति-पति के कारण हमारा समाज खण्ड-खण्ड हो गया था। इस प्रकार से उन्होने एकता लाने के लिए मनुष्य को जात-पात के विभेदों से ऊपर उठने की प्रेरणा दी। वह सामाजिक दुर्गति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। उन्होने पथ-भ्रष्ट मानव को सही दिशा देने का प्रयास किया। विश्व-कल्याण हेतु, विश्व-बंधुत्व की भावना का प्रसार करना तथा क्षमा, दया, त्याग आदि मानवोचित गुणों का आधार तैयार करने का अथक प्रयास किया।

निर्गुण कवि रविदास ने अपनी वाणी में मानव और मानव के बीच प्रेम और सौहार्द का सूत्र आरम्भ किया। इन्होंने ऐसे मानव धर्म की बात चलाई जिसमें मनुष्य के बीच केवल मानीवय मूल्य को अपनाया। उन्होंने मनुष्य की एक जाति और धर्म माना है और वह है मानव-जाति और मानव-धर्म। उन्होंने सीधे-साधे शब्दों में सदाचार की बातें कहीं हैं। निर्गुण कवि रविदास जी ने जो जीवन जीया, उसे ही अपनी वाणी में उतारा। मनुष्य को मनुष्य का गौरव प्रदान करने में रविदास जी की वाणी का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने धर्मों की मूल एकता में अपना निश्वास व्यक्त किया। उन्होंने वर्णाश्रम पद्धति की निस्सारता पर बल प्रदान किया।

निर्गुण कवि रविदास जी की शिक्षाएं तथा संदेश समस्त संसार के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। अपनी वाणी को लोगों तक पहुंचाने से पहले उन्होंने इसे अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से अपनाया। वे सच्चे अर्थों में मानवता के प्रेमी तथा प्रभ भक्त थे। उनकी वाणी में मानवीय बोध स्पष्ट रूप से झलकता है। इसलिए उनकी वाणी समस्त समाज का मार्गदर्शन कर रही है।

निर्गुण कवि रविदास के काव्य में मानवीय प्रासंगिकता में हमें ये देखना है कि वर्तमान सन्दर्भ में यह कितना प्रासंगिक है। अतः यहां पर हम वर्तमान सन्दर्भ के बारे में ही जिक्र करेंगे।

जहां तक वर्तमान सन्दर्भ में रविदास के काव्य में मानवीय प्रासंगिकता का प्रश्न है वह एक दूसरे रूप में हमारे सामने आता है, धार्मिक मंच से धार्मिक स्वाधीनता के प्रश्न को उठाकर रविदास ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मुक्ति के प्रश्नों को भी उसके साथ जोड़ा था। इस प्रक्रिया में उन्होंने मानव मात्र की समानता, स्वतन्त्रता और भाई चारे की बात उठाई थी और उसके लिए वैचारिक संघर्ष किया था। अतः उनकी बातें वर्तमान सन्दर्भ में और अधिक प्रासंगिक हो गई हैं। स्वतंत्र भारत के संविधान में आज प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता और समानता के अधिकारों की गारन्टी दी गई है। इन्हें मूल अधिकार के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त है। संविधान या किसी भी प्रकार के नियम कानून की आड़ लेकर उन अधिकारों को छीना नहीं जा सकता।

अपने युग में जहां रविदास ने इस अधिकारों को बहाली के लिए जोरदार अभियान चलाया था लेकिन उनका स्वप्न अधूरा रहा। यद्यपि आज वेधानिक दृष्टि से देश के सभी नागरिकों को वे अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी व्यवहार में शोषण और उत्पीड़ित वर्ग के रूप में जनता का एक बहुत बड़ा हिस्सा इन अधिकारों से आज भी वंचित है। कभी जाति के नाम पर तो कभी गरीबी के, कभी अशिक्षा के कारण तो कभी अन्य अनेक कारणों से उन्हें समानता और स्वतंत्रता के अधिकरों से वंचित रखा जा रहा है। इस प्रकार से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि वर्तमान सन्दर्भ में सामाजिक स्थिति सोचनीय है।

(प्रस्तुत लेख के लेखक का नाम प्राप्त नहीं हो पा रहा है सामाजिक समरसता के उद्देश्य से यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है, लेखक के नाम का पता चलेगा सूचनार्थ प्रकाशित कर दिया जाएगा। आभार सहित।-संपादक)

पेंटिंग- चित्रा त्यागी

गुंजेश्वरी प्रसाद

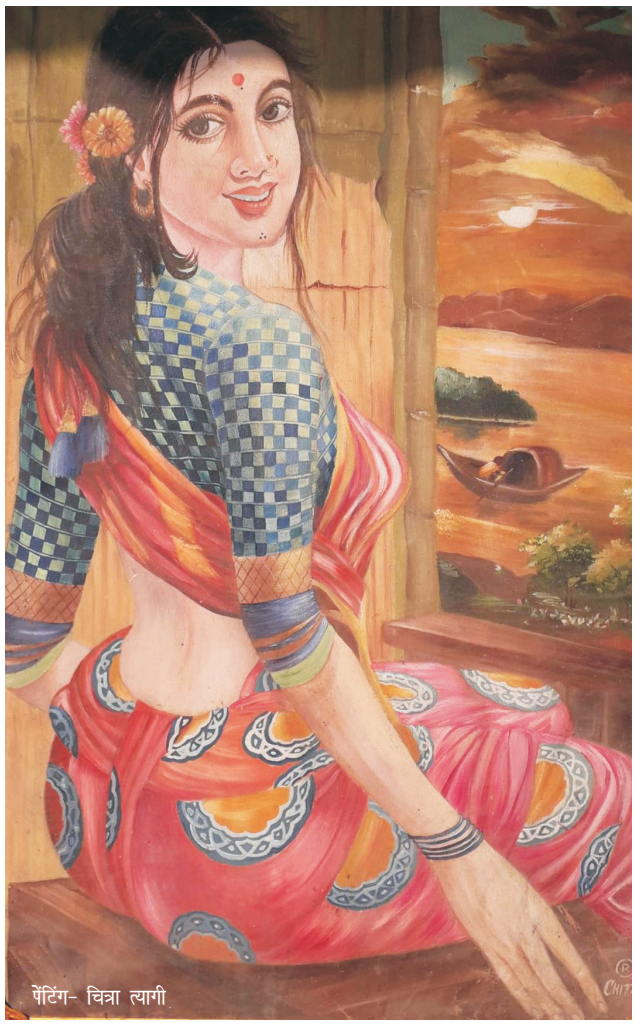

# केरल की जया और बिहार की सुनीता

''मैंने सभी भाईयों को ऊँची शिक्षा दिलायी। उनका परिवार बसाया। उनको बनाने में मैंने अपनी गृहस्थी नहीं बसायी। इस भवन को मैंने अपने और अपने भाईयो के लिए हीं नहीं बनवाया हैं। यह भवन मेरा नहीं हैं। यह सभी लोगों के लिए है, जो भी भाई बहन यहां आये, उनका स्वागत है।'' मेरी ने अपने भाइयों के लिए जो कुर्बानी दी, उस कुर्बानी के इतिहास में वह अकेली नहीं है। केरल के अधिकांश परिवारों में ऐसी महिलाएं मिल जाएंगी, जो अपने परिवारों के लिए इस तरह की कुर्बानी देती हैं। जया भी इसी पंक्ति में खड़ी थी। वह भी विदेश जाने की तैयारी में थी।

एर्णाकुलम शहर की जया बहुत सबेरे मेरी के घर के दरवाजे पर आकर 'कालबेल' बजा रही थी। 'कालबेल' की आवाज सुनकर आंख मींजते हुए मैं उठा तो सामने एक युवती खडी थी। उसे देखकर मैं सोच रहा था कि वसह स्वप्न हैं या यथार्थ! उसने मेरी तंद्रा भंग करतें हुए मुझसे पूछा, आंटी मेरी हैं? मैंने उससे कहा, ''हां! वह है।'' मेरा उत्तर सुनकर वह घर के अंदर चली गई।

कुछ देर के बाद वह बाहर निकली तो रास्तें में मैं उसे खड़ा मिला। उस समय मेरी का छोटा भाई जान भी मेरे साथ था। वह एर्णाकुलम की नगरीय व्यवस्था के बारे में मुझें बता रहा था लेकिन जया ने उसकी बात को बीच में रोककर मुझसे पूछा, ''मैं किस राज्य से हूं?'' मैने उससे कहा, ''मैं हिमालय की तलहटी में रहता हूं । मैं गोरखपुर का हूॅं।'' इसके बाद उसने फिर पूछा, ''आप क्या काम करतें हैं?'' तो उससे मैंने कहा, ''मैडम! मैं समाजवादी जन परिषद का सक्रिय कार्यकर्ता हूं और गोरखपुर जाकर केरल के बारे में लिखूँगा।'' इसके बाद उसने जान से पूछा, ''आपने इन्हें चाय पिलायी?'' जान से पहले ही मैंने उससे कहा, ''धन्यवाद! मैं चाय पी चुका हूँ।'' फिर उसने पूछा, ''क्या आप मेरे साथ नाश्ता करना पसंद करेंगें?'' हंसते हुए मैंने कहा, ''धन्यवाद। मुझे आपके साथ नाश्ते पर कुछ समय बिताकर अच्छा लगता मगर मेरी ट्रेन का समय हो चुका है।'' जया जितनी ऊपर से सुंदर और आकर्षक थी, उतनी ही वह भीतर से भली भी थी लेकिन यह खूबी अकेले जया में ही नहीं थी। केरल राज्य का समाज ही ऐसे संस्कार में ढला हुआ हैं कि वहां के लोग परदेशी की आवभगत खूब करते हैं।

डॉ. सुनीता बिहार की थीं। उन्होंने अर्थशास्त्र में पीएच. डी. किया है। वह भी समाजवादी जन परिषद के राष्ट्रीय परिषद की बैठक में केरल गई थी। वह भी सुंदर एवं आकर्षक है। उनकी आवाज भी कोयल-जैसी है लेकिन उनमें केरल की औरतों-जैसा खुलापन नहीं है। यद्यपि वह एक पत्रिका की संपादक हैं और समाजवादी विचारधारा की हैं मगर लगता है कि उत्तर भारत में औरतों के साथ यहां के मर्दों द्वारा जिस तरह का वहशियाना सुलूक किया जाता है, उस भय से वह भीतर से भयाक्रांत रहती हैं, यह कमी उनकी अपनी नहीं हैं। उत्तर भारत का पुरुष समाज इतना निर्मम और निर्दयी है कि वह जब भी किसी युवती को देखता है तो उसे गिद्ध की तरह नोच खाना चाहता है। पुरुषों की गिद्ध वृत्ति का ही यह प्रभाव हैं कि इस अंचल की पढ़ी लिखी और अनपढ़ औरतों के स्वभाव में कोई खास फर्क नहीं हैं। सुनिता उत्तर भारत की महिलाओं के स्वभाव के प्रतिनिधित्व ज्यादा करती हैं जबकि वह विचारों से समाजवादी हैं और समाज को आमूलचूल बदल देने की प्रबल इच्छा रखती है।

उनकी-जैसी लाखों औरतों को केरल की जया बनाने के लिए उत्तर भारत के पुरुषों को बदलना होगा। बदलना इसलिए होगा कि आज का केरल जिस बल पर खड़ा है उसकी नींव में केरल की महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। केरल में शत-प्रतिशत शिक्षा और साक्षरता है। इस राज्य की लड़कियों को ऊँची शिक्षा देने में किसी प्रकार की कोताही परिवार द्वारा नहीं की जाती है। लड़कियों के साथ कोई भेद-भाव नहीं बरता जाता है और न उन्हें संदेह की दृष्टि से देखा जाता हैं। उन्हें अपना जीवनसाथी तलाशने, अविवाहित रहने और एक स्थान से दूसरे स्थान तक अकेले आने-जाने की पूरी छूट है।

मैं एर्णाकुलम में जिस भवन में रुका था, वह मेरी का भवन था। मेरी का छोटा भाई जान समाजवादी जन परिषद का सदस्य था। फर्श पर पैर रखते ही पैर फिसलने लगता था। फर्श पर धूल का एक कण भी नहीं था। बिना बिस्तर बिछाये उस पर बैठा जा सकता था। बिजली की आपूर्ति बराबर हो रही थी। सामने दरवाजे के ऊपर ईसा मसीह की तस्वीर जलते हुए दो लाल बल्बों के बीच टंगी हुई थी, जो दमक रही थी।

जिस समय हम लोग मेरी के घर पहुंचे, उस समय रात के बारह बजे थे। मेरी के घर का बाहरी फाटक उनके नौकर ने खोला। हम सभी लोग घर के अंदर गये। मुझे बहुत प्यास लगी हुई थी। सुनीता के पास पानी से भरा प्लास्टिक का एक बड़ा डिब्बा था। उन्हें भी प्यास लगी हुई थी। वह अपने डिब्बे से गिलास में पानी उंडेलकर पी रही थीं। प्यास को मैं रोक नहीं पा रहा था। अतएव मैंने उनसे पानी मांगा मगर उन्होंने न जाने क्या सोचकर मुझे पानी नहीं दिया। मेरा अनुमान है कि उनके मानस में उस समय यह रहा होगा कि तमाम लोगों के बीच में एक पराये पुरुष को पानी देने का अर्थ अन्य लोगों के बीच में शायद गलत संदेश देना होगा। यह मेरा अपना अनुमान है। हकीकत कुछ और भी हो सकती है लेकिन इतना तो सच है कि उत्तर भारत की डॉ. सुनीता हो या कोई और तमाम लोगों के बीच में प्यासे किसी गैर-पुरुष को पानी देते हुए संकोच करती हैं।

मेरी के परिवार की नौकरानी जो थोड़ी-बहुत हिंदी

समझती थी, उसने मेरा भाव समझ लिया था। कुछ देर बाद उसने एक बोतल पानी एक गिलास के साथ मेरे सामने रख दिया। प्यास लगी थी। बोतलभर पानी पी गया और सोचने लगा कि केरल के समाज में जो खुलापन है, उससे यहां की औरतों में किसी प्रकार की ग्रंथि नहीं है।

कई मायनों में केरल की औरतें और युवतियां उत्तर भारत के पुरुषों और युवकों से ज्यादा प्रगतिशील है। प्रगतिशील इस अर्थ में हैं कि सुबह के समय नाश्ते की मेज पर सांभर, इडली, टोस्ट और चाय के साथ भवन की मालकिन मेरी हम लोगों के साथ बैठी तो उन्होंने बातचीत के दौरान अपनी पारिवारिक पष्ठभूमि की ओर हम लोगों का ध्यान खींचतें हुए कहा, ''हम तीन बहनें और दो भाई हैं। मैं अपनी बहनों में छोटी हूँ और दोनों भाई मुझसे छोटे हैं। जब मैं १८ वर्ष की थी, उस समय मैं बी.ए. में थी। मेरी दोनों बहनों की शादी हो चुकी थी। दोनों भाई बहुत छोटे थे। उस समय हम लोगों के पास रहने के लिए यह भवन नहीं, झोपड़ी थी। पिता भयंकर रूप से रोगग्रस्त हो गयें थे। उनके सामने मौत खड़ी थी। उन्होंने मुझे बुलाकर कहा, ''मेरी मैं जा रहा हूँ। वहां ईश्वर से तुम्हारे लिए कुछ करवाऊंगा। तुम्हारे ये दोनों भाई छोटे हैं। इन्हें मैं तुम्हें सौंप रहा हूँ। तुम किसी अन्य को मत सौंपना।'' पिताजी चल गये। हम लोग अनाथ हो गये। उस समय कनाडा से नर्सिंग पढ़ने का विज्ञापन प्रकाशित हुआ। मैंने फार्म भर दिया और जब मेरा इंटरव्यू हुआ तो मैं चुन ली गई। भारत छोड़कर कनाडा चली गई और वहां जो वेतन मिलता था, उसे अपने भाईयों को खाने-पीने रहने और पढ़ने के लिए भेज देती थी।

''मैंने सभी भाईयों को ऊँची शिक्षा दिलायी। उनका परिवार बसाया। उनको बनाने में मैंने अपनी गृहस्थी नहीं बसायी। इस भवन को मैंने अपने और अपने भाईयो के लिए हीं नहीं बनवाया हैं। यह भवन मेरा नहीं हैं। यह सभी लोगों के लिए है, जो भी भाई बहन यहां आये, उनका स्वागत है।'' मेरी ने अपने भाइयों के लिए जो कुर्बानी दी, उस कुर्बानी के इतिहास में वह अकेली नहीं है। केरल के अधिकांश परिवारों में ऐसी महिलाएं मिल जाएंगी, जो अपने परिवारों के लिए इस तरह की कुर्बानी देती हैं। जया भी इसी पंक्ति में खड़ी थी। वह भी विदेश जाने की तैयारी में थी।

उत्तर भारत की सुनीता हो अथवा चंपा, चमेली हो, किसी में इस तरह की सहज उदारता और सहज साहस देखने को नहीं मिलता है क्योंकि इस अंचल की औरतें अपने शरीर को ही मंदिर समझती हैं। यहां की महिलाओं की इस समझ की पृष्ठभूमि में यहां के पुरुषों की महत्वपूर्ण भूमिका है। यहां का पुरुष औरतों की शारीरिक पवित्रता को लेकर चिंता करता रहता हैं जबकि केरल का पुरुष और वहां की औरतें इस विषय को गौण मानती हैं। केरल में बलात्कार की घटनाएं कभी कभार ही होती हैं। उत्तर भारत को आगे बढ़ाने के लिए परिवर्तन की जरूरत हैं। आखिर उत्तर भारत में नर्सिंग होम के काम में उत्तर भारत की कम, केरल राज्य की औरतें भारी संख्या में कार्यरत हैं। केरल राज्य का विकास वहां की औरतों के बल पर हुआ है। उत्तर भारत को आगे बढ़ाने के लिए केरल बनना पड़ेगा। केरल का समाज ऐसा क्यों हैं?यह राज्य समुद्र के किनारे है। विदेशों के साथ सदियों पुराना इसका व्यापारिक संबंध हैं। व्यापार में खुलेपन की जरूरत होती है इसलिए केरल का समाज खुला हुआ और संकीर्णता से मुक्त हैं।

# भारत की अपनी भाषा क्या है?

के. एस. तूफान

भारतीय ससंद में, विशेषतः लोकसभा में १५ मार्च २०१३ का दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा, कि इस दिन लगभग सभी राजनीतिक दलों के नेताओं ने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर हिन्दी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की जोरदार वकालत की। यह विवाद संघ लोक सेवा अयोग द्वारा सिविल सेवा परीक्षा में अंग्रेजी के पर्चे को मेरिठ में जोड़ने तथा क्षेत्रीय भाषाओं के बारे में किये गये परिवर्तनों से सम्बन्धित था। इस विषय में सांसदों की चिंता यह थी कि अंग्रेजी की अनिवार्यता के कारण अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग, कमजोर वर्ग तथा ग्रामीण परिवेश से आने वाले छात्र-छात्राओं को सिविल परीक्षाओं में विशेष परेशानी होगी। सांसदों ने यह आरोप लगाया कि काले अंग्रेजों का यह अंग्रेजी प्रेम तथा उक्त जातियों एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले परीक्षार्थियों को आई.ए.एस. तथा आई.पी.एस. नहीं बनने देने का षड़यंत्र है। इस मुद्दे को लेकर सांसद इतने उबाल पर थे कि किसी समय हिन्दी के विरोध में एक आवाज से खड़े होने वाले सांसदों ने भी हिन्दी का विरोध नहीं किया। इसके अलावा उन्होंने बंगाली, गुजराती, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, उड़िया, भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषाओं को पहले की भांति ही सिविल परीक्षाओं में स्थान देने की पुरजोर मांग की। इस पूरे प्रकरण में ध्यान देने योग्य बात यह है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता का विरोध न केवल विरोधी दलों ने किया, वरन् सरकार के सहयोगी दलों ने भी इस कार्यवाही की कड़ी निन्दा की।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि अंग्रेजी के मामले में भारत ने समय-समय पर शर्मिन्दगी उठाई है। इस विषय में एक उदाहरण प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू के समय का है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पडिंत को सोवियत संघ का राजदूत बना कर मास्को भेजा गया था। यह स्टालिन के जमाने की बात है। जिस समय श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अपने परिचय-पत्र स्टालिन के पास भिजवाये, तो उन्होंने परिचय-पत्र यह कह कर लोटा दिये कि यह या तो आपकी भाषा में होने चाहिए, या फिर हमारी भाषा में, अंग्रेजी में क्यों?बाद में हुआ यह कि राजदूत के परिचय-पत्र भारत आये और यहाँ से हिन्दी में बनकर मास्को भेजे गये, तब स्टालिन ने उन्हें स्वीकार किया। दूसरा उदाहरण भी सोवियत संघ से ही सम्बन्धित है। १९६७ ई. में डा. जाकिर हुसैन की मृत्यु के समय उनके जनाजे में शामिल होने सोवियत संघ के तत्कालीन प्रधानमंत्री कोसीगिन आये थे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में किसी भारतीय अधिकारी से कोई बात पूछी। भारतीय अधिकारी ने उन्हें अंग्रेजी में उत्तर दिया। इस पर श्री कोसीगिन क्रोधित होकर बोले कि आप अपनी भाषा में बात नहीं कर सकते?

स्वतन्त्रता संग्राम के मध्य भाषा का प्रश्न भी उठा था। इस विषय में गाँधी जी, जिनकी मातृभाषा गुजराती थी, भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। इनका स्पष्ट मानना था कि हिन्दी में वे सभी गुण विध्यमान है, जो किसी देश की राष्ट्र भाषा में होने चाहिए। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस में भी आजाद हिन्द फौज को अनेक अवसरों पर केवल हिन्दी में ही सम्बोधित किया था। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर बंगाली के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार होने के बावजूद हिन्दी से प्रेम करते थे। इसके अतिरिक्त सरदार वल्लभ भाई पटेल, जे.वी. कृपलानी, डा. भीमराव अम्बेड़कर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, मौलाना अबुलकलाम आजाद, अरूणा आसफअली, सुचेता कृपलानी, सरोजनी नायडू आदि हिन्दी भाषी न होते हुए भी कभी भी हिन्दी विरोधी नहीं रहें।

संघ लोक सेवा आयोग की सिविल परीक्षाओं में हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में परीक्षा देने की छूट किसी की कृपा पर आधारित नहीं है, वरन् इसके लिए लगभग १२ वर्ष तक संघ लोक सेवा आयोग के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय ''धौलपुर हाउस'' पर धरना दिया गया। इस धरने को अटल बिहारी वाजपेयी, चन्द्रशेखर, शांतिभूषण, मधु दंडवते, मधु लिमये आदि दिग्गज नेताओं ने सम्बोधित किया था। धरने पर बैठने वाले ऐसे जनूनी युवक थे कि सर्दी, गर्मी तथा बरसात में भी वहीं लगभग १२ वर्ष तक डटे रहे। यह लगभग ३० वर्ष पूर्व की घटना है। धरना देने वालों का कहना था कि सीविल परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाये और ये परीक्षाएं हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में करायी जायें। किन्तु इन युवकों तथा नेताओं की मेहनत पर उस एक सर्कुलर ने पानी फेर दिया, जिसमें इन परीक्षाओं में अंग्रेजी को अनिवार्य बनाकर हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की बलि चढ़ा दी गयी। पूर्व में अंग्रेजी का पेपर भी होता था, अंग्रेजी में निबंध भी लिखवाया जाता था, किन्तु उसके नंबर नहीं जुड़ते थे। अब नये सर्कुलर के द्वारा अंग्रेजी के निबंध को २०० अंक का बना दिया गया है, जो नबंर परीक्षा में जोड़े जायेंगे। निसन्देह अंग्रेजी से हमारा कोई बेर नहीं है, और कोई भी विदेशी भाषा सीखना अथवा आना अच्छी बात है, किन्तु क्या हमें हिन्दी अथवा अपनी मातृभाषा पर गर्व नहीं होना चाहिए? अतः सिविल परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता क्यों होनी चाहिए?

इस विषय में १५ मार्च को लोकसभा की कार्यवाही तीन बार स्थगित करनी पड़ी। सांसदों में इतना गुस्सा था कि वे कोई बात सुनने को तैयार ही नहीं थे। अनेक सांसदों ने आरोप लगाया कि कुछ अंग्रेजीदां अथवा काले अंग्रेज नहीं चाहते कि ग्रामीण परिवेश अथवा कमजोर वर्गों के परीक्षार्थी आई.ए.एस. तथा आई.पी.एस. बने। वे इस कैडर को हाईप्रोफाइल बनाये रखना चाहते है। बाद में इस विषय पर लोक सभा जोरदार बहस् हुई और सभी राजनीतिक दलों के नेताओं ने दलगत् राजनीति से ऊपर उठकर संघ लोक सेवा आयोग की सिविल परीक्षाओं में हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषाओं में परीक्षाएं कराने तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने की पुरजोर मांग की। बहस का उत्तर देते हुए कार्मिक विभाग में राज्यमंत्री नारायण सामी ने सांसदों को विश्वास दिलाया कि अंग्रेजी की अनिवार्यता वाला सर्कुलर वापस ले लिया जायेगा और सिविल परीक्षाएं पूर्व की भाति ही हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में होगी। इस प्रकार यह विवाद यहीं समाप्त हुआ। यहाँ पर भारतेन्दु हरिश्चंद्र का स्मरण होना स्वाभाविक ही है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

पता-
भनेड़ा- २४६७३१ जिला- बिजनौर, उ. प्र.
मो. ०६८६७४८६६४०

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

# शोधादर्श

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

## बिजनौर जनपदवासियों के लिए होगा यह विशेषांक

# बिजनौर विशेषांक

क्या आप बिजनौर विशेषांक में अपने संस्थान का विज्ञापन देना चाहते हैं अथवा बिजनौर से संबंधित कोई ऐतिहासिक जानकारी आपके पास है? तब आप संपर्क करें

Email-shodhadarsh2018@gmail.com

Mob- 9897742814

अमन कुमार

# गुलाबों का बादशाह

आसपास के सभी लोग उसे गुलाबों के बादशाह के रूप में ही जानते थे। उसका असल नाम क्या है?अब तो स्वयं उसे भी स्मरण नहीं रहा। मुश्किल से तीन वर्ष का रहा होगा, जब उसके माँ-बाप ने उससे सदा के लिए विदा ले ली थी। इस भरी दुनिया में वह नितान्त अकेला था। उसकी उम्र लगभग पैंसठ वर्ष हो चुकी है। विवाह के अनेकों प्रस्तावों के बावजूद उसने कुंवारा ही रहना उचित समझा। मन लगाने के लिए उसके पास बड़ा सा गुलाबों का बगीचा है। कहा जाता है कि जब उसके माता-पिता ने उससे विदा ली थी, तब वह इसी बगीचे में था। यह बगीचा उस वक्त उतना खूबसूरत नहीं था, जितना कि आज है। तब व्याधियां भी अधिक थीं और उसके माता-पिता इस बगीचे की देखभाल भी उचित प्रकार से नहीं कर सके थे। पड़ोसियों के जानवर इस बगीचे में आते। जहाँ अच्छा लगता मुँह मारते और जहाँ मन करता गोबर करते और फिर चले जाते। हद तो ये हो गयी कि बाद में एक दो सांडों ने इस सुन्दर बगीचे को अपना आसियाना ही बना लिया। गुलाबों के बादशाह के माता-पिता इन सांडों से मरते दम तक अपने बगीचे को आजाद नहीं करा सके। आज गुलाबों का बादशाह अपने बगीचे को साफ-सुथरा रखता है। क्या मजाल एक भी पड़ोसी जानवर उसके बगीचे में घुस आए। उसके बगीचे में आज तरह-तरह के गुलाब हैं, जो दूर तक अपनी खुशबू बिखेरते हैं। गुलाबों का बादशाह कहता है- "मैं अपने बगीचे में किसी को घुसने नहीं देता, और मेरे गुलाबों की खूशबु को कोई रोक नहीं पाता।"

यह कहते हुए वह कभी-कभी गम्भीर भी जाता है। स्मृति में खोया वह कहता है- ''मेरे माँ-बाप के जाने के बाद यहाँ बहुत लोगों में आपसी झगड़े हुए। कोई इस बगीचे में अपने घर का कूड़ा डालना चाहता था, तो कोई उपले पाथने के लिए पथवारा ही बनाना चाहता था। सब अपने-अपने तरीके से कब्जाने का प्रयास कर रहे थे।'' बताते-बताते वह एकाएक मुस्करा उठता है। वह अपने आप से सवाल करता है -''परन्तु हुआ क्या?'' फिर अपने आप ही जवाब भी देता है- ''बर्बाद हो गये सब। आपसी झगड़ों में कई मारे गये, जो बचे वो अदालतों के चक्कर लगा रहे हैं।''

गुलाबों का यह बादशाह आपसे बातें करते-करते अचानक उठता है और जब वापिस आता है तो उसके हाथ में गुलाब की दो चार पंखुड़ियाँ और पत्तों के सिवा कुछ नहीं होता। आप उससे प्रश्न भी नहीं कर पाएंगे कि वह स्वयं ही उत्तर दे देता है- "बुरा नहीं मानिये साहब, मैं लापरवाह नहीं हूँ और न ही मुझे अपने बगीचे में किसी प्रकार की गन्दगी ही पसन्द है।"

गुलाबों का यह बादशाह बड़ा ही विचित्र जीव है। वह गुलाबों की कटाई-छंटाई नहीं करता और एक पत्ते को भी जमीन पर नहीं गिरे रहने देता। पत्तों और पंखुड़ियों को वह एक गड्ढे में डालता जाता है। जिसमें ये पत्ते और पंखुड़ियाँ सड़कर खाद बन जाती हैं। वह बताता है- "बगीचे में जो पत्ते और पंखुड़ियां बेकार हो जाती हैं, मैं उनसे भी काम लेता हूँ।"

गुलाबों के इस बादशाह की विचित्रता तो देखिए कि इसके शरीर का एक भी हिस्सा ऐसा नहीं है, जहाँ कोई निशान न हो। हर तरफ से कटा-फटा। अभी भी कई अंगो से खून टपक रहा है। वह धरती से कुछ मिट्टी उठाता है और खून निकलने वाली जगहों पर मलते हुए मुस्कुराता है। "क्या बताऊँ साहब?" जगह-जगह कांटे चुभ जाते हैं।'' बताते हुए वह गम्भीर हो जाता है और पूछता है- "आपको तो यहाँ के कांटे नहीं चुभे साहब?"

आप जवाब भी नहीं दे पाते कि उससे पहले ही वह बोल उठेगा- आप यहाँ की खुशबू लीजिए जनाब, यहाँ के कांटे आपको नहीं चुभेंगे।''

गुलाब का फूल होता ही प्यारा है। उसे देखकर भला किसका जी नहीं ललचाता। बहुत से व्यक्ति होते हैं, जो गुलाब के ताजे फूल को अपने कोट में लगाने को अपनी शान समझते हैं। बहुत सी यौवनाएं होती हैं, जो गुलाब के फूल को अपने केशों में लगाकर प्रफुल्लित हो उठती हैं। बच्चों को नहीं पता गुलाब क्या होता है, मगर उन्हें भी गुलाब का फूल सबसे अधिक प्रिय होता है। आज कल तो हाल ये है कि हर कोई गुलाब सा दिखने के लिए ब्यूटिपार्लर के धंधे में चार चाँद लगा रहा है। यहाँ तक कि सारा संसार गुलाबी हो जाने को तत्पर है।

इस गुलाबी बगीचे को देखकर जो आनन्द आता है। वह अद्वितीय है। बाहरी लोग इस बगीचे की तुलना में अनेकों बगीचे लगा रहे हैं। यहाँ तक कि खूबसूरत रात को गुलाबी रात और खूबसूरत मौसम को गुलाबी मौसम भी कहा जाने लगा है। अंग्रेजों ने इसकी खूबसूरती को देखते हुए 'पिंक' शब्द दिया है। पिंक नाइट, पिंक कलर, पिंक वर्ल्ड और न जाने क्या-क्या?

गुलाबों के बादशाह के इसी बगीचे में विभिन्न प्रकार के गुलाब हैं। गुलाबों का बादशाह बातों-बातों में बताता है- ''इस बगीचे का हर गुलाब आपको एक से बढ़कर एक लगेगा। मगर...।'' कहते-कहते गुलाबों के बादशाह की जुबान लड़खड़ाने लगती है। वह चन्द पलों के बाद नियंत्रित हो जाता है और फिर किसी भयानक दर्द को छिपाते हुए मुस्कुराने का प्रयास करता हुआ कहता है- "ठीक है, अब आप जाइये, मुझे बहुत काम करने हैं।"

मैं इस बगीचे में घूमकर गुलाबों को देखना चाहता हूँ। यह बात कहते ही वह जमकर खड़ा हो जाता है और दृढ़ता के साथ कहता है- "बस दूर से ही देखना, कोई मेरे

गुलाबों को छूकर देखे, ये मैं सहन नहीं कर पाऊंगा।"
"जी अच्छा मैं दूर से ही देखूंगा।" सहमती के साथ ही वह भी अपनी सहमति दे देता है।
अब उसके साथ उसके खूबसूरत बगीचे में घूम रहे हैं। वह जिस पथ पर चल रहा है उसे राजपथ कहता है। वह बताता है, यहाँ का हर पथ मेरे राजमहल तक जाता है। गुलाबों का बादशाह बगीचे के बीचो-बीच तक झोपड़ी में रहता है, जिसे वह अपना राजमहल कहता है।
वह अपने गुलाबों की तारीफ करते हुए थकता नहीं। उसके इस बगीचे में सम्पूर्ण भारत में पाये जाने वाले गुलाब मौजूद हैं। अभी पिछले दिनों उसने एक गुलाब विदेश से भी मंगवाया है। इसके बारे में वह कहता है-''मेरा यह गुलाब इतना सोहणा है कि सभी के मन को मोह लेता है।''
एक और गुलाब की ओर इशारा करते हुए वह बताता है-''यह गुलाब देखो, मोटा है मगर इसकी माया निराली है। जो भी इसे एक बार देख ले, वो इसे बार बार देखना पसंद करता है। इसी के बराबर में एक और नरम-मुलायमसा गुलाब दिख रहा है, मगर यह उतना मुलायम भी नहीं है, जितना कि देखने में लगता है। और उससे आगे वो पीछे वाला, देखो, उस गुलाब की सदा जय-जय होती है, और उसके बाये, वो सफेद वाला गुलाब बड़ा ही ममतामयी है।
वह अपने गुलाबों की तारीफें करता जाता है और देखने वाला हैरत से देखता है। वह प्रसन्नचित्त हो कहता है-''वह देख रहे हैं आप, काला गुलाब, मैं उसकी जड़ में प्रतिदिन मांड डालता हूँ। उसका वृक्ष बड़ा है। इतना बड़ा कि उसके नीचे दो-चार बालक भी आराम से खेल सकते हैं। और उसी के बराबर में वह लम्बा सा गुलाब, इसे मैं राजा कहता हूँ। यह किसी मोबाइल टावर की तरह लम्बा लगता है। राजा के पीछे वाला गुलाब बड़ा प्यारा है। यह बड़ा सुख देता है। इतना सुख जो रामराज में ही मिला हो सकता है।
एकाएक गुलाबों का बादशाह पीछे मुड़ता है और एक पौधे की ओर इशारा करते हुए कहता है-''यह गुलाब कमाल का है, कहा जाता है कि ये दिगदिगन्तर विजयी है।'' बताते हुए वह अपनी झौंपड़ी की ओर बढ़ता है। जहाँ अनेकों छोटे-छोटे गुलाबों के पौधे उग रहे थे। जिन्हें देखकर गुलाबों का बादशाह गर्व के साथ कहता है-''ये मेरे बगीचे का भविष्य हैं।''
बात करते हुए वह झौंपड़ी में घुस जाता है। बाहर से खूबसूरत लगने वाली झौंपड़ी अन्दर से बड़ी ही अस्तव्यस्त लग रही थी। सभी सामान दाये-बाये बिखरा पड़ा था। प्रतीत हो रहा था कि यहाँ कोई दंगा-फसाद हुआ है। गुलाबों का बादशाह मुस्कुराता हुआ बताता है-''यही मेरा महल है, जहाँ बैठकर मैं अपने बगीचे को संवारने की योजनाएं बनाता हूँ।''
आप गुलाबों के बादशाह की बातें सुनकर आश्चर्य में पड़ सकते हैं। कभी वह आम आदमी नजर आता है और कभी बड़ा दार्शनिक।
झौंपड़ी की विशेषता बताते-बताते गुलाबों के बादशाह के हलक से चीख निकल पड़ती है और वह वहीं जमीन पर बैठ जाता है। उसके दोनो हाथ अपने दाये पैर के तलवे की ओर बढ़ते हैं। उसके तलवे में एक कांटा चुभा था। कांटा बड़ा ही कसैला था। वह उस कांटे को निकालता है और एक तरफ फेंक देता है। उस स्थान पर कांटो का ढेर है। वह पुनः मुस्कुराने का प्रयत्न करते हुए कहता है-''आप तो गुलाबों की खुशबू लीजिये साहब! कांटे इस झौंपड़ी को मुबारक।''

लघुकथा

# बंटवारा

ऋतु गुप्ता
खुर्जा बुलंदशहर
उत्तर प्रदेश-२०३१३१
मो. ९५६८४३२८३३
Email- ritu.gupta.kansal@gmail.com


घर भर में कोहराम मचा था,तारा जी सीढ़ी से गिर गई थी, सिर पर भारी चोट लगी थी, डाक्टर ने बताया कि शायद दिमाग की कोई नस फट गई थी,जो उन्हें यूं अचानक दुनिया को छोड़ अलविदा कहना पड़ा। यूं तो तारा जी अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो चुकी थी,तीन बेटे थे, सभी की शादी हो चुकी थी और सभी अपने अपने परिवार में मस्त थे।
लेकिन तारा जी का यूं अचानक जाना उनके पति राधेश्याम जी पर पहाड़ टूटने जैसा था, क्योंकि राधेश्याम जी थोड़े से अस्वस्थ रहते थे, और उन्हें हर पल तारा जी के साथ की जरूरत महसूस होती थी, असल में यही वह उम्र होती है,जिसमें हमें अपने जीवनसाथी की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, और जीवन साथी की जैसे आदत सी हो जाती है, इसी समय पर आकर हम जीवनसाथी का सही मायनों में अर्थ समझ पाते हैं,और फिर पूरी जिंदगी तो जिम्मेदारियों में निकलती ही है,ठहर कर जिंदगी जीने का आनंद तो अभी शुरु हो पाता है। अभी आकर हम एक-दूसरे के सुख-दुख में भागी होते हैं। पर ईश्वर के आगे क्या किसी की चली है ....?
राधेश्याम जी के दिमाग में हजारों सवाल चल रहे है कि अब उनकी जिंदगी किस प्रकार कटेगी, कौन उनके सुख दुख में उनके साथ होगा क्योंकि तीनों ही बेटे शहर से बाहर रहते हैं।
तारा जी की तेरहवीं के बाद उनका सारा सामान बांटा जा रहा है तारा जी के पास सोने के काम (कढाई ) की दो बहुत भारी साड़ियां है, जिनका मूल्य आज बहुत अधिक होगा, और शायद आज तो ऐसा काम साड़ीयों पर मिले भी नहीं।
मंछली और छोटी बहू झट से कहती हूं कि मां ने ये साड़ी उन्हें देने का वादा किया था, राधेश्याम जी कहते हैं अगर ऐसा है तो तुम रख लो, और थोड़ी ही देर में तारा जी के सारा सामान चीज जेवर, कपड़े आदि का बंटवारा हो जाता है, लेकिन अफसोस किसी ने भी अभी तक इस बारे में जिक्र नहीं किया कि राधेश्याम जी अब किसके साथ रहेंगे और कहां रहेंगे?
ये सोचकर राधेश्याम जी की आंखें नम हो जाती हैं, वो पूजा घर की तरफ जाते हैं, तभी उनकी बड़ी बहू सुनिधि आकर उनसे कहती है, पापा एक चीज का देने का वादा तो मां ने मुझसे भी किया था,क्या आप मुझे वो दोगे?
राधेश्याम जी कहते हैं जो कुछ था तुम्हारे सामने है, अब क्या दे सकता हूं? सुनिधि कहती है आपका स्नेह और प्यार पापा। मां ने एक बार कहा था कि उन्हें सबसे ज्यादा फिक्र आपकी है, कहा था यदि उन्हें कुछ होता है तो मैं आपकी सेवा करूं, हां पापा आपका आशीर्वाद आपकी छत्रछाया देने का मां ने मुझसे वादा किया था ,तो पापा आप मुझे ये दोगे ना... इतना सुनना था कि राधेश्याम जी कुछ कह तो नहीं पाते पर उन्होंने अपना कपंकपाता हुआ आशीर्वाद भरा हाथ अपनी बहू सुनिधि के सर पर रख दिया और सही मायनों में बंटवारा अब पूरा हुआ।

# महानायक

किताबों के पन्नों में दबे नहीं,
सड़कों पर संघर्ष के गीत बने
संघर्ष केवल किया नहीं
संघर्षों को जीया जिसने
वह नायक नहीं महानायक थे.
चम्पारण सत्याग्रही गोवा सेनानी
नरेंद्र देव की अदम्य अनुभूति
आत्मीय बिनोबा, कृपलानी अनुज श्रीकृष्ण अग्रज कर्पूरी के
लिमये-दंडवते इनके प्रिय थे
अद्भुत कुशल रणनीतिकार थे.
हमनफस हमनवा लोहिया के
दुर्घर्ष सहकार जयप्रकाश के
संघर्षसूत्र बिहार विप्लव के
'आजाद दस्ता' के कर्णधार थे.
प्रवंचित संसद के प्रतिवाद थे
शोषण-दमन के प्रतिकार थे
आत्मज सैनिक विद्रोह सेनानी उमेश झा से उमेश दादा बनकर
सहरसा के मुरादपुर से उभड़े थे

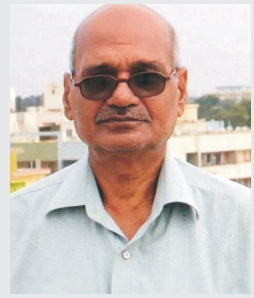


अजय कुमार झा
मुरादपुर, सहरसा, बिहार

# जैव विविधता के संरक्षण के बिना विकास का कोई महत्व नहीं है

प्रहलाद सेबनानी

सनातन हिंदू संस्कृति में किसी भी जीव की हत्या निषेध है और ऐसा माना जाता है कि अपने लिए पूर्व निर्धारित भूमिका को निभाने के उद्देश्य से ही विभिन्न जीव इस धरा पर जन्म लेते हैं एवं सभी जीवों में आत्मा का वास होता है। इसलिए हिंदू धर्मावलम्बियों द्वारा पशु, पक्षियों, पेड़, पौधों, नदियों, पर्वतों, आदि को भी ईश्वर का रूप मानकर पूजा जाता है। कई पशु एवं पक्षी तो हमारे भगवानों के वाहन माने जाते हैं। जैसे, भगवान गणेश का वाहन मूषक को माना जाता है, मां दुर्गा का वाहन शेर को माना जाता है, भगवान शिव के गले में सर्प हमेशा वास करते हैं एवं नंदी को उनका वाहन माना जाता है, भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ को माना जाता है, भगवान कार्तिक का वाहन मोर को माना जाता है एवं धन की देवी लक्ष्मी माता का वाहन उल्लू को माना जाता है। हिंदू समाज में भगवानों की पूजा के साथ साथ उनके वाहनों के रूप में पशु एवं पक्षियों की भी पूजा अर्चना की जाती है। नाग पंचमी नामक त्यौहार के दिन सांप को दूध पिलाया जाना शुभ माना जाता है।

विकसित देशों में वैज्ञानिकों द्वारा लगातार किये जा रहे शोधों के आधार पर अब यह कहा जा रहा है कि दरअसल पूरे विश्व में केवल सनातन हिंदू संस्कृति ही लाखों वर्षों से बहुत ही वैज्ञानिक आधार पर चल रही है। पशु, पक्षी, पेड़, पौधे, नदियों, पर्वतों, जंगलों के संरक्षण की बात इस महान संस्कृति के मूल में है। इस धरा पर समस्त जीवों का अपना महत्व है एवं इन्हें अपनी भूमिका का निर्वहन इस धरा पर करना होता है। जैसे गंदगी साफ करने में कौआ और गिद्ध की प्रमुख भूमिका पाई गई हैं।

परंतु दुर्भाग्य का विषय है कि हाल ही के समय में गिद्ध शहरों ही नहीं बल्कि जंगलों में भी लुप्तप्रायः हो गए हैं। हम लोग जानते ही नहीं हैं कि गिद्धों के न रहने से इस पृथ्वी ने क्या खोया है।

वर्ष १९९७ में पूरी दुनिया में रेबीज नामक बीमारी से ५० हजार से अधिक लोग मर गए थे। भारत में सबसे ज्यादा ३० हजार से अधिक मौतें हुई थीं। स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया कि ऐसा गिद्धों की संख्या में अचानक आई कमी के कारण हुआ था जिसके फलस्वरूप चूहों और कुत्तों की संख्या में एकाएक वृद्धि हो गई थी। अध्ययन में यह भी बताया गया था कि कुछ पक्षियों की प्रजातियों के समाप्त होने से मृत पशुओं की सफाईए बीजों का प्रकीर्णन और परागण जैसे कार्य बहुत बड़ी हद तक प्रभावित हुए हैं। अमेरिका जैसा देश अपने यहां चमगादड़ों को संरक्षित करने का अभियान चला रहा है। सामान्यतः हम सोचते हैं कि चमगादड़ तो पूरी तरह से बेकार जीव है। मगर वैज्ञानिकों के अनुसार चमगादड़ मच्छरों के लार्वा खाता है। यह रात्रिचर परागण करने वाला प्रमुख पक्षी है एवं यह खेती का मित्र हैए जिसका मुख्य भोजन चूहा है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में पक्षियों के संरक्षण एवं संवर्धन की बात कही गई है। अर्थात जैव विविधता को बनाए रखने की बात केवल हिंदू सनातन संस्कृति में ही बहुत पहले से मानी जाती रही है। परंतु विकसित देशों द्वारा अपनाए गए विकास के महडल के अंतर्गत जैव विविधता के महत्व को कम आंकने के चलते अब इस पृथ्वी पर पर्यावरण एवं प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना लगभग असम्भव-सा हो गया है।

हमारे जीवन में जैव विविधता का बहुत महत्व है। इस पृथ्वी पर अब एक ऐसे पर्यावरण का निर्माण करना एक आवश्यकता बन गया है, जो जैव विविधता में समृद्ध, टिकाऊ और आर्थिक गतिविधियों के लिए हमें निरंतर अवसर प्रदान करता रहे। जैव विविधता में असंतुलन आने से प्राकृतिक आपदाएं जैसे अत्यधिक वर्षाए तूफान, बाढ़, सूखा और भूकम्प आदि आने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए हमारे लिए जैव विविधता का संरक्षण करना अब बहुत जरूरी हो गया है। हमारा जीवन प्रकृति का अनुपम उपहार है। अतः पेड़.पौधे, अनेक प्रकार के जीव-जंतु, मिट्टी, हवा, पानी, महासागर-पठार, समुद्र-नदियां इन सभी का संरक्षण जरूरी है क्योंकि ये सभी हमारे अस्तित्व एवं विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

परंतु यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि आज की परिस्थितियों में, विशेष रूप से सभी देशों के विकास की अंधी दौड़ में शामिल होने के कारण जैव विविधता का क्षरण एक कटु सत्य बन गया है। कुछ अध्ययनों से ज्ञात होता है कि वनस्पतियों की हर आठ में से एक प्रजाति विलुप्तता के खतरे से जूझ रही है। जैव विविधता के लिए पैदा हुए ज्यादातर जोखिम प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बढ़ती जनसंख्या, जो बेलगाम दर से बढ़ रही है, से जुड़े हुए हैं। दुनिया की जनसंख्या इस समय ७०० करोड़ से अधिक हो गई है जिसके २०५० तक १००० करोड़ तक पहुंचने के अनुमान व्यक्त किए जा रहे हैं। तेजी से बढ़ रही इस जनसंख्या से दुनिया के पारिस्थिति जन्य तंत्रों और प्रजातियों पर अतिरिक्त दबाव तो पड़ना ही है। समूचे विश्व में २ लाख ४० हजार किस्म के पौधे और १० लाख ५० हजार प्रजातियों के प्राणी हैं। इंटरनेशनल यूनियन

फहर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) के एक प्रतिवेदन में बताया गया है कि विश्व में जीव जंतुओं की ४७,६७७ विशेष प्रजातियों में से एक तिहाई से अधिक प्रजातियां यानी १५,८६० प्रजातियों पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। आईयूसीएन की रेड लिस्ट के अनुसार स्तनधारियों की २१ फीसदी, उभयचरों की ३० फीसदी और पक्षियों की १२ फीसदी प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुंच गई हैं। वनस्पतियों की ७० फीसदी प्रजातियों के साथ ताजा पानी में रहने वाले सरिसृपों की ३७ फीसदी प्रजातियों और १,१४७ प्रकार की मछलियों पर भी विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। ये सब इंसान के लालच और जंगलों के कटाव के कारण हो रहा है। कई बार किसी प्रजाति को तो इंसानों द्वारा लगातार मार कर भी उसे विलुप्त कर दिया जाता है।

विश्व के समृद्धतम जैव विविधता वाले १२ देशों में भारत का नाम भी शामिल है। भारत में विश्व की लगभग ७० प्रतिशत जैव विविधता विद्यमान है। इस सूची में जो अन्य देश शामिल हैंए वे हैं। ब्राजील, कोलंबिया, इक्वाडोर, चीन, मैक्सिकोए ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया, वेनेजुएला, चेक गणराज्य एवं मलेशिया। संपूर्ण विश्व का केवल २.४ प्रतिशत भू-भाग ही भारत में आता है, लेकिन यहां विश्व के ज्ञात जीव-जंतुओं का लगभग ५ प्रतिशत भाग निवास करता है। भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण एवं भारतीय प्राणी सर्वेक्षण द्वारा किए गए सर्वेक्षणों के अनुसार भारत में कुल ४६,००० वनस्पति प्रजातियां एवं ८६,००० प्राणी प्रजातियां पाई जाती हैं। भारत विश्व में वनस्पति विविधता के आधार पर दसवें, क्षेत्र सीमित प्रजातियों के आधार पर ग्यारहवें और फसलों के उद्भव तथा विविधता के आधार पर छठे स्थान पर है। विश्व के कुल २५ जैव विविधता के सक्रिय केन्द्रों में से दो क्षेत्र पूर्वी हिमालय और पश्चिमी घाट भारत में विद्यमान हैं। जैव विविधता के सक्रिय क्षेत्र उन्हें कहा जाता है, जहां विभिन्न प्रजातियों की समृद्धता पाई जाती है एवं ये प्रजातियां उस क्षेत्र तक सीमित रहती हैं। भारत में भी ४५० प्रजातियों को संकटग्रस्त अथवा विलुप्त होने के कगार पर दर्ज किया गया है। लगभग १५० स्तनधारी व १५० पक्षियों का अस्तित्व संकट में है और कीटों की अनेक प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। ये आंकड़े जैव विविधता पर निरंतर बढ़ते खतरे की ओर संकेत करते हैं। यदि यही दर बनी रही तो २०५० तक हम एक तिहाई से अधिक जैव विविधता को खो सकते हैं।

जैव विविधता को कई कारणों से नुकसान हो रहा है। जैसेए जंगलों के क्षेत्र में लगातार हो रही कमी, प्रदूषण, प्राकृतिक एवं मानवजन्य आपदाएं, जलवायु परिवर्तन, कृषि का आधुनिकीकरण, जनसंख्या वृद्धि, पशु एवं पक्षियों का शिकार और उद्योगों एवं शहरों का प्रसार। अन्य कारणों में सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव, भू-उपयोग में परिवर्तन, खाद्य शृंखला में हो रहे परिवर्तन तथा जीवों की प्रजनन क्षमता में कमी इत्यादि भी शामिल हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि विकास के लिए जैव विविधिता के साथ बेहतर तालमेल बनाया जाए। विकास और जैव विविधिता को दो अलग-अलग अवधारणाओं के रूप में नहीं देखा जा सकता। जैव विविधता के संरक्षण के बिना विकास का कोई महत्व नहीं है। जैव विविधता का संरक्षण करना मानव जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः पूरे विश्व को ही आज सनातन भारतीय संस्कृति को अपनाने की आवश्यकता है अन्यथा तो इस पृथ्वी पर रहना ही लगभग असम्भव होने जा रहा है। साभार

## साईकिल के पार्ट से मिसाइल के पार्ट तक

# नहीं रुका सफर एलपीएस बोसार्ड कंपनी

रक्षा प्रोजेक्ट से लेकर मिसाइल परीक्षण तक में रोहतक में बने नट-बोल्ट का होता है प्रयोग

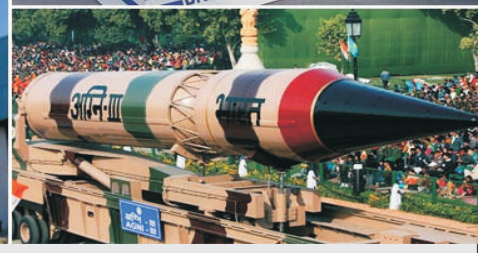


साईकिल के पार्ट बनाने का काम शुरू करने वाली कंपनी आज देश की तीनों सेनाओं के रक्षा प्रोजेक्ट से लेकर मिसाइल परीक्षण तक में रोहतक में बने नट-बोल्ट बना रही है। इस कंपनी की नींव १९५८ में ही महज १५ कर्मचारियों के साथ स्वर्गीय विमल प्रसाद जैन ने रखी थी, जिसे उनके पुत्र राजेश जैन आगे बढ़ा रहे हैं। १९७५ में जबलपुर में सेना के वाहनों के लिए नट-बोल्ट निर्मित करने लगे। फिर कानपुर स्थित हथियारों की कंपनी के लिए नट-बोल्ट तैयार होने लगे। अब देश के मिसाइल प्रोजेक्ट जैसे अग्नि, पृथ्वी, त्रिशूल, ब्रह्मोस्त्र, आकाश तक में हमारे यहां के नट-बोल्ट का उपयोग होता है।

एलपीएस बोसार्ड कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर (एमडी) राजेश जैन ने रोहतक में पहली नए-बोल्ट की कंपनी की शुरुआत के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि उस समय रेलवे रोड पर हमारा पुश्तैनी आवास व साइकिल की दुकान थी। उस दौरान पिता विमल प्रसाद को साइकिल की दुकान के लिए नट-बोल्ट पंजाब के लुधियाना से लाने पड़ते थे। इसलिए कुछ साइकिल के पार्ट यहीं बनाना शुरु कर दिए। जब बेहतर परिणाम आए तो १९६५ तक रेफ्रीजेरेटर में उपयोग होने वाले कम्प्रेशर के पार्ट का भी उत्पादन शुरु किया। १९६६ में हिसार रोड पर नट-बोल्ट निर्मित करने के लिए नव भारत का प्लांट लगाया। राजेश जैन के मुताबिक, लुधियाना के बाद उत्तर भारत का यह पहला प्लांट माना जाता है। उस दौरान प्लांट की शुरुआत महज ४०-५० कर्मचारियों से की गई। यहां से दूसरे जिलों व कई प्रदेश में माल भेजने लगे। इसलिए जरूरत को देखते हुए १९६९ में एलपीएस कंपनी स्थापित की। इससे ट्रैक्टर की कंपनियों, ऑटोमोबाइल सेक्टर के लिए भी माल तैयार करना शुरु किया। फिलहाल एलपीएस कंपनी में एक हजार से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं।

एमडी राजेश जैन कहते है कि पिता विमल प्रसाद का १९९० में ही निधन हो गया था। उसके बाद हमने कारोबार को आगे बढ़ाया। अनुभव बताते हुए कहा कि पहले हमारे यहां से सेना के वाहनों व छोटे प्रोजेक्ट में ही नट-बोल्ट उपयोग होते थे। बाद में करार होते गए। रक्षा उपकरणों से लेकर मिसाइल, अंतरिक्षयानों तक में नट-बोल्ट उपयोग हुए। फिलहाल मेडिकल, टेक्नोलॉजी, कृषि, मेट्रो, रेलवे, दुनिया के कई देशों के विकास परक प्रोजेक्ट में भी यहां से तैयार नट-बोल्ट उपयोग हो रहे हैं।

रोहतक में फिलहाल छोटी-बड़ी करीब दो हजार इकाईयां लगी हैं। प्रमुख इकाईयों से नट-बोल्ट का कारोबार ५८ देशों तक फैला हुआ है। ऑटोमोबाइल- कृषि सेक्टर में रोहतक की की हिस्सेदारी ७० प्रतिशत तक है। रक्षा मंत्रालय, देश-दुनिया के बड़े प्रोजेक्ट के अलावा इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) में भी हमारे यहां से तैयार नट-बोल्ट उपयोग होते हैं। मंगलयान में भी हमारे यहां से तैयार नट-बोल्ट का उपयोग हुआ था। अमेरिका, रुस, इजराइल तक की सेनाओं के रक्षा सौदों में हमारी साझीदारी है।

एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन की उद्योगपति से ज्यादा पहचान समाज सेवा में है। कोरोना महामारी में इनके योगदान को कोई भुला सकता है। इसके अलावा स्वास्थ्य के क्षेत्र में निःशुल्क एंबुलेंस सेवा, फ्री क्लीनिकल कैंप, धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं में अनुदान देने में कभी पीछे नहीं रहते हैं।

# प्रो. ऋषभदेव शर्मा के सम्मान में प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ 'धूप के अक्षर' का होगा लोकार्पण

हैदराबाद, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (उच्च शिक्षा और शोध संस्थान) तथा 'साहित्य मंथन' के संयुक्त तत्वावधान में आगामी ४ जुलाई (सोमवार) को दोपहर साढ़े ३ बजे से सभा के खैरताबाद स्थित परिसर में एकदिवसीय राष्ट्रीय साहित्यिक समारोह आयोजित किया जा रहा है। यह वही परिसर है जिसमें शर्मा जी शैक्षणिक सेवाएं देते हुए निवृत्त हुए मगर इस संस्थान और संस्थान से जुड़े विद्वानों ने सलाहकार, परीक्षक और साहित्यकार के रूप में निवृत्त नहीं होने दिया। ऐसे में प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो. ऋषभदेव शर्मा के सम्मान में प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ 'धूप के अक्षर' का लोकार्पण हिंदी का यह संस्थान अपने प्रांगण में कर शर्मा जी के व्यक्तित्व के मूल्यांकन का गवाह बन रहा है।

समारोह के स्वागताध्यक्ष प्रो. संजय लक्ष्मण मादार ने बताया कि कार्यक्रम का उद्घाटन राष्ट्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कृत वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. एन. गोपि करेंगे। अध्यक्ष महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. देवराज होंगे। देहरादून से पधारीं प्रो. पुष्पा खंडू अतिविशिष्ट अतिथि का आसन ग्रहण करेंगी। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. गोपाल शर्मा, डॉ. अहिल्या मिश्र, डॉ. राकेश कुमार शर्मा, डॉ. वर्षा सोलंकी एवं सभा के प्रधान सचिव जी. सेल्वराजन उपस्थित रहेंगे।

अभिनंदन ग्रंथ की प्रधान संपादक एवं समारोह की समन्वयक डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा ने बताया कि 'धूप के अक्षर' शीर्षक अभिनंदन ग्रंथ दो जिल्दों में प्रकाशित है। लगभग ७०० पृष्ठ के इस ग्रंथ में ६० लेखकों के कुल ८२ आलेख सम्मिलित हैं। इनमें देश भर के विद्वानों और समीक्षकों के साथ-साथ प्रो. ऋषभदेव शर्मा के अंतरंग मित्रों, सहकर्मियों और शोध छात्रों के संस्मरण और समीक्षाएं शामिल हैं। उन्होंने यह जानकाभी दी कि विमोचन के उपरांत अभिनंदन ग्रंथ की प्रतियां संपादन मंडल और सहयोगी लेखकों को समर्पित की जाएंगी।

समारोह के संयोजक एवं सभा के सचिव एस. श्रीधर ने सभी साहित्य प्रेमियों से कार्यक्रम में उपस्थित होने की अपील की है।

लोकार्पण के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ रहे इस ग्रंथ को दो भागों में प्रकाशित किया गया है जिसमें कुल ६ खंड हैं। इस ग्रंथ की संपादक हैं डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा और उनके सहयोगी संपादक हैं डॉ. राकेश कुमार शर्मा, डॉ. बी. बालाजी (बालाजी बाबुराव मंगनाळे), डॅ. चंदन कुमाऔर डह. मंजु शर्मा।

प्रथम खंड में १३ विद्वानों के १३ समीक्षात्मक आलेख सम्मिलित हैं। प्रथम खंड का शीर्षक है 'चिंतन के आयाम : सारे अक्षर सूर्यमुखी हो जाएँ। जिसके लेखक हैं, डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, डॉ. अनीता शुक्ल (अनीता शुक्ल), प्रो. प्रतिभा मुदलियार, डॉ. चंदन कुमारी, डॉ. डॉली, श्रीमती शीला बालाजी (शीला इंगले), डॉ. मंजु शर्मा, प्रो. संजय एल. मादार, डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह, डॉ. अनुपमा तिवारी, हुडगे नीरज, श्रीमती शशि राय और डॉ. सुषमा देवी।

दूसरे खंड का शीर्षक है 'काव्य कृतित्व : रोशनी का इक दुशाला लाइए'। जिसके लेखक हैं, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया (स्व.), डह. प्रेमचंद्र जैन (स्व.), चंद्रमौलेश्वर प्रसाद (स्व.), प्रो. एस. ए. सूर्यनारायण वर्मा (स्व.), प्रो. देवराज (२), प्रो.दिलीप सिंह, डॉ. कविता वाचक्नवी, डॉ. रामजी सिंह 'उदयन', डॉ. प्रमीला के. पी., और डॉ. एन. लक्ष्मी 'प्रिया'।

तीसरे खंड का शीर्षक है 'आलोचना दृष्टि : रोशनदान जरूरै'। जिसके लेखक हैं, डॉ. बालशौरि रेड्डी (स्व.), प्रो. एम. वेंकटेश्वर (स्व.), प्रो. देवराज, प्रो. जगमल सिंह, प्रो. गोपाल शर्मा, डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, डॉ. बी. बालाजी (बालाजी बाबुराव मंगनाळे), डॉ. परमान सिंह और प्रवीण प्रणव।

चौथे खंड का शीर्षक है 'संपादकीय विवेक : हम प्रकाश के प्रहरी'। जिसके लेखक हैं, डॉ. योगेंद्रनाथ मिश्र, प्रो. निर्मला एस. मौर्य, प्रो.गोपाल शर्मा, डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ. चंदन कुमारी और प्रवीण प्रणव।

पांचवे खंड का शीर्षक है 'व्यक्तित्व : दिशाओं को लीपती श्वेत हँसी'। जिसके लेखक हैं, प्रो. देवराज, कु. समीक्षा शर्मा, डॉ. अंतरिक्ष सैनी, पवन कुमार 'पवन', जसवीर राणा, डॉ. दिनेश प्रताप तोमर, डॉ. अहिल्या मिश्र, डॉ. करन सिंह ऊटवाल, प्रो. पी. राधिका, श्रीमती पवित्रा अग्रवाल, डॉ. वर्षा सोलंकी, डॉ. रामनिवास साहू, डॉ. रेखा अग्रवाल, संजीव कुमार, डॉ. सैयद मासूम रजा, अमन कुमार त्यागी, चंद्रप्रताप सिंह, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, डॉ. गिरिजा रानी खन्ना, डॉ. विनीता कृष्णा, डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, डॉ. शिवकुमार राजौरिया, डॉ. आशा मिश्रा 'मुक्ता', और डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा।

छठे खंड का शीर्षक है 'मूल्यांकन : उपजे बीज अनेक, बाली गेहूँ की'। जिसके लेखक हैं, प्रवीण प्रणव, अवधेश कुमार सिन्हा, डॉ. राकेश कुमार शर्मा, ज्ञानचंद मर्मज्ञ, डॉ. चंदन कुमारी, डॉ. बी. बालाजी बालाजी बाबुराव मंगनाळे, प्रो. निर्मला मौर्य, डॉ. संगीता शर्मा और प्रो. गोपाल शर्मा।

ग्रंथ की रूपरेखा पढ़ने के बाद लग रहा है कि यह प्रो. ऋषभदेव शर्मा के व्यक्तित्व का विशेष मूल्यांकन करता हुआ दिखाई देगा। ग्रंथ में क्या-क्या लिखा गया और क्या शेष रह गया? यह तो ग्रंथ के पठन से ही ज्ञात हो सकेगा किंतु यहां एक बात जो मैं जानता हूं वह यह है कि अभी शर्मा जी का वास्तविक मूल्यांकन शेष रहेगा जिसके लिए उनके विद्यार्थी और शुभचिंतक एक बार फिर प्रयास करेंगे।

शर्मा जी वास्तव में एक सच्चे मार्गदर्शक ही नहीं बल्कि सहयात्री भी हैं। आप उनसे किसी विषय पर चर्चा करें, और फिर उनकी वाणी, शैली और चिंतन पर ध्यान दीजिए। कुछ समय बाद हो सकता है कि आप उस विषय को भूल जाएं परंतु एकाएक शर्मा जी का मैसेज आपकी समस्या के हल के साथ पहुंच जाएगा। बहरहाल प्रो. ऋषभदेव शर्मा जी के अभिनंदन का यह सिलसिला बना रहना चाहिए। इस बार के अभिनंदन की प्रमुख डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा जी को साप्ताहिक 'ओपन डोर' की ओर से साधुवाद।

# तुलसी एक गुण अनेक

तुलसी एक द्विबीजपत्री तथा शाकीय, औषधीय पौधा है। तुलसी का पौधा हिंदू धर्म में पवित्र माना जाता है और लोग इसे अपने घर के आँगन या दरवाजे पर या बाग में लगाते हैं। भारतीय संस्कृति के चिर पुरातन ग्रंथ वेदों में भी तुलसी के गुणों एवं उसकी उपयोगिता का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त ऐलोपैथी, होमियोपैथी और यूनानी दवाओं में भी तुलसी का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जाता है। तुलसी का पौधा क्षुप (झाड़ी) के रूप में उगता है और १ से २ फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बैंगनी आभा वाली हल्के रोएँ से ढकी होती हैं। पत्तियाँ १ से १ इंच लम्बी सुगंधित और अंडाकार या आयताकार होती हैं। पुष्प मंजरी अति कोमल एवं ७ इंच लम्बी और बहुरंगी छटाओं वाली होती है, जिस पर बैंगनी और गुलाबी आभा वाले बहुत छोटे हृदयाकार पुष्प चक्रों में लगते हैं। बीज चपटे पीतवर्ण के छोटे काले चिह्नें से युक्त अंडाकार होते हैं। नए पौधे मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में उगते है और शीतकाल में फूलते हैं। पौधा सामान्य रूप से दो-तीन वर्षों तक हरा बना रहता है। इसके बाद इसकी वृद्धावस्था आ जाती है। पत्ते कम और छोटे हो जाते हैं और शाखाएँ सूखी दिखाई देती हैं। इस समय उसे हटाकर नया पौधा लगाने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

तुलसी की सामान्यतः निम्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं-

- ऑसीमम सैक्टम
- ऑसीमम वेसिलिकम (मरुआ तुलसी) मुन्जरिकी या मुरसा।
- ऑसीमम वेसिलिकम मिनिमम।
- आसीमम ग्रेटिसिकम (राम तुलसी/वन तुलसी/अरण्यतुलसी)।
- ऑसीमम किलिमण्डचेरिकम (कर्पूर तुलसी)।
- ऑसीमम अमेरिकम (काली तुलसी) गम्भीरा या मामरी।
- ऑसीमम विरिडी।

इनमें ऑसीमम सैक्टम को प्रधान या पवित्र तुलसी माना गया जाता है। इसकी भी दो प्रधान प्रजातियाँ हैं- श्री तुलसी, जिसकी पत्तियाँ हरी होती हैं तथा कृष्णा तुलसी (या श्यामा तुलसी) जिसकी पत्तियाँ नीलाभ-कुछ बैंगनी रंग लिए होती हैं। श्री तुलसी के पत्र तथा शाखाएँ श्वेताभ होते हैं जबकि कृष्ण तुलसी के पत्रादि कृष्ण रंग के होते हैं। गुण, धर्म की दृष्टि से काली तुलसी को ही श्रेष्ठ माना गया है, परन्तु अधिकांश विद्वानों का मत है कि दोनों ही गुणों में समान हैं।

तुलसी में अनेक जैव सक्रिय रसायन पाए गए हैं, जिनमें ट्रैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाइड्स प्रमुख हैं। अभी भी पूरी तरह से इनका विश्लेषण नहीं हो पाया है। प्रमुख सक्रिय तत्व हैं एक प्रकार का पीला उड़नशील तेल जिसकी मात्रा संगठन स्थान व समय के अनुसार बदलते रहते हैं। ६.१ से ६.२ प्रतिशत तक तेल पाया जाना सामान्य बात है। 'वैल्थ ऑफ इण्डिया' के अनुसार इस तेल में लगभग ६१ प्रतिशत यूजीनॉल, बीस प्रतिशत यूजीनॉल मिथाइल ईथर तथा तीन प्रतिशत कार्वाकोल होता है। श्री तुलसी में श्यामा की अपेक्षा कुछ अधिक तेल होता है तथा इस तेल का सापेक्षिक घनत्व भी कुछ अधिक होता है। तेल के अतिरिक्त पत्रों में लगभग ७२ मिलीग्राम प्रतिशत विटामिन सी एवं १.४ मिलीग्राम प्रतिशत कैरीटीन होता है। तुलसी बीजों में हरे पीले रंग का तेल लगभग १६.७ प्रतिशत की मात्रा में पाया जाता है। इसके घटक हैं कुछ सीटोस्टेरॉल, अनेकों वसा अम्ल मुख्यतः पामिटिक, स्टीयरिक, ओलिक, लिनोलक और लिनोलिक अम्ल। तेल के अलावा बीजों में श्लेष्मक प्रचुर मात्रा में होता है। इस म्युसिलेज के प्रमुख घटक हैं-पेन्टोस, हेक्जा यूरोनिक अम्ल और राख। राख लगभग ६.१ प्रतिशत होती है।

तुलसी माला १६७ गुरियों की होती है। एक गुरिया अतिरिक्त माला के जोड़ पर होती है इसे गुरु की गुरिया कहते हैं। तुलसी माला धारण करने से ह्रदय को शांति मिलती है।

भारतीय संस्कृति में तुलसी को पूजनीय माना जाता है, धार्मिक महत्व होने के साथ-साथ तुलसी औषधीय गुणों से भी भरपूर है। आयुर्वेद में तो तुलसी को उसके औषधीय गुणों के कारण विशेष महत्व दिया गया है। तुलसी ऐसी औषधि है जो ज्यादातर बीमारियों में काम आती है। इसका उपयोग सर्दी-जुकाम, खांसी, दंत रोग और श्वास सम्बंधी रोग के लिए बहुत ही फायदेमंद माना जाता है। तुलसी विटामिन और खनिज का भंडार है। इसमें मुख्य रूप से विटामिन सी, कैल्शियम, जिंक, आयरन और क्लोरोफिल पाया जाता है। इसके अलावा तुलसी में सिट्रिक, टारटरिक एवं मैलिक एसिड पाया जाता। जो विभिन्न रोगों के रोकथाम के लिए भी उपयोगी है। तुलसी की पत्तियों का प्रयोग तनाव दूर करने लिए। आज के समय में तनाव बड़ी समस्या बन गई है और इससे आराम पाने के लिए लोग कई तरह की थेरेपी अपनाते हैं। तुलसी पत्ते इस समस्या को कम करने में उपयोगी पाए गए हैं। नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इन्फोर्मेशन द्वारा प्रकाशित एक शोध में यह बताया गया है कि इसमें एंटीस्ट्रेस गुण होते हैं, जो स्ट्रेस से तुलसी के पत्ते आराम दिलवा सकते हैं। हमारे शरीर में कॉर्टिसोल हॉर्मोन की मात्रा को नियमित कर सकते हैं, जो एक तरह का स्ट्रेस हार्मोन होता है। विशेषकर तुलसी की चाय का सेवन करने से तनाव से काफी राहत मिल सकती है। साथ ही साथ एंटीडिप्रेसेंट गुण जो आपकी याददाश्त बेहतर करने में भी सहायक हो सकते है।

तुलसी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। सर्दी-जुकाम के साथ बुखार में भी फायदा पहुंचाती है। काली मिर्च और तुलसी को पानी में उबाल कर काढ़ा बनाएं साथ ही मिश्री डाल कर इसको पीने से बुखार से आराम मिलता है। जुकाम होने पर तुलसी को पानी में उबाल कर भाप लेने से भी फायदा होता है। तुलसी के पत्ते को फिटकरी के साथ मिलाकर घाव पर लगाने से तुरंत आराम जाता है। तुलसी में मौजूद एंटी-बैक्टीरियल तत्व चोट के घाव को पकने नहीं देता और ठीक करने में मदद करता है। तुलसी पत्ते को तेल में मिलाकर लगाने से जलन भी कम होती है। क्योंकि एंटीस्ट्रेस एंटीडिप्रेसेंट एंटीबैक्टिरियल गुणों से युक्त है तुलसी के पत्ते। तुलसी की पत्तियां चबाते हैं या फिर इससे हर्बल-टी बनाकर पीते हैं तो उससे लाभ होता है। यदि आप की इंसान का इम्युनिटी सिस्टम मजबूत है तो आपको बीमारियां कम लगने के चांस रहने हैं।

मृत्यु के समय तुलसी के पत्तों का महत्त्व

मृत्यु के समय व्यक्ति के गले में कफ जमा हो जाने के कारण श्वसन क्रिया एवम बोलने में रुकावट आ जाती है। तुलसी के पत्तों के रस में कफ फाड़ने का विशेष गुण होता है इसलिए शैया पर लेटे व्यक्ति को यदि तुलसी के पत्तों का एक चम्मच रस पिला दिया जाये तो व्यक्ति के मुख से आवाज निकल सकती है।

# दूर करें मसूड़ों की सूजन

मसूड़ों में सूजन है और दर्द है। तब गंभीर हो जाइए। समय पर इलाज न किया तो इससे शरीर के अन्य अंगों में भी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। यदि मसूड़ों से लगातार खून आ रहा है, तो तुरंत किसी अच्छे दंत चिकित्सक से सलाह लें। अकसर मसूड़ों पर चोट लगने या अधिक गर्म पदार्थ व सख्त चीजें खाने से दबाव के कारण मसूड़े चोटिल हो जाते हैं। जिससे मसूड़ों में सूजन हो जाती है। मसूड़ों की सूजन की दवा घर पर भी बना सकते हैं।

मसूड़ों की सूजन की दवा है नींबू का रस, नींबू का क्षारीय प्रभाव और इसका सूजन विरोधी गुण मुंह में बैक्टीरिया को पनपने नहीं देता। मसूड़ों की सूजन से आराम पाने के लिए प्रतिदिन सुबह नींबू के पानी से कुल्ला करें। आपको मसूड़ों की समस्या से फायदा होगा और आप को काफी हद तक आराम मिलेगा।

आयुर्वेद के अनुसार मसूड़े की दवाई स्वयं भी बनाई जा सकती है। नमक के पानी से मुंह धोना आपके लिए सबसे बेहतर होगा यदि मुंह से संबंधित समस्याओं से मुक्ति पाना चाहते हैं तो नमक का पानी बहुत महत्वपूर्ण दवा है। नमक के पानी से कुल्ला करने से मुंह में होने वाले संक्रमण से बचा जा सकता है। मुंह में संक्रमण न होने की वजह से मसूड़ों की समस्या को आसानी से दूर किया जा सकता है जिससे मसूड़ों की सूजन कम हो जाती है।

- सरसों के तेल में रोगाणुरोधी गुण होता है जो सूजन को दूर करने तथा मसूड़ों की सूजन से राहत पहुंचाने में सहायक होता है। सरसों के तेल में थोडा नमक मिलाकर इस मिश्रण को मसूड़ों पर लगायें। यह बार-बार उपयोग करने से जल्दी ही संक्रमण से छुटकारा मिल जाएगा।

- लौंग दांत के दर्द को दूर करने के साथ-साथ मसूड़ों की सूजन दूर करने के लिए सबसे कारगर दवा माना जाता है। लौंग में यूगेनोल होता है जिसमें एंटीऑक्सीडेंट तथा सूजन दूर करने का गुण होता है जो सूजन से आराम दिलाने में प्रभावी है। यदि प्रतिदिन लौंग का सेवन करते हैं तो मुँह से संबधित किसी भी प्रकार की समस्या होती है तो स्वयं ही इसका इलाज घर पर कर सकते है। लौंग का प्रयोग सबसे बेहतर और सस्ता उपाय है।

- बबूल के पेड़ की छाल मसूड़ों की सूजन से छुटकारा दिलाने में कारगर है। बबूल की छाल को पानी में उबालकर माउथवॉश भी बना सकते हैं। तुरंत राहत पाने के लिए दिन में दो से तीन बार इस घरेलू माउथवॉश से गरारे करें।

- कैस्टर ऑइल, एरंड के तेल में सूजन विरोधी गुण होता है जो मसूड़ों की सूजन से राहत दिलाने में एक प्रभावी उपचार है। दर्द वाले भाग पर इसे लगाने से दर्द तथा सूजन से आराम मिलता है।

- अदरक भी मसूड़ों की सूजन से राहत दिलाता है तथा मुंह में होने वाले बैक्टीरिया से बचाव भी करता है।

- एलोवेरा का उपयोग करें क्योंकि एलोवेरा एक हरफनमौला औषधि है जो कई प्रकार की बीमारियों से लड़ने में आपकी मदद करता है, और इस एलोविरा के जेल की प्रकृति एंटीबैक्टीरियल (बैक्टीरिया विरोधी) और एंटीफंगल (फंगस विरोधी) होती है। यह मसूड़ों की सूजन को दूर करने, मसूड़ों से खून आने तथा मुंह के संक्रमण जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायक होती है, तो आप इन मसूड़ों की सूजन की दवा का प्रयोग करके अपने आप ही अपने मसूड़ों की सूजन को दूर कर सकते हैं।


साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की



साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

Subscribe

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

# ओपन डोर लघु कथा पढ़ें और निर्णय करें

लेखकगण अपनी रचनाओं को शामिल न करें, जबकि पाठक को जो भी रचनाएं अच्छी लगें उनके बारे में तीन रचनाएं एवं उनके लेखक का नाम प्राथमिकता के क्रम में नीचे लिखें-

## ७ जून, २०२२ अंक में प्रकाशित

१. आपको सबसे अच्छी लघुकथा कौन-सी लगी? किन्हीं तीन लघु कथा के शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखें-

| | लघु कथा का शीर्षक | लेखक का नाम |
|---|---|---|
| १. | ..... | ..... |
| २. | ..... | ..... |
| ३. | ..... | ..... |

हस्ताक्षर निर्णयकर्ता

नोट- सभी लेखकों को यह क्रम बनाकर भेजना अनिवार्य है। यदि कोई लेखक अपना निर्णय नहीं देता है तो उसे 'ओपन डोर' साप्ताहिक की 'लघुकथा प्रतियोगिता' से बाहर मान लिया जाएगा। बराबरी की स्थिति में संपादक मंडल का निर्णय सभी को मानना होगा। आप अपने निर्णय प्रारूप का फोटो खींचकर मोबा. 9897742814 पर वाट्स एप करें।

निर्णयकर्ता का नाम व पता

प्रथम विजेता को ११००/-, प्रमाण-पत्र  द्वितीय विजेता को ५०१/-, प्रमाण-पत्र  तृतीय विजेता को २५१/-, प्रमाण-पत्र

सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग प्रमाण-पत्र


## 'ओपन डोर' साप्ताहिक के नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

| समयावधि | रुपए डाक खर्च सहित | पीडीएफ/प्रिंट अंक | सभी विशेषांक |
|---|---|---|---|
| वार्षिक | - १००० | ४८/३८ | ४ |
| द्विवार्षिक | - १६०० | ६६/७६ | ८ |
| पंचवार्षिक | - ४८०० | २४०/१६० | २० |

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

# आगामी आयोजन

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
₹ 200 वर्ष : 4 अंक : 3 जून-अगस्त, 2022
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की पत्रिका **'शोधादर्श'** **(त्रैमासिक)** में **साहित्य, मानविकी आदि विषयों** पर शोधपरक लेखों का प्रकाशन होता है, जिससे शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के साथ ज्ञानपिपासु पाठकों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। पत्रिका का आगामी अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' को ध्यान में रखते हुए **'जनपद बिजनौर'** **विशेषांक** के रूप में प्रकाशित किया जाना है। जिसमें जनपद बिजनौर का इतिहास, साहित्य, भूगोल, प्रतिभा, स्वास्थ्य, शिक्षा, पत्रकारिता, उद्योग, राजनीति, संस्कृति एवं समाजसेवा आदि विषय समाहित रहेंगे। जिसमें आप अपने विभाग, निकाय, संस्थान, मंत्रालय, प्रतिष्ठान, उत्पाद, उत्कृष्ट सेवाओं आदि की विशिष्टताओं तथा उनकी प्रगति से संबंधित विज्ञापन देकर उनका प्रचार प्रसार जन–जन तक कर सकते हैं।

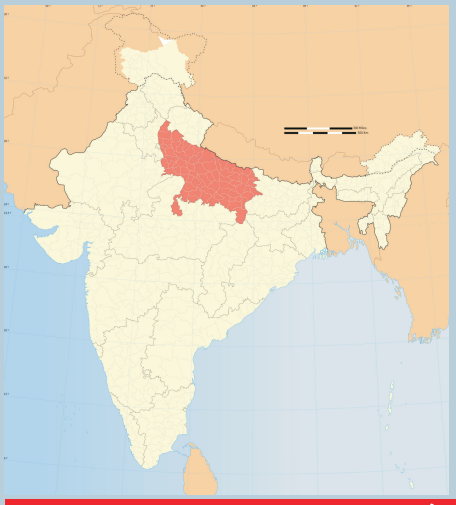

## जून–अगस्त 2022 (बिजनौर विशेषांक) में संभावित सामग्री

- जनपद बिजनौर का भौगोलिक परिचय
- जनपद बिजनौर का इतिहास
- स्वतंत्रता आंदोलन एवं जनपद के स्वतंत्रता सेनानी
- जनपद बिजनौर का साहित्य एवं साहित्यकार
- जनपद बिजनौर की राजनीति एवं राजनेता
- जनपद बिजनौर की पत्रकारिता एवं पत्रकार
- जनपद बिजनौर में समाजसेवी एवं सामाजिक संस्थाएं
- जनपद बिजनौर में शिक्षा एवं विद्यालय
- जनपद बिजनौर में स्वास्थ्य सेवाएं
- जनपद बिजनौर में सहकारिता
- जनपद बिजनौर में महिला सशक्तीकरण
- जनपद बिजनौर के लोकगीत
- जनपद बिजनौर और सिने जगत
- जनपद बिजनौर और खेल जगत
- जनपद बिजनौर में कृषि
- जनपद बिजनौर के उद्योग धंधे
- जनपद बिजनौर की संस्कृति
- जनपद बिजनौर के प्रसिद्ध मेले
- जनपद बिजनौर के ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थल
- जनपद बिजनौर का नगरीय विकास
- जनपद बिजनौर का ग्रामीण विकास
- जनपद बिजनौर की नदियाँ
- जनपद बिजनौर में वन एवं पर्यावरण आदि
- अन्य ऐसे विषय जो आवश्यक समझे जाएंगे

## जून–अगस्त 2022
## बिजनौर विशेषांक

## सितम्बर–नवम्बर 2022
## दुष्यंत कुमार त्यागी विशेषांक

## दिसंबर 2022–फरवरी 2023
## प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

### अपने शोध लेख समयानुसार

shodhadarsh2018@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

अधिक जानकारी के लिए 9897742814 पर सम्पर्क करे

शोध लेखों की त्रैमासिक पत्रिका 'शोधार्दश' की सदस्यता लेकर प्रकाशन और पढ़ने का लाभ उठाएं। प्रकाशनोपरांत पत्रिका आपके पंजीकृत पते पर रजिस्टर्ड पार्सल से पहुंच जाएगी।

वार्षिक सदस्य – 1000 रुपए

पांच वर्ष – 5000 रुपए

Name - Shodhadarsh
Bank - Indian oversees bank
Branch - Najibabad
Account no - 368602000000186
IFSC - IOBA0003686

ऑनलाइन सदस्यता के लिए फार्म भरें
https://forms.gle/B4T6AKwXxRePSNsz9

## शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

| क्रम | विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ | मूल्य रुपए में | विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ | मूल्य रुपए | विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ | मूल्य रुपए |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन) | 26,000.00 | कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन) | 13,000.00 | कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन) | 7,000.00 |
| 2 | कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन) | 22,000.00 | कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन) | 11,000.00 | कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन) | 6,000.00 |
| 3 | आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन) | 20,000.00 | आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन) | 10,000.00 | आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन) | 5,000.00 |
| 4 | श्वेत श्याम पृष्ठ | 10,000.00 | श्वेत श्याम पृष्ठ | 5,000.00 | श्वेत श्याम पृष्ठ | 2,500.00 |

मकैनिकल डाटा– 10.75x8.5 inch, कवर–आर्ट पेपर कलर प्रिंटिंग, अंदर पेपर–मैफलिथो श्वेत–श्याम प्रिंटिंग, आवश्यक होने पर अंदर के कुछ पृष्ठ रंगीन भी प्रकाशित होते हैं। प्रिंटिंग एरिया–9.75x7 inch (नोट- पत्रिका के आकार, छपाई और उपयोगी काग़ज़ में बदलाव आवश्यकतानुसार संभव है)

# प्रकाशनाधीन

## ओपन डोर प्रकाशन से शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

### दर्दीला गीतकार रामावतार त्यागी

अमन कुमार 'त्यागी'

### वृद्धावस्था (सामाजिक अध्ययन)

रश्मि अग्रवाल

### हमारी संस्कृति और हमारा पर्यावरण (शोध आलेख)

अमन कुमार 'त्यागी'
डॉ. अमित कुमार

### वृद्धावस्था की कहानियाँ

अमन कुमार 'त्यागी'

### हिंदी की अस्मिता अस्मिता की हिंदी

डॉ. सत्यनारायण आलोक

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS | ओपन डोर | Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन
**ओपन डोर**
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814